₹ 20

www.kewalsach.com

निर्भीकता हमारी पहचान

जुलाई 2026

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

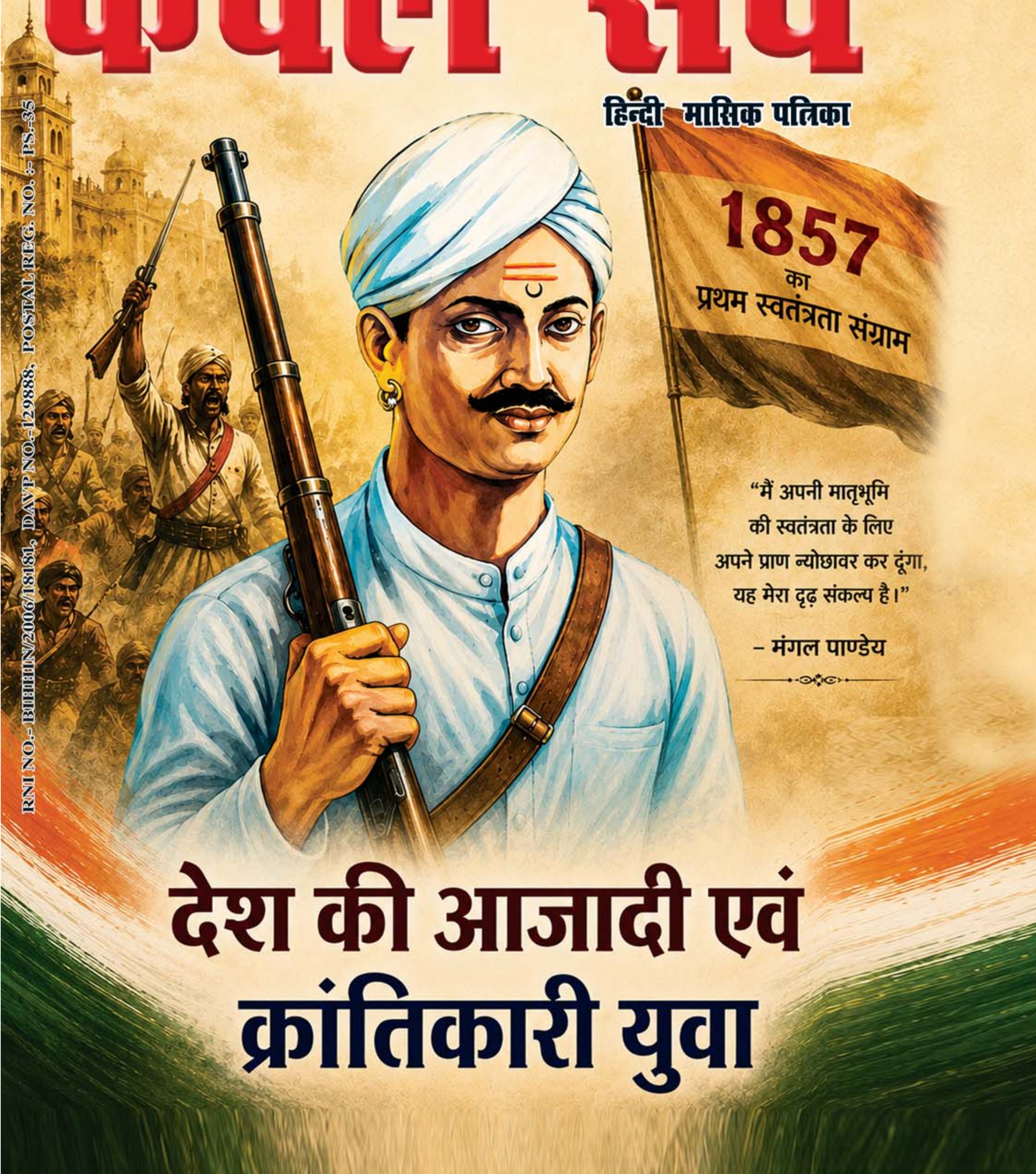

"मैं अपनी मातृभूमि
की स्वतंत्रता के लिए
अपने प्राण न्योछावर कर दूंगा,
यह मेरा दृढ़ संकल्प है।"

– मंगल पाण्डेय

देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा

RNI NO.- BIHHIN/2006/18181, DAVP NO.-129888, POSTAL REG. NO. :- PS.-35

CLEANING SERVICES

INFECTION CONTROL: THE PRIMARY GOAL IS TO ELIMINATE PATHOGENS, ESPECIALLY IN HIGH-RISK AREAS LIKE ICUS, ORS, AND PATIENT ROOMS.

SPECIALIZED TRAINING: STAFF USE SPECIFIC TECHNIQUES (LIKE TERMINAL CLEANING) FOR DIFFERENT ZONES (E.G., LOW-TOUCH VS. HIGH-TOUCH SURFACES).

WASTE MANAGEMENT: PROPER HANDLING AND DISPOSAL OF MEDICAL WASTE (BIOHAZARDS).

SCOPE: COVERS ALL AREAS–CLINICAL (PATIENT WARDS, LABS) AND PUBLIC (LOBBIES, RESTROOMS).

GARDENING AND BEUTIFICATION

LAUNDARY SERVICES

PROCESSING TEXTILES: BEDDING, TOWELS, BLANKETS, PATIENT GOWNS, STAFF UNIFORMS (SCRUBS, COATS), CURTAINS, KITCHEN LINENS, AND SOMETIMES SURGICAL GOWNS.

CORE TASKS: COLLECTION, SORTING (BY CONTAMINATION LEVEL), WASHING, DRYING, IRONING, FOLDING, MENDING, AND DELIVERY

HYGIENE FOCUS: DISINFECTION AND SANITIZATION ARE PARAMOUNT TO CONTROL MICROBIAL CONTAMINATION AND PREVENT HEALTHCARE-ASSOCIATED INFECTIONS (HAIS).

Chandmari Road, Kankarbagh, Patna – 800020
Mob. No. - 7564027857
Email Id – rsoutsourcing591@gmail.com

R.S. OUTSOURCING.

TATA STEEL
#WeAlsoMakeTomorrow
BMW VENTURES LIMITED
TATA TISCON
JOY OF BUILDING
समझदार बनें।
बेहतर चुनें।
TATA TISCON 550SD
CALL 1800 108 8282
बेहतर ताक़त 550MPa ग्रेड स्टील
बेहतर लचक उच्चतम UTS/YS अनुपात
बेहतर बचत रीबार का कम इस्तेमाल
Auth Distributor of TATA STEEL
BMW VENTURES LTD., Patna
Customer Care No. 8102223776

जहानाबाद में अब मिलेगा
TOP EDUCATION
★ AICTE APPROVED COLLEGE ★
आपके अपने शहर में!
SHYAM COLLEGE
OF HIGHER EDUCATION
कड़ौना, जहानाबाद, बिहार
AICTE APPROVED
AKU AFFILIATED
सही कॉलेज, सही कोर्स, सही भविष्य!
क्यों चुने हमें?
AICTE Approved & AKU Affiliated
आधुनिक भवन एवं स्मार्ट क्लासरूम
इंडस्ट्री-ओरिएंटेड कोर्स
प्लेसमेंट सपोर्ट
अनुभवी एवं समर्पित फैकल्टी
COURSES AVAILABLE
BBA
BCA
MBA
MCA
ADMISSION OPEN
SESSION 2026-27
LIMITED SEATS - APPLY NOW!
आधुनिक भवन एवं स्मार्ट क्लासरूम
100% प्लेसमेंट सपोर्ट
इंडस्ट्री एक्सपोजर
अनुभवी फैकल्टी
बेहतरीन शिक्षा उज्जवल भविष्य
अपने भविष्य को दें सही दिशा आज ही जुड़ें!
आज ही संपर्क करें
7488190982
9504704962
कड़ौना, जहानाबाद, बिहार - 804417
shyamcollegeofhighereducation@gmail.com
https://shyamedu.in
Apply Link : https://apply.shyamedu.in
APPLY NOW!
SCAN करें और एडमिशन के लिए अभी अप्लाई करें!
बेहतरीन शिक्षा • बेहतर करियर • उज्जवल भविष्य

R.K.P. VIYDYALAYA
AFFILIATED TO CBSE NEW DELHI UPTO 10+2
SAILENT FEATURES
Eco Friendly Environment.
E-Learning & Smart Classes.
Bus Facility with Affordable Fees.
Whole Campus under CCTV Surveillance.
Qualified Well trained & Caring Teacher's.
HOSTEL FACILITY
ADMISSION OPEN FOR 2026-27
Add.: Babhana Kataiya (Near Sai Mandir) Jehanabad.
Cont @ 8434000102, 8294683698 Web.: www.rkpvjehanabad.in

केवल सच
हिंदी मासिक पत्रिका
के 21 वें स्थापना दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं!
"पत्रकारिता के क्षेत्र में सत्य, निष्पक्षता और जनहित की भावना को निरंतर प्रबल करने के लिए आपकी लेखनी और प्रयास सराहनीय है। आने वाले वर्षों में आपकी पत्रिका नई ऊंचाइयों को छुए और समाज को दिशा देने का कार्य करती रहे, यही मंगलकामना है".
सरिता देवी
उप मुख्य पार्षद
नगर पंचायत, एकंगरसराय, नालंदा
मो.-7542801908

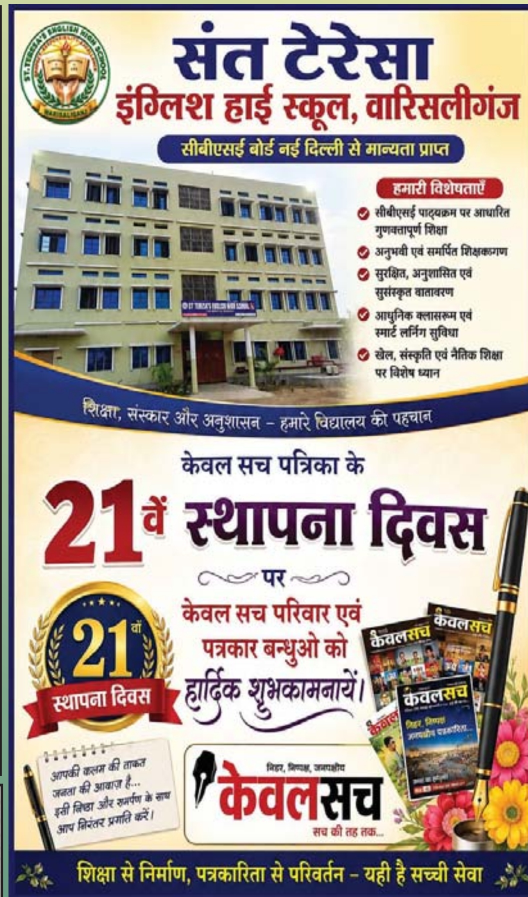
संत टेरेसा
इंग्लिश हाई स्कूल, वारिसलीगंज
सीबीएसई बोर्ड नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त
हमारी विशेषताएँ
सीबीएसई पाठ्यक्रम पर आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
अनुभवी एवं समर्पित शिक्षकगण
सुरक्षित, अनुशासित एवं सुसंस्कृत वातावरण
आधुनिक क्लासरूम एवं स्मार्ट लर्निंग सुविधा
खेल, संस्कृति एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष ध्यान
शिक्षा, संस्कार और अनुशासन – हमारे विद्यालय की पहचान
केवल सच पत्रिका के
21वें स्थापना दिवस
पर
केवल सच परिवार एवं पत्रकार बन्धुओ को हार्दिक शुभकामनायें।
21 वीं स्थापना दिवस
आपकी कलम की ताकत जनता की आवाज़ है... इसी निष्ठा और समर्पण के साथ आप निरंतर प्रगति करें।
केवलसच
सच की तह तक...
शिक्षा से निर्माण, पत्रकारिता से परिवर्तन – यही है सच्ची सेवा

VISHWESHWAR SINGH JANTA COLLEGE
A Constituent unit of
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga, Bihar
RAJNAGAR, MADHUBANI -847235 (BIHAR)
COURSES:-
U.G. (Regular)
B.A.
B.SC.
U.G. (Vocational)
B.C.A.
B.B.A.
Central Library
E-Library
Library reading room
Career Councelling and Placement cell
Hostal
Website
N.S.S.
N.C.C.
FACILITY:-
Wi-Fi Campus
Computer Lab
ICT Lab
Smart Classroom
Science Lab
Auditorium
Gymnasium
CCTV Camera
Canteen
Parking
Playground
Prof. (Dr.)
Gajendra prasad Gadkar
Principal

BRILLIANT PUBLIC SCHOOL
Affiliated to C.B.S.E. Delhi
(Up to - 10+2 Level)
SESSION
2026-27
नामांकन प्रारंभ
सभी वर्गो के लिए।
नामांकन शुल्क में 100% छूट
NC to Vth
नामांकन शुल्क में 50% छूट
VIth to VIIIth
Mob.: 9472080885
9472530008
BPS NAGAR NIZAMUDDINPUR, KAKO ROAD, JEHANABAD

Patna
PATNA INSTITUTE OF NURSING & PARA MEDICAL SCIENCE
BRAHAMPUR
PATNA INSTITUTE OF
NURSING & PARA MEDICAL SCIENCE
EMPOWERING CAREERS, ENRICHING LIVES
Approved by - B.N.R.C. & Health Department (Govt. of Bihar)
Recognized by - Bihar University of Health Science
Visit our Website Scan Here !
SECURE
YOUR FUTURE
WITH NURSING AND
PARAMEDICAL EXCELLENCE
बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड की सुविधा नर्सिंग एवं पैरामेडिकल डिग्री कोर्स मे उपलब्ध
PARAMEDICAL DIPLOMA COURSE
• Dresser • D.M.L.T. • D.O.T.A.
• D.M.R.(X-ray) • D.E.C.G.
NURSING COURSES
A.N.M.
G.N.M.
B.Sc. Nursing
P.B.B.Sc. Nursing
M.Sc. Nursing
PARAMEDICAL DEGREE COURSE
B.Sc. Biotechnology
B.H.M.
B.O.T.T.
B.P.T.
B.R.I.T.
B.O.T.
B.M.L.T.
Experienced Faculty
Practical Training with Modern Facilities
100% Career Support & Guidance
Trusted by Thousands of Students
Practical Training की व्यवस्था सरकारी अस्पताल में उपलब्ध
9835686853, 7050112741, 8789409251
BRAHAMPUR, NEW JAGANPURA, NEW BYPASS ROAD, PATNA - 27

बिहार ग्रामीण बैंक
BIHAR GRAMIN BANK
SCHEDULED BANK OWNED BY GOVERNMENT

आपका अपना बैंक, आपके विकास का साथी

" 1 मई 2025 को उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक एवं दक्षिण बिहार ग्रामीण बैंक के सफल विलय से बिहार ग्रामीण बैंक का गठन हुआ। इस ऐतिहासिक एकीकरण के बाद बिहार ग्रामीण बैंक शाखाओं की दृष्टि से बिहार का सबसे बड़ा बैंक तथा कुल बैंकिंग व्यवसाय की दृष्टि से बिहार का तीसरा सबसे बड़ा बैंक बन गया है। अपनी विस्तृत शाखा नेटवर्क, आधुनिक बैंकिंग सेवाओं एवं ग्राहक-केंद्रित कार्यप्रणाली के साथ बिहार ग्रामीण बैंक वित्तीय समावेशन को सशक्त बनाने तथा बिहार के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में निरंतर अग्रणी भूमिका निभा रहा है। "

3.5 करोड़ बिहारवासियों का विश्वास | 2101 शाखाएँ | 26 क्षेत्रीय कार्यालय | ₹83,000+ करोड़ का कुल कारोबार

हमारा प्रदर्शन (वित्तीय वर्ष : 2025-26)

जमा में वृद्धि	साख वृद्धि	व्यवसाय वृद्धि	शुद्ध लाभ वृद्धि
5.36%	8.38%	6.53%	340.33%

2101 शाखाओं के साथ बिहार के हर कोने तक

हमसे सस्ता कौन? आवास, वाहन, शिक्षा एवं अन्य ऋणों पर आकर्षक ब्याज दरें

HOUSING LOAN – घर के सपनों को दें नया आकार
CAR LOAN – सपनों की गाड़ी अब और करीब
EDUCATION LOAN – उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव
PERSONAL LOAN – हर जरूरत के लिए भरोसेमंद सहयोग
MSME FINANCE – व्यवसाय की प्रगति का वित्तीय साथी
CREDIT CARD – स्मार्ट, सुरक्षित और सुविधाजनक भुगतान

डिजिटल बैंकिंग सेवाएँ
Mobile Banking | UPI Payments | Debit/Credit Card Services | QR Payments | SMS Alerts

भविष्य की प्रगति के लिए आज ही बिहार ग्रामीण बैंक से जुड़ें
bgb.bank.in
1800 180 7777
FOLLOW US ON: @bihargraminbankk @BGB_RRB @bgbbihar

जन-जन की आवाज है केवल सच

केवल सच | Kewalachlive.in वेब पोर्टल न्यूज 24 घंटे आपके साथ | Kewalsach news | केवल सच TIMES

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें
आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

BHIM UPI

www.kewalsach.com www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-
पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,
कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

निर्भीकता हमारी पहचान
केवल सच
हिन्दी मासिक पत्रिका

21वीं स्थापना वर्ष

'केवल सच' राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के
21वें स्थापना वर्ष के शुभ अवसर पर
पत्रिका के समस्त सम्मानित पाठकों, विज्ञापनदाताओं,
अधिवक्ताओं, न्यायाधीशों, पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारियों,
जनप्रतिनिधियों तथा समस्त देशवासियों को
हार्दिक बधाई एवं मंगलमय शुभकामनाएँ।

ईश्वर से प्रार्थना है कि 'केवल सच' सत्य, निष्पक्षता एवं जनहित की पत्रकारिता के अपने ध्येय पर निरंतर अग्रसर रहे तथा समाज में जागरूकता, न्याय और सकारात्मक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनकर नई ऊँचाईयों प्राप्त करे।

केवल सच – हिन्दी मासिक पत्रिका | KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN | KEWAL SACH TIMES A National Magazine | श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट

-: निवेदक:-
श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट

अखंड भारत को अखंड बनाये रखने के लिए भारत देश के वीरों ने हमेशा कुर्बानी दी है और आपसी एकजुटता की वजह से ही 800 वर्षों की गुलामी के बाद भी एकजुट होकर खंड-खंड में बंटने के बजाय अखंड रहकर सबका मुकाबला किया है लेकिन 1947 में मिली आजादी का अभी 100 वर्ष भी पूरे नहीं हुए है और हम खंड-खंड में सरकारी नीति की वजह से होते जा रहे हैं जबकि सरकार द्वारा भारत को फिर से अखंड बनाने की बात होती है। आचार्य चाणक्य के नीति से भारत अखंड बना और मौर्यवंश ने इसकी साख को मजबूत बनाया लेकिन समय के साथ जयचंदों की वजह से खंड-खंड में बटे लेकिन क्रांतिवीरों ने अपने प्राणों की आहुति देकर देश को आजाद कराया लेकिन हमारी नीति 1947 में ही दो खंडों में बंट गया और 15 अगस्त 1947 को भारत तो 14 अगस्त 1947 को ही पाकिस्तान बन गया, जबकि सभी ने मिलकर भारत को आजाद कराया था परन्तु खंड में बंटने की राजनीति भी होती रही। जाति एवं धर्म और क्षेत्र के उपर देश था लेकिन आजादी के बाद देश जाति, धर्म और क्षेत्र के नाम पर खंड-खंड में बंटती जा रही है और इसको बांटने वाला राजनेता जनता के बीच ''बटोगे तो कटोगे'' का नारा के साथ यूजीसी जैसा कानून लाकर अंग्रेजों की नीति ''फूट डालो - राज करो'' लागू कर दिया जाता है। देश खंड-खंड में बंटने का शिकार होने को विवश है।

— — — — — — —

ब्रजेश मिश्र, संपादक
8340360961, 9431073769

अखंड

खंड - खंड में

जनहित के मुद्दे को गंभीरता से निष्पादन करने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाना होगा अन्याथा जातिवाद की समस्या धीरे-धीरे देश के लिए नासूर बनता जा रहा है। पहले जातिगत आरक्षण, एससी/एसटी कानून और अब 2026 में यूजीसी कानून को लागू करके देश की खूबसूरती को ध्वस्त करने की कूटनीति रची गयी है जिससे हिन्दू भी अब बंटने लगा है। वेद, पुराण, महाभारत और रामायण सहित कई अन्य भारतीय ग्रंथों में भारतखंड नाम दिया गया है, जिसका अर्थ है भारत का भाग यानी भारत की भूमि को बताने के लिए भारतखंड कहा गया। कहा जाता है कि आर्य भारत के मूल निवासी थे। भारत, पाकिस्तान, नेपाल और भूटान में चौथा विभाजन 14 अगस्त, 1947 को ब्रिटिश सरकार ने भारत को दो भागों में बाँट दिया और उसी दिन पाकिस्तान (सिंध देश) की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। अगले दिन, 15 अगस्त को, खंडित भारत को स्वतंत्रता प्रदान की गई। उसी समय, नेपाल और भूटान भी स्वतंत्र राज्यों के रूप में अस्तित्व में आए। भारत से पाकिस्तान (1947), बांग्लादेश (1971), म्यांमार (1937), श्रीलंका (1948), नेपाल (1816) और भूटान (1907) में अलग हुआ और अब देश के भीतर राजनेताओं के द्वारा अलग माहौल बनाया जा रहा है। जातिवाद जाति व्यवस्था से सम्बन्धित एक प्रमुख सामाजिक समस्या है। जातिवाद की भावना व्यक्ति-व्यक्ति के बीच घृणा, द्वेष एवं प्रतिस्पर्द्धा को जन्म देती है जातिवाद की भावना के विकसित होने से व्यक्ति अपनी ही जाति के सदस्यों के हितों को सर्वोपरि समझता है। देश या समाज का हित उसके लिए नगण्य हो जाता है। भारतीय समाज में जाति व्यवस्था की उत्पति वैदिक काल से ही मानी जाती है। वैदिक काल में समाज वर्णव्यवस्था पर आधारित था। सम्पूर्ण समाज चार वर्णों- ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शुद्र में विभाजित था। जाति व्यवस्था ने समाज को अलग-अलग वर्गों में बांट दिया, जिससे कुछ जातियों को विशेषाधिकार मिले, जबकि कुछ जातियों को सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित कर दिया गया। यह असमानता जातिवाद को बढ़ावा देती है। कुछ राजनीतिक दल जातिवाद का इस्तेमाल अपने राजनीतिक फायदे के लिए करते हैं। संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950 की पहली अनुसूची में 28 राज्यों में 1,108 जातियों को सूचीबद्ध किया गया है, और संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश, 1950 की पहली अनुसूची में 22 राज्यों में 744 जनजातियों को सूचीबद्ध किया गया है। दुर्भाग्य से, युद्ध और संघर्ष दुनिया की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक हैं। 2022 और 2023 में कई ऐसे संघर्ष हुए जिनके कारण भारी जानमाल का नुकसान हुआ और लोग विस्थापित हुए। वर्ल्ड बैंक की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक, भारत पर 24.4 बिलियन डॉलर (करीब 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक) का कर्ज है। इस सूची में भारत पहले स्थान पर है, जबकि इंडोनेशिया 21.3 बिलियन डॉलर के कर्ज के साथ दूसरे स्थान पर है। 1857 से 1947 तक हिंदुस्तान के कई टुकड़े हुए और इस तरह बन गए सात नए देश। 1947 में बना पाकिस्तान भारतवर्ष का पिछले 2500 सालों में एक तरह से 24वां विभाजन था। भारत का पहला नाम जम्बूद्वीप था। सिंधु नदी घाटी के पश्चिम में स्थित मेहरगढ़ (7000 ईसा पूर्व से लगभग 2500 ईसा पूर्व) सिंध घाटी सभ्यता का अग्रदूत है, जिसके निवासी सिंधु घाटी में आकर बस गए और सिंधु घाटी सभ्यता का निर्माण किया। यह दक्षिण एशिया में कृषि और पशुपालन के साक्ष्यों वाले सबसे प्रारंभिक स्थलों में से एक है। अखंड भारत और मौर्य साम्राज्य का संस्थापक सम्राट अशोक रहे और अखंड भारत को मजबूती से कायम रखा। भारत में इस्लाम का आगमन सर्वप्रथम 712 ईस्वी में सिंध पर अरब आक्रमण के माध्यम से हुआ और उसके बाद ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी के आक्रमणों से यह और भी मजबूत हुआ। सोलहवीं शताब्दी में मुगल सम्राटों के शासनकाल में इस धर्म ने एक सशक्त शक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाई और आजाद भारत में मुसलमान का 80 प्रतिशत आज पाकिस्तान एवं चीन से ज्यादा प्रेम जाहिर करते हैं और भारत के टुकड़े करने की धमकी देते हैं तथा 2050 तक भारत को मुस्लिम राष्ट्र बनाने की घोषणा भी खुलेआम करते नजर आते हैं। पाकिस्तान का झंडा फहराते हैं भारत तेरे टुकड़े होंगे इंशा-अल्लाह, इंशा अल्लाह के नारे लग रहे हैं। आज भारत देश में लगभग राज्यों में भाजपा की सरकार है और प्रदेश का विकास भी हो रहा है लेकिन सामाजिक असामानता के कारण अब अपने ही प्रदेश में लोगों को सरकार की नीतियों एवं जातिवादी कानून से भय का माहौल बनता जा रहा है जिसकी वजह से लोग खंड-खंड में बंटने को विवश है। पूर्वी एवं दक्षिण भारत के साथ मध्य भारत की समस्याएं अलग-अलग बढ़ती जा रही है चाहे मध्यप्रदेश में आईएएस वर्मा का बयान हो, तेलांगना में सनातन वायरस है का बयान, दिल्ली के जेएनयू में ब्राह्मण भारत छोड़ों, यूजीसी 2026 कानून लागू करना, एससी/एसटी कानून का बयान की तरह सभी राज्यों में सुनियोजित ढ़ंग से सामाज को खंड - खंड में विभाजित करने की राजनीति हो रही है। किसी भी घटना को जातिय रंग देने का भी खेल जारी है और इसी प्रकार का षड्यंत्र चलता रहा तो देश के भीतर ही कई खंड में बंट जायेगा।

जून 2026

आपको केवल सच पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारा बल है। हम आपके सलाह को संजीवनी बूटी समझेंगे।

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

हमारा पता है :- द्वारा:- ब्रजेश मिश्र

पूर्वी अशोक नगर, रोड़ नं.- 14, मकान संख्या- 14/28

कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)

फोन:- 9431073769/ 8340360961/ 9955077308

हमारा ई-मेल kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

गृहयुद्ध

ब्रजेश जी,

जून 2026 अंक में संजय सक्सेना की खबर ''**असद के साथ पूरा विपक्ष सूर्या अकेला क्यों?**'' की खबर में पत्रकार ने पूरे मामले की कूटनीति का सच सामने लाया है तथा दूसरी खबर वरीष्ठ पत्रकार अजय कुमार ने ''**शिक्षा के मंदिर में कोचिंग वार**'' के मामले में भी पूरी पटकथा पर सटीक उदाहरणों के साथ खबर को लिखा है। छात्रों का भविष्य एवं सरकार की नीति के साथ कोचिंग संस्थानों की दबंगई की बातों को प्रमुखता से लिखना वास्तव में चुनौतीपूर्ण है। बढ़िया खबर।

✦काशीनाथ गिरी, चिल्लावें, दरियापुर, सारण

भव्य आयोजन

ब्रजेश जी,

भरत भूषण तिवारी का इंकाउंटर, देवी का साक्षात्कार, योग दिवस के साथ-साथ छोटी-छोटी जानकारीप्रद खबरों के बीच झारखंड में राज्यसभा चुनाव 2026 पर सटीक विश्लेषण जून 2026 अंक में किया गया है। भरत भूषण तिवारी के इंकाउंटर से जुड़ी दमदार एवं पर्दाफास खबरों को केवल सच मीडिया को पूरी प्राथमिकता से लिखना चाहिए। किशनगंज में अवैध बालू खनन पर धर्मेन्द्र सिंह की खबर भी सच लगी तो डॉ० लक्ष्मी नारायण सिंह की खबरें भी दिल को झकझोरती है।

✦ कौशल उरांव, बूटी मोड़ख राँची, झा०

बिल्डिंग

मिश्रा जी,

दिल्ली से संजय कुमार सिन्हा की खबर ''दिल्ली में बिल्डिंग ढ़हा, आग भी लगी'' विभागीय लापरवाही से आमजनता त्राहीमाम है की सटीक जानकारी अपने जून 2026 अंक के आलेख में लिखा है जो जानकारीप्रद एवं चिंतन करने योग्य है। आमजनता ने जिस प्रकार मदद करने का काम किया है वह सम्मानयोग्य है। दिल्ली के संसद और मंत्रालयों में फैले भ्रष्टाचार पर भी मजबूती से खबर को पाठकों के बीच लायें ताकि केन्द्र सरकार की नीति एवं मंत्रालयों के सहित गठबंधन के बीच चल रहे अंर्तकलह को भी उजागर करना चाहिए की कैसे प्रशासन की लापरवाही की वजह से जान जाती है।

✦ संजय वर्मा, अशोक नगर, नई दिल्ली

ईडी का शिकंजा

मिश्रा जी,

खबर का मतलब केवल सच और शशि रंजन सिंह एवं राजीव शुक्ला की संयुक्त खबर की बात ही निराली है। जून 2026 अंक में बिहार की राजनीति एवं पदाधिकारी के काली करतूत को उजागर किया। ''**ईडी का शिकंजा या राजनीतिक जाल?**'' खबर में बहुचर्चित घोटाला का परत ईडी के द्वारा खोला जा सकता है और पदाधिकारी का चेहरा सार्वजनिक होना चाहिए की बातों को पूरी गंभीरता पूर्वक लिखा गया है। आईएएस एवं उसके बिचौलिए की सटीक जानकारी के साथ लिखा गया खबर प्रमाणित प्रतीत होता है और रिशुश्री की दलाली की लीला को प्रमुखता से प्रकाशित किया है। दमदार एवं सटीक खबर।

✦ दिनेश पाठक, राजा बाजार, पटना, बिहार

नैतिक शिक्षा

संपादक जी,

मैं आपकी पत्रिका केवल सच का नियमित पाठक हूं और इसकी खबरों को अवश्य करके पढ़ता हूं क्योंकि प्रत्येक अंक में कोई न कोई सनसनी खेज को प्राथमिकता से उजागर करते हैं। जून 2026 अंक में अमित कुमार की खबर ''**त्रासदी परीक्षा की नहीं नैतिक शिक्षा की**'' में नीट -यूजी 2026 पेपर लीक मामले की सच्चाई को पाठकों के बीच रखा है और इस प्रकार की खबर लिखने की साहस लगातार केवल सच कर रहा है। लगातार नीट का पेपर लीक का मामला होने की वजह से छात्रों में निराशा है और सरकार के प्रति घृणा का भाव जागृत हो रहा है।

✦ अनंत यादव, बाबू बाजार, कोलकात्ता, पं.बं

सरकार

संपादक जी,

जून 2026 अंक में आपका बेबाक संपादकीय ''**सरकार, खुद पर नहीं भरोसा**'' में आपने बिहार सरकार एवं प्रशासनिक एवं पुलिस सेवा के अधिकारी के करतूत की सटीक व्याख्या करते हुए लिखा है, जो काबिले तारिफ है। बिहार एवं केन्द्र की नीति के खिलाफ पदाधिकारी जिस प्रकार सरकार की विश्वसनियता पर उंगली उठा रहे हैं पर पूर्ण बेबाकी के साथ आपने अपने संपादकीय में उसको लिखकर पत्रकारिता धर्म को निभाया है। शिक्षा एवं चिकित्सा के मुद्दे को भी आलेख में स्थान दिया है तथा पूरी सच्चाई को आप अपनी लेखनी में रखते हैं।

✦ प्रेम कुशवाहा, टावर चौक, भागनपुर, बिहार

अन्दर के पन्नों में

82

89

91

98

RNI No.- BIHHIN/2006/18181, DAVP No.- 129888

समृद्ध भारत खुशहाल भारत

निर्भीकता हमारी पहचान

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:- 21	अंक:- 242	माह:- जुलाई 2026	मूल्य:- 20/- रू

फाउंडर

श्रद्धेय गोपाल मिश्र
श्रद्धेय सुषमा मिश्र

संपादक

ब्रजेश मिश्र

9431073769 8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach@gmail.com

प्रधान संपादक

अरूण कुमार बंका	7782053204
सुरजीत तिवारी	9431222619
निलेन्दु कुमार झा	9431810505, 8210878854
सच्चिदानन्द मिश्र	9934899917
डॉ० शशि कुमार	9507773579
चंद्र शेखर कुमार	9931965035

संपादकीय सलाहकार

अमिताभ रंजन मिश्र	9430888060, 8873004350
अमोद कुमार	9431075402

महाप्रबंधक

त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9308815605, 9122003000

triloki.kewalsach@gmail.com

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

पूनम जयसवाल	9430000482, 9798874154
मनीष कुमार कमलिया	9934964551, 8809888819
गीतांजलि	9279599313, 8294636307

उप-संपादक

प्रसुन्न पुष्कर	9430826922, 7004808186
ब्रजेश सहाय	7488696914
ललन कुमार	7979909054, 9334813587

राजनीतिक संपादक

सुमित रंजन पाण्डेय	7992210078

संयुक्त संपादक

अमित कुमार 'गुड्डू'	9905244479, 7979075212
राजीव कुमार शुक्ला	9430049782, 7488290565
काशीनाथ गिरी	9905048751, 9431644829
कुमार अनिकेत	9431914317
शंकरानंद ठाकुर	9971103281

सहायक संपादक

शशि रंजन सिंह	8210772610, 9431253179
मिथिलेश कुमार	9934021022, 9431410833
नवेन्दु कुमार मिश्र	9570029800, 9199732994

समाचार प्रबंधक

सुधीर कुमार मिश्र	9608010907

ब्यूरो-इन-चीफ

सोनू यादव	8002647553, 9060359115
संकेत कुमार झा	9386901616, 7762089203

विधि सलाहकार

शिवानन्द गिरि	9308454485

चीफ क्राइम ब्यूरो

सैयद मो० अकील	9905101976, 8521711976

साज-सज्जा प्रबंधक

अमित कुमार	9905244479

amit.kewalsach@gmail.com

कार्यालय संवाददाता

श्रुति मिश्रा	8340360961

प्रसार प्रतिनिधि

कुणाल कुमार	9905203164

बिहार प्रदेश जिला ब्यूरो

पटना (श०)	:-	श्रीधर पाण्डेय	9470709185
(म०)	:-		
(ग्रा०)	:-		
बाढ़	:-		
भोजपुर	:-	गुड्डू कुमार सिंह	8789291547
बक्सर	:-	बिन्ध्याचल सिंह	8935909034
कैमूर	:-		
रोहतास	:-		
	:-		
गया (श०)	:-		
(ग्रा०)	:-	मो० सईद	6299169764
औरंगाबाद	:-		
जहानाबाद	:-	नवीन कुमार रौशन	9934039939
अरवल	:-	संतोष कुमार मिश्रा	9934248543
नालन्दा	:-		
	:-		
नवादा	:-	अमित कुमार	9162664468
	:-		
मुंगेर	:-		
लखीसराय	:-		
शेखपुरा	:-		
बेगूसराय	:-		
	:-		
खगड़िया	:-		
समस्तीपुर	:-	रमेश कुमार	8298588504
जमुई	:-	अजय कुमार	9430030594
वैशाली	:-		
	:-		
छपरा	:-		
सिवान	:-		
	:-		
गोपालगंज	:-		
	:-		
मुजफ्फरपुर	:- .		
	:-		
सीतामढ़ी	:-		
शिवहर	:-		
बेतिया	:-	रवि रंजन मिश्रा	9801447649
बगहा	:-		
मोतिहारी	:-	संजीव रंजन तिवारी	9430915909
दरभंगा	:-		
	:-		
मधुबनी	:-		
	:-	प्रशांत कुमार गुप्ता	6299028442
सहरसा	:-		
मधेपुरा	:-		
सुपौल	:-		
किशनगंज	:-		
	:-		
अररिया	:-	अब्दुल कय्यूम	9934276870
पूर्णिया	:-		
कटिहार	:-		
भागलपुर,	:-		
(ग्रा०)	:-	रवि पाण्डेय	7033040570
नवगछिया	:-		

दिल्ली कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर,
नई दिल्ली-110052
संजय कुमार सिन्हा, स्टेट हेड
मो०- 9868700991, 9431073769

उत्तरप्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
................................., **स्टेट हेड**
सम्पर्क करें
9308815605

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
अजीत कुमार दुबे, स्टेट हेड
मो०- 9433567880, 9308815605

मध्य प्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
अभिषेक कुमार पाठक, स्टेट हेड
मो०- 8109932505,

झारखंड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव,
द्वितीय तल, फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001
मो०- 7903856569, 6203723995

छत्तीसगढ़ कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
.................................., **स्टेट हेड**
सम्पर्क करें
8340360961

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

☞ पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या.- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार) मो०- 9431073769, 9955077308

☞ e-mail:- kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

☞ स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा सांध्य प्रवक्ता खबर वर्क्स, ए- 17, वाटिका विहार (आनन्द विहार), अम्बेडकर पथ, पटना 8000 14(बिहार) एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। RNI NO.-BIHHIN/2006/18181

☞ पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

☞ सभी प्रकार के वाद-विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।

☞ आलेख पर कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।

☞ किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।

☞ **सभी पद अवैतनिक हैं।**

☞ फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)

☞ कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।

☞ **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**

☞ भुगतान Kewal Sach को ही करें। प्रतिनिधियों को नगद न दें।

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- Punjab National Bank
IFSC Code :- PUNB0060020
PAN No. :- AAJFK0065A

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- State Bank of India
IFSC Code :- SBIN0003564
PAN No. :- AAJFK0065A

प्रधान संपादक

....

....

झारखण्ड स्टेट ब्यूरो

....

झारखण्ड सहायक संपादक

अभिजीत दीप 7004274675, 9430192929
ब्रजेश मिश्र 7654122344, 7979769647
अनंत मोहन यादव 9546624444, 7909076894

उप संपादक

अजय कुमार 6203723995, 8409103023

....

संयुक्त संपादक

....

विशेष प्रतिनिधि

भारती मिश्रा 8210023343, 8863893672

....

....

झारखण्ड प्रदेश जिला ब्यूरो

राँची :- अभिषेक मिश्र 7903856569
:- ओम प्रकाश 9708005900
साहेबगंज :-
खूँटी :-
जमशेदपुर :-
हजारीबाग :-
जामताड़ा :-
दुमका :-
देवघर :-
धनबाद :-
बोकारो :-
रामगढ़ :-
चाईबासा :-
कोडरमा :-
गिरीडीह :-
चतरा :- धीरज कुमार 9939149331
लातेहार :-
गोड्डा :-
गुमला :-
पलामू :-
गढ़वा :-
पाकुड़ :-
सरायकेला :-
सिमडेगा :-
लोहरदगा :-

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)

पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका

एवं 'केवल सच टाइम्स'

एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी, लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020,

फोन- 0612/3504251

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक **''मगध इंटरनेशनल स्कूल''** टेकारी

'' केवल सच '' पत्रिका **एवं '' केवल सच टाइम्स ''**

9060148110

sudhir4s14@gmail.com

कैलाश कुमार मौर्य

मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

व्यवसायी

पटना, बिहार

7360955555

बिहार राज्य प्रमंडल ब्यूरो

पटना		
मगध		
सारण		
तिरहुत		
पूर्णिया	**धर्मेन्द्र सिंह**	9430230000, 7004119966
भागलपुर		
मुंगेर		
दरभंगा		
कोशी		

विशेष प्रतिनिधि

आशुतोष कुमार	9430202335, 9304441800
सूमन सौरभ	9471492480, 7004952447
बेंकटेश कुमार	8521308428, 9572796847
दीपनारायण सिंह	9934292882
आनन्द प्रकाश पाण्डेय	9931202352, 7808496247
रामजीवन साहू	9430279411, 7250065417
रजनीश कांत झा	9430962922, 7488204140
मुकेश कुमार	9473038020

छायाकार

त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9122003000, 9431096964
मुकेश कुमार	9835054762, 9304377779
जय प्रसाद	7766081555

झारखंड राज्य प्रमंडल ब्यूरो

राँची	गुड्डी साव	6299470142
हजारीबाग		
पलामू		
दुमका		
चाईबासा		

Acharya Devvrat
Governor, Gujarat
Gandhinagar-382021

सत्यमेव जयते

आचार्य देवव्रत
राज्यपाल, गुजरात
गांधीनगर-३८२०२१

13 JUL 2026

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि केवल सच मासिक पत्रिका अपनी स्थापना के 21 वर्ष पूर्ण कर रही है और इस अवसर पर "देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा" विशेषांक का प्रकाशन कर रही है।

आजादी की पहली क्रांति के अग्रदूत अमर शहीद मंगल पांडे जी का जीवन साहस, पराक्रम और राष्ट्रभक्ति का जीवंत प्रतीक है। राष्ट्र की स्वतंत्रता में युवाओं की भूमिका सदैव से प्रेरणादायक रही है। 'केवल सच' पत्रिका द्वारा युवा पीढ़ी को महापुरुषों के बलिदानों और उनके जीवन-मूल्यों से परिचित कराने का प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

वर्तमान समय में जब देश अमृतकाल की ओर अग्रसर है, तब युवाओं को राष्ट्र निर्माण, एकता और अखंडता के प्रति जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक पाठकों, विशेषकर युवाओं में देशप्रेम की भावना को और अधिक प्रगाढ़ करेगा और उन्हें समाज व राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को समझने की नयी दृष्टि प्रदान करेगा।

मैं 'केवल सच' पत्रिका के 21वें स्थापना वर्ष और इस विशेष आयोजन के लिए सभी आयोजकों, पत्रकारों एवं सम्मानित होने वाले कर्मयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और इस विशेषांक की सफलता हेतु मंगलकामनाएं।

(आचार्य देवव्रत)

हरिभाऊ बागडे
राज्यपाल, राजस्थान

सत्यमेव जयते

Haribhau Bagde
Governor, Rajasthan

दिनांक जून. 2026

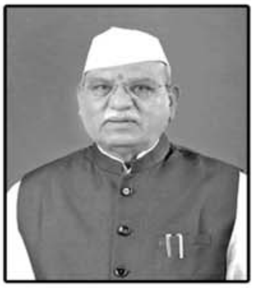

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि 'केवल सच' राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा 21वें स्थापना दिवस पर 'देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा' विषय पर विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर देश के लिए उल्लेखनीय कार्य करने वाली विभूतियों को 'क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान–2026' से सम्मानित किया जा रहा है।

देश की आजादी में क्रांतिकारी युवाओं ने हंसते–हंसते फांसी के फंदे को स्वीकार किया परन्तु आजादी के संघर्ष से पीछे नहीं हटे। मंगल पाण्डेय, चन्द्रशेखर आजाद जैसे युवाओं के साथ बहुत से अज्ञात क्रांतिकारी मां भारती के लिए निरंतर लड़ते रहे, शहीद होते रहे। विश्वास है, क्रांतिकारी युवा विशेषांक ज्ञात–अज्ञात क्रांतिकारी स्वाधीनता सेनानियों पर महत्वपूर्ण सामग्री लिए होगा।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

(हरिभाऊ बागडे)

लोक भवन, सिविल लाइन्स, जयपुर–302006
Lok Bhavan, Civil Lines, Jaipur-302006
दूरभाष : 0141–2228716–19, 2228611–12, 2228722

ले. जनरल के.टी. पारनाईक
पीवीएसएम, यूवाईएसएम, वाईएसएम (से.नि.)
राज्यपाल, अरुणाचल प्रदेश

सत्यमेव जयते

लोक भवन
ईटानगर - 791111

संदेश

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि **"केवल सच"** राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा अंग्रेजों के विरूद्ध क्रांति की अलख जगाने वाले वीर मंगल पांडेय के जन्मोत्सव के अवसर पर **"देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा"** नामक विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

भारत की आजादी का इतिहास उन युवा क्रांतिकारियों के अदम्य साहस और बलिदान की स्वर्णिम गाथा है, अमर शहीद **मंगल पांडेय, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद खुदीराम बोस** और **राम प्रसाद बिस्मिल** जिन्होंने अपनी जान देश के नाम न्यौछावर कर दी। युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र का गौरव हुआ करती है। जब युवा प्रचंड शक्ति प्रवाह के साथ कर्म पथ पर चलता है तो एक नई इतिहास का सृजन करता है। भारत की स्वतंत्रता का श्रेय इन युवा शक्ति को ही जाता है जिन्होंने आत्म बलिदान के साथ संगठित होकर लोगों में देशभक्ति की भावना जागृत की थी। इन वीरों का त्याग केवल इतिहास का गौरव नहीं, बल्कि हर पीढ़ी के लिए जागरूकता, साहस और राष्ट्र प्रेम का अमिट संदेश है, जिनके अदम्य साहस, अटूट संकल्प और प्रखर विचारों ने यह सिद्ध किया कि जब उद्देश्य महान हो, तो जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्र के नाम समर्पित हो जाता है। आज आवश्यकता है कि हम उनके आदर्शों को आत्मसात कर एक ऐसे समाज के निर्माण में सहायक हों, जो न्याय, समानता और प्रगतिशीलता की नींव पर खड़ा हो और माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की **"विकसित भारत"** की दृष्टिकोण को साकार करने में योगदान दें।

उपरोक्त विशेषांक के सफल प्रकाशन के लिए **"केवल सच"** राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के सभी सदस्यों तथा संपादक मंडल को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

पारनाईक

लेफ्टिनेंट जनरल के.टी. पारनाईक
पी.वी.एस.एम.,यू.वाई.एस.एम.,वाई.एस.एम.(से.नि.)

सम्राट चौधरी
Samrat Choudhary

मुख्यमंत्री, बिहार
CHIEF MINISTER, BIHAR

बिहार सरकार

पत्रांक : ....

दिनांक : 08.07.2026

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि हिन्दी पत्रिका **''केवल सच''** द्वारा दिनांक **19 जुलाई, 2026** को अपने *21वें स्थापना वर्ष* के अवसर महान स्वतंत्रता सेनानी *स्व0 मंगल पाण्डेय जी* को समर्पित कर उनके *जन्मोत्सव* के उपलक्ष्य में *''देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा''* विशेषांक का विमोचन कार्यक्रम का आयोजन अधिवेशन भवन, मुख्य सचिवालय, पटना में किया जा रहा है। इस अवसर पर *''क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान 2026''* से भी लोगों को सम्मानित किया जायेगा

भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदुतो में से एक अमर क्रांतिकारी स्व0 मंगल पाण्डेय जी का जन्म 19 जुलाई 1827 को ऊत्तर प्रदेश के बलिया जिला के नगवा गाँव में हुआ था। उनका साहस, देशभक्ति और बलिदान भारतीय़ स्वतंत्रता इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

हिन्दी पत्रिका ''केवल सच'' के द्वारा सार्वजनिक दायित्व के मद्देनजर विलक्षण प्रतिभा का परिचय देने वाले कर्मयोगियों के लिए राजधानी पटना में सम्मान समारोह आयोजित किया जाना एवं महान स्वतंत्रता सेनानी स्व0 मंगल पाण्डेय को समर्पित कर विशेषांक का प्रकाशन किया जाना बड़े गर्व की बात है।

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का मानना है कि निष्पक्ष विचार, प्रमाणिक जानकारी और रचनात्मक लेखनी ही एक सशक्त, शिक्षित और जागरूक समाज की आधारशिला है। आशा है, पत्रिका का विशेषांक अत्यंत ज्ञानवर्द्धक एवं स्व0 मंगल पाण्डेय जी के जीवन, व्यक्तित्व, कृतित्व, आदर्शों, स्मृतियों और विरासत से सर्वसाधारण को परिचित कराने में सफल सिद्ध होगा, जो युवा पीढ़ी को सदैव प्रेरित करता रहेगा।

इस अवसर पर, मैं अमर शहीद मंगल पाण्डेय जी को शत–शत नमन करते हुए पत्रकार बंधुओं एवं सम्मान प्राप्त कर्मयोगियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करते हुए सम्मान समारोह के सफल आयोजन तथा विशेषांक के प्रकाशन एवं उसकी उपयोगिता हेतु अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

(सम्राट चौधरी)

लोक सेवक आवास, अणे मार्ग, पटना-800001, दूरभाष : +91-612-2215167, 2215168, फैक्स : +91-612-2224129, ई-मेल : cmbihar@nic.in

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

क्रमांक-198/मु.मं.प्र.प्र./26
भोपाल, दिनांक :- 06/07/2026

संदेश

हर्ष का विषय है कि पटना से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका 'केवल सच' द्वारा अपने 21वें स्थापना दिवस पर 19 जुलाई को विभिन्न सेवा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को "क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान-2026" से सम्मानित किया जा रहा है।

वर्ष 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के महानायक मंगल पाण्डेय ने धार्मिक आस्था और सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष किया और इस संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए बलिदान दिया। क्रांतिकारी वीरों के नाम पर सम्मान समारोह देशवासियों में राष्ट्रप्रेम का संचार करेगा।

मुझे आशा है पत्रिका के विशेषांक का प्रकाशन युवाओं को राष्ट्रसेवा और समाज सेवा से जुड़ने में प्रेरक साबित होगा।

हार्दिक मंगलकामनाएं।

(डॉ. मोहन यादव)

6, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462 002

CHIEF MINISTER
MIZORAM

MESSAGE

It is a privilege to convey my warm greetings on the publication of this special issue dedicated to "The Nation's Freedom and Revolutionary Youth." I congratulate the editorial team of Keval Sach on bringing out this meaningful publication, which preserves the inspiring legacy of our freedom fighters and encourages the younger generation to appreciate the sacrifices that secured India's independence.

The courage and patriotism of great revolutionaries such as Mangal Pandey remind us that the freedom we cherish today was earned through extraordinary sacrifice and unwavering devotion to the nation. Their lives continue to inspire us to uphold the values of justice, unity and selfless service, which remain essential for building a strong and progressive India.

The youth are the nation's greatest strength and the architects of its future. I urge our young people to draw inspiration from the ideals of our freedom fighters by embracing integrity, discipline, compassion and a spirit of innovation. As responsible citizens, they have a vital role in safeguarding our democratic values and contributing meaningfully to national development.

On this significant occasion, I extend my heartfelt congratulations to the publishers of this special issue and convey my best wishes for its success. May it inspire generations of young Indians to honour our rich heritage and work together towards a peaceful, prosperous and united nation.

(LALDUHOMA)

Dated Aizawl,
The 3rd July, 2026

Chief Minister's Office, Mc Donald Hill, Zarkawt, Aizawl - 796001
Ph. : 0389-2342150, Email : cm@mizoram.gov.in, website : cmonline.mizoram.gov.in

अवधेश नारायण सिंह
सभापति
बिहार विधान परिषद्

सत्यमेव जयते

Awadhesh Narain Singh
Chairman
Bihar Legislative Council

Lt. No./पत्रांक ....

Dt./दिनांक 30/06/2026

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका "केवल सच" द्वारा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रथम शहीद वीर मंगल पाण्डेय के जन्मोत्सव के अवसर पर आगामी 19 जुलाई, 2026 को "देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा" शीर्षक विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है तथा उक्त अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को "क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान -2026" से सम्मानित किए जाने का भी कार्यक्रम है।

देश के स्वतंत्रता संग्राम में युवा बलिदानी महापुरूषों की महती भूमिका रही है। अमर शहीद सरदार भगत सिंह, खुदीराम बोस, सुखदेव, करतार सिंह सराभा, राजगुरू, बाजीराव जैसे अनेक वीर योद्धाओं ने देश को गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दिया। केवल सच पत्रिका के माध्यम से वर्तमान युवा पीढ़ी को इन युवा बलिदानी महापुरूषों की जीवन गाथा से परिचित कराने का प्रयास अत्यंत सराहनीय पहल है।

केवल सच पत्रिका के 21वां स्थापना दिवस के अवसर पर प्रकाशित होने वाली विशेषांक तथा "केवल सच सम्मान -2026" के सफल आयोजन हेतु मैं पत्रिका के संपादक-सह-प्रबंधकर्ता को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

30/6/26

(अवधेश नारायण सिंह)

3, देशरत्न मार्ग, पटना - 800 001
3, Deshratan Marg, Patna - 800 001
Tel.: 0612-2215819, 2215245 (O)
Fax : 2215683, 2215617, Mob.: 9431018630

डॉ० प्रेम कुमार
अध्यक्ष
बिहार विधान सभा

सत्यमेव जयते

Dr. Prem Kumar
Speaker
Bihar Legislative Assembly

पत्रांक:

दिनांक : 22/06/26

शुभकामना संदेश

"देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा" विशेषांक के प्रकाशन के अवसर पर "केवल सच" हिन्दी मासिक पत्रिका के सम्पूर्ण परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम असंख्य वीर सपूतों के त्याग, बलिदान एवं राष्ट्रनिष्ठा का गौरवशाली इतिहास है। अमर शहीद मंगल पाण्डेय सहित अनेक युवा क्रांतिकारियों ने अपने अदम्य साहस और देशभक्ति से स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा प्रदान की। उनके संघर्ष और बलिदान ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत स्थापित किया।

"देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा" विषय पर प्रकाशित यह विशेषांक स्वतंत्रता आंदोलन में युवाओं के योगदान को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का एक सराहनीय एवं समयोपयोगी प्रयास है। मुझे विश्वास है कि यह प्रकाशन युवाओं में राष्ट्रप्रेम, लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा राष्ट्रीय एकता की भावना को और अधिक सुदृढ़ करेगा।

मैं इस महत्वपूर्ण पहल की सफलता की मंगलकामना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि "केवल सच" पत्रिका राष्ट्रहित एवं जनजागरण के क्षेत्र में अपनी सार्थक भूमिका का निर्वहन निरंतर करती रहेगी।

प्रेम कुमार

(डॉ. प्रेम कुमार)

Address: 3, Circular Road, Patna.
Phone : 0612-2217856, 2217082 (O), 0612-2215858 (R), Mob-9473400422
Fax No: 0612-2217373
E-mail : drpremkrbjp1955@gmail.com

श्रवण कुमार
मंत्री
ग्रामीण विकास,
सूचना एवं जन-संपर्क विभाग
बिहार सरकार

12 ए0 नेहरू पथ, पटना
दूरभाष : 0612-2215472 (आ0)

पत्रांक.....................

दिनांक 03/07/2026

<u>शुभकामना संदेश</u>

मुझे अति प्रसन्नता है कि है कि केवल सच मीडिया एवं श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट के तत्वाधान में प्रतिवर्ष अपने संगठन की स्थापना वर्ष पर किसी न किसी महापुरूष के ऊपर एक विशेषांक का प्रकाशन करती आ रही है ।

इसी क्रम में देश की आजादी में युवाओं के संघर्ष पर दिनांक 19 जुलाई 2026 को "केवल सच" हिन्दी मासिक पत्रिका के 21वें स्थापना वर्ष के अवसर पर इस बार देश को गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए, अंग्रेजों के विरुद्ध पहली गोली चलाकर क्रांति की अलख जगाने वाले **वीर मंगल पाण्डेय के जन्मोत्सव** के अवसर पर एक विशेषांक का प्रकाशन करने जा रही है । जिससे आज की युवा पीढ़ी को **बीर वलिदानी महापुरूष मंगल पाण्डेय** के जीवन एवं संघर्ष की पूरी जानकारी से अवगत हो सकेगें तथा देशहित में उनके द्वारा कार्यो से प्रेरित होगें ।

शहीद मंगल पाण्डेय 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री में सिपाही थे और उन्हें अक्सर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का पहला शहीद कहा जाता है। अंग्रेजी शासन द्वारा मंगल पाण्डेय को 8 अप्रैल, 1857 को भारत के बैरकपुर में फांसी दी गयी थी । आजादी की पहली गोली चलाने वाले भारतीय स्वतंत्रता सेनानी अमर मंगल पाण्डेय ने 29 मार्च, 1857 को कलकत्ता में दो ब्रिटिश अधिकारियों ह्यूसन और बाउ को मारा था। मंगल पाण्डेय 1857 के विद्रोह के प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। मंगल पाण्डेय ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी में कार्यरत एक भारतीय सिपाही थे। उनका नारा "मारो फिरंगी को" आज भी रगों में देशभक्ति का संचार करता है।

मैं **"केवल सच"** द्वारा **"देश की आजादी एवं क्रांति युवा"** विशेषांक की प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूं एवं मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह संस्था आगे भी देश के युवा को ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध कराने की अपने प्रयास में सफल रहेगी एवं भविष्य में भी महत्वपूर्ण प्रकाशन जारी रखेगी ।

श्रवण कुमार
(श्रवण कुमार)

कार्यालय - मुख्य सचिवालय, पटना-800015, आवास : 12ए, बेली रोड़, पटना-800015
दूरभाष/फैक्स : 0612-2205331 (का॰, ग्रा॰), 2215472 (आ॰ ग्रा॰), दुरभाष : 0612-2215712 (का॰ सू॰), मोबाईल : 9471006315
E-mail- pstoministerrdd@gmail.com

श्रीभगवान सिंह कुशवाहा
मंत्री
योजना एवं विकास विभाग
बिहार, पटना

बिहार सरकार

Sribhagwan Singh Kushwaha
Minister
Planning and Development
Old Secretariat, Patna
Tel.: 06122-2217564
Mob.: 9431821525

पत्रांक 229

दिनांक 22.06.2026

संदेश

भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले अमर शहीदों एवं क्रांतिकारियों को मैं सादर नमन करता हूँ। विशेष रूप से अमर शहीद मंगल पांडेय का अद्वितीय साहस, राष्ट्रभक्ति एवं बलिदान आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

देश की आजादी केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं, बल्कि हमारे पूर्वजों के संघर्ष, त्याग और समर्पण का परिणाम है। वर्तमान युवा पीढ़ी का दायित्व है कि वह स्वतंत्रता सेनानियों के आदर्शों को आत्मसात करते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाए तथा लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाए।

"देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा" विषय पर प्रकाशित होने वाले इस विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। विश्वास है कि यह प्रकाशन युवाओं में राष्ट्रप्रेम, कर्तव्यनिष्ठा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को और प्रबल करेगा।

शुभकामनाओं के साथ।

(श्रीभगवान सिंह कुशवाहा)

सेवा में,
श्री ब्रजेश मिश्र,
संपादक–सह–प्रबंधकर्ता,
केवल सच, पूर्वी अशोक नगर
रोड़ न0–14, म0 सं0–14/28
कंकड़बाग, पटना।

पता : 13/20, मंत्री आवासीय परिसर, गर्दनीबाग, पटना- 800 001

केदार प्रसाद गुप्ता
मंत्री
पर्यटन विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

Kedar Prasad Gupta
Minister
Department of Tourism
Government of Bihar

पत्रांक 418 दिनांक 3-7-26

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि 19 जुलाई, 2026 को **'केवल सच'** हिन्दी मासिक पत्रिका के 21वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **'देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा'** पर विशेषांक प्रकाशन कर रहा है तथा उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **''क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान–2026''** से सम्मानित किया जायेगा।

''केवल सच'' पत्रिका के 21वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **''क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान–2026''** में राष्ट्र के लिए उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित होने वाली प्रतिभाओं को मैं अपनी ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ। पत्रिका के सभी प्रतिनिधियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ सम्प्रेषित करता हूँ।

मै आपके कार्यक्रम एवं स्मारिका के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

(केदार प्रसाद गुप्ता)

सेवा में,
श्री ब्रजेश मिश्र,
संपादक–सह–प्रबंधकर्त्ता,
केवल सच,
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका।

Office/**कार्यालय** : Room No. : 133, Main Secretariat, Patna :- **कमरा संख्या– 133, मुख्य सचिवालय, पटना– 800015**
Web: https://state.bihar.gov.in/bihartourism | E-mail :- minister-tourism@bihar.gov.in, **टेली** : 0612-2215199/2211242

डॉ० प्रमोद कुमार
मंत्री
खान एवं भूतत्व
—सह—
कला एवं संस्कृति विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

कार्यालय :
कमरा नं०—01, भूतल,
विकास भवन, नया सचिवालय, पटना—800015
दूरभाष : 0612—2215688 (का०)
इ—मेलः ministerartcultureyouth@gmail.com
आवासीय कार्यालय : 27, हार्डिंग रोड, पटना—1
मो०—8210940997
स्थायी पता : नेरथुआ मठ, जहानाबाद
E-mail :drpramodkchandravansi@gmail.com

पत्रांक—.............................. दिनांक— 07.07.26

शुभकामना संदेश

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिकारियों के त्याग, बलिदान एवं राष्ट्रभक्ति ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज आवश्यकता है कि युवा पीढ़ी उनके आदर्शों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दे। युवाओं की ऊर्जा, नवाचार और सकारात्मक सोच ही विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव है।

इस पत्रिका का विशेषांक देशभक्ति, राष्ट्रीय चेतना तथा युवाओं में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मुझे विश्वास है कि यह प्रकाशन स्वतंत्रता संग्राम के वीर नायकों के योगदान को जन—जन तक पहुँचाने और युवाओं को राष्ट्रहित में कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा।

कला एवं संस्कृति विभाग के तरफ से **''देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा''** विशेषांक के प्रकाशन पर केवल सच राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(डॉ० प्रमोद कुमार)

मदन सहनी
मंत्री
मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

MADAN SAHNI
Minister
Prohibition, Excise & Registration Department
Govt. of Bihar

पत्रांक : 220/अ10

दिनांक : 08-07-2026

शुभकामना संदेश

युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी होती है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में युवाओं ने अदम्य साहस, त्याग और राष्ट्रभक्ति का परिचय देते हुए देश को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अमर शहीद मंगल पाण्डेय जैसे महान् क्रांतिकारियों का जीवन आज भी युवाओं को राष्ट्रहित में समर्पण, कर्त्तव्यनिष्ठा और संघर्ष की प्रेरणा प्रदान करता है।

'केवल सच' द्वारा प्रकाशित विशेषांक **''देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा''** स्वतंत्रता आंदोलन के गौरवशाली इतिहास तथा युवाओं के योगदान को नई पीढ़ी तक पहूँचाने का एक सराहनीय प्रयास है। मुझे विश्वास है कि यह विशेषांक युवाओं में राष्ट्रप्रेम, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सकारात्मक चिंतन का संचार करेगा।

इस अवसर पर मैं 'केवल सच' परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें देता हूँ तथा विशेषांक की सफलता का कामना करता हूँ।

जय हिन्द!

मदन सहनी
8.7.2026.
(मदन सहनी)

कार्यालय : कमरा सं० – 141 एवं 142, प्रथम तल, विकास भवन, नया सचिवालय, पटना।
आवास : 07, पोलो रोड, पटना, दूरभाष सं०–0612–2215001 (आ०), 0612–2231303 (का०)
ईमेल–minister.excise@bihar.gov.in

नीतीश मिश्रा
Nitish Mishra

बिहार सरकार

मंत्री
नगर विकास एवं आवास विभाग,
तथा
सूचना प्रावैधिकी विभाग,
बिहार सरकार

Minister
Urban Development & Housing Dept.
&
Information Technology Dept.
Govt. of Bihar

पत्रांक/Ref.No. शून्य   पटना/Patna, दिनांक/Date 19.06-26

नीतीश मिश्रा
मंत्री,
नगर विकास एवं आवास विभाग,
तथा, सूचना प्रावैधिकी विभाग,
बिहार सरकार।

शुभकामना संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि **''केवल सच''** हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी **''शहीद मंगल पाण्डेय''** के जन्मोत्सव पर **'देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा'** विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। उक्त अवसर पर **''क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान–2026''** प्रदान करने का कार्यक्रम एक प्रशंसनीय प्रयास है।

सर्वाधिक युवा आबादी वाले देशों में से भारत का एक प्रमुख स्थान है। ऊर्जावान युवा–शक्ति में राष्ट्रीयता का अभिनव संचार और **'राष्ट्र सर्वोपरि'** की भावना के प्रवाह से सुवासित होने के लिए महापुरूषों की वीर गाथा से परिचित कराने हेतु राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास की चर्चा का एक सराहनीय कार्य किया जाएगा। अतीत से वर्तमान और समसामयिकी से भविष्य की कल्पना में ऐसे प्रेरक प्रसंग पाठकों के लिए संग्रहणीय हैं तथा यह सकारात्मक पत्रकारिता का परिचायक है।

मैं **''क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान–2026''** के सफल आयोजन तथा **'देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा'** विशेषांक के प्रकाशन की सफलता हेतु शुभकामाएँ देता हूँ।

Nitish Mishra
(नीतीश मिश्रा)

कार्यालय: नगर विकास एवं आवास विभाग, कमरा सं0-128, प्रथमतल, विकास भवन, नेहरु पथ, पटना-800015.
Urban Development & Housing Dept. Room No-128, 1st Floor, VikashBhawan, Nehru Path, Patna- 800015.
Web: https://state.bihar.gov.in/Urban | टेली./Tel.: 0612-2233099. E-mail- minister.udhd@bihar.gov.in

मिथिलेश तिवारी
मंत्री
शिक्षा विभाग,
बिहार सरकार

बिहार सरकार

कार्यालय : कमरा सं–43
विकास भवन, पटना–15
दूरभाष सं० :– 0612–2204904 (का०)
फैक्स :– 0612–2215836
आवास :– न्यू विधायक फ्लैट नं०
1/1 नियर मिलर स्कूल,
वीरचंद पटेल, पटना–01
ई–मेल :– ministereducationcell@gmail.com

पत्रांक: M-736 दिनांक : 10/7/2026

शुभकामना संदेश

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका 'केवल सच' के 21वें स्थापना वर्ष और महान क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय के जन्मोत्सव पर आगामी 19 जुलाई को प्रकाशित हो रहे 'देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा' विशेषांक के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

अमर शहीद मंगल पाण्डेय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे महानायक थे जिनके साहस, त्याग और राष्ट्रभक्ति ने देशवासियों में आजादी की चेतना जगाई। उनका जीवन आज भी युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है और विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में आज की युवा पीढ़ी की भागीदारी भी उतनी ही आवश्यक है।

मुझे प्रसन्नता है कि इस विशेषांक के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन में युवाओं के योगदान तथा महान क्रांतिकारियों के आदर्शों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। यह प्रकाशन युवाओं में राष्ट्रप्रेम, कर्तव्यबोध, सामाजिक समरसता और सकारात्मक नेतृत्व की भावना को सुदृढ़ करने में सहायक होगा।

मैं इस महत्वपूर्ण पहल के लिए 'केवल सच' परिवार, विशेष कर पत्रिका के संपादक सह प्रबंधकर्ता श्री ब्रजेश मिश्र जी को बधाई देता हूँ तथा महान क्रांतिकारी के जन्मोत्सव पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक की सफलता के लिए अपनी मंगलकामनाएं प्रेषित करता हूँ ।

(मिथिलेश तिवारी)

डॉ0 दिलीप कुमार जायसवाल
मंत्री
राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

Dr. Dilip Kumar Jaiswal
Minister
Dept. of Revenue & Land Reforms
Government of Bihar

पत्रांक 441 दिनांक 09/07/2026

—: शुभकामना संदेश :—

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि **''केवल सच''** हिन्दी मासिक पत्रिका **दिनांक—19 जुलाई, 2026** को अपने **21वें** स्थापना वर्ष के अवसर पर **''देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा''** के विशेषांक का प्रकाशन कर रही है, जिसका विमोचन देश—प्रदेश के कई गणमान्य व प्रबुद्धगणों की उपस्थिति एवं उनके हाथों सम्पन्न होना है। इस अवसर पर विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **''क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान—2026''** से सम्मानित भी किया जा रहा है। जो नई—पीढ़ी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं उक्त समारोह एवं विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु मंगलकामना करता हूँ।

(डॉ0 दिलीप कुमार जायसवाल)

सेवा में,

श्री ब्रजेश मिश्र
संपादक—सह—प्रबंधकर्त्ता
केवल सच।

कार्यालयः राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग, बिहार, मुख्य सचिवालय, पटना-800015
Office: Revenue and Land Reforms Department, Bihar, Main Secretariat, Patna-800015
दूरभाष (Phone): 0612-2217355 (का0) Mobile No.-9955551111/9931111117 Email: revenueminister.bihar@gmail.com

डॉ॰ श्वेता गुप्ता
Dr. Shweta Gupta

बिहार सरकार

मंत्री
समाज कल्याण विभाग
बिहार, पटना
Minister
Social Welfare Department
Bihar, Patna

पत्रांक ..321(S.W)

दिनांक..22-06-2026..

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि 19 जुलाई 2026 को **'केवल सच'** हिन्दी मासिक पात्रिका के 21वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **'देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा'** पर **विशेषांक'** प्रकाशन कर रहा है तथा उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **" क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान–2026"** से सम्मानित किया जायेगा।

"**केवल सच**" पत्रिका के 21वें स्थापना वर्ष के अवसर पर "**क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान–2026**" में राष्ट्र के लिए उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित होने वाली प्रतिभाओं को मैं अपनी ओर से हार्दिक बधाई देती हूँ। पत्रिका के सभी प्रतिनिधियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ सम्प्रेषित करती हूँ।

मै आपके कार्यक्रम एवं स्मारिका के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

श्वेता गुप्ता
22/6/26

(डॉ0 श्वेता गुप्ता)

सेवा में,

श्री ब्रजेष मिश्र,
संपादक–सह–प्रबंधकर्त्ता,
केवल सच,
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका।

कार्यालय : मुख्य सचिवालय, पटना–800015, टेलीफैक्स–0612–2215045
आवासीय कार्यालय : 5/3, न्यू विधायक आवास, वीरचन्द पटेल पथ, पटना–800001
Office: Main Secretariat, Patna-800015, Tel/Fax-0612-2215045
Email : ministrysamajkalyan.bihar@gmail.com

संजय कुमार
मंत्री
गन्ना उद्योग विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

कार्यालय : रूम नं० 70, विकास भवन, न्यू सचिवालय
पटना–800015
दूरभाष : 0612–2215834, फैक्स : 0612–2233120
ई–मेल : sugarcane.minister@gmail.com
मोबाईल : 9304032712 / 9386566600
आवास : 17/20, 20 सेट, डुप्लेक्स बंगला, मंत्री इंक्लेव
गर्दनीबाग, पटना – 800001
दूरभाष : 0612–2240010

पत्रांक 704/एम०　　　　　　　　　　　　　　　　दिनांक 08·07·2026

श्री ब्रजेश मिश्र जी,

आपके पत्र के माध्यम से मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि ***केवल सच,*** राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के 21वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **''देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा'' विशेषांक** का प्रकाशन कर रही है, जिसमें विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को ''क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान–2026'' से सम्मानित किया जा रहा है। इस पुनित अवसर पर **''देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा'' विशेषांक** का विमोचन होगा।

मैं इस शुभअवसर पर श्री ब्रजेश मिश्र, संपादक–सह –प्रबंधकर्त्ता, पूर्वी अशोक नगर, रोड नं०–14, मकान संख्या–14/28, कंकड़बाग, पटना, ***केवल सच,*** राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के इस पुनित अवसर पर 19 जुलाई 2026, स्थान–अधिवेशन भवन, सचिवालय, पटना में **''देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा'' विशेषांक** के विमोचन पर हार्दिक शुभकामना देता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

8/7/2026

(संजय कुमार)

सेवा में,

श्री ब्रजेश मिश्र,
संपादक सह प्रबंधकर्त्ता,
पता– पूर्वी अशोक नगर, रोड नं०–14,
मकान संख्या–14/28, कंकड़बाग, पटना,
बिहार–800020

श्रेयसी सिंह
(अर्जुन पुरस्कार सम्मानित)
(ओलिंपियन)
मंत्री
उद्योग विभाग एवं खेल विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

Shreyasi Singh
(Arjuna Awardee)
(Olympian)
Minister
Dept. of Industries & Dept. of Sports
Govt. of Bihar

पत्रांक: 1235/उ०मं०

दिनांक: 09-07-26

संदेश

यह अपार हर्ष का विषय है कि केवल सच मीडिया एवं श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट के तत्वावधान में प्रतिवर्ष संगठन के स्थापना वर्ष पर किसी न किसी महापुरूष के सम्मान में एक कार्यक्रम आयोजित करता है जिसमें विशेषांक का प्रकाशन भी करता है।

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा 21वीं स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक– 19 जुलाई, 2026 को देश की आजादी के प्रथम शहिद, स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी युवा मंगल पाण्डेय के सम्मान में अधिवेशन भवन, सचिवालय पटना में एक कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान– 2026 से सम्मानित भी किया जायेगा।

मुझे यह जानकर अपार खुशी हुई है कि इस कार्यक्रम के अवसर पर संस्थान द्वारा मंगल पाण्डेय को समर्पित एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। इस स्मारिका का मुख्य उद्देश्य देश के युवाओं को राष्ट्रसेवा और समाज सेवा के लिए प्रेरित करना है।

आशा है कि केवल सच के माध्यम से देश के युवाओं में राष्ट्र प्रेम की भावना प्रबल होगी जिसमें बिहार के युवाओं का अहम योगदान होगा।

मैं संस्थान को इस प्रयास के लिए बधाई देती हूँ एवं इस कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएं देती हूँ।

Shreyasi Singh
(श्रेयसी सिंह)

Dept. of Industries:- 3rd Floor, Vikas Bhawan, New Secretariat, Patna-800015
Dept. of Sports:- Ground Floor, Room No. 46, Vikas Bhawan, New Secretariat, Patna-800015
Phone:- 0612-2215431/2215430 (Industries), 0612-2217967 (Sports)
Email ID:- minister.ind-bih@gov.in, (Industries), minister.sports-bih@gov.in (Sports)
Residence:- 4-Strand Road, Patna, Bihar, Phone:-0612-2910181, Mob: 9999375798, 9955592685
| Instagram : @singhshreyasi | Facebook : @shreyasisinghofficial

ई० कुमार शैलेन्द्र
मंत्री
पथ निर्माण विभाग, बिहार

Er. Kumar Shailendra
Minister
Road Construction Department, Bihar

पत्रांक 1288 दिनांक 06/07/26

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी मासिक पत्रिका **'केवल सच'** दिनांक 19 जुलाई, 2026 को अपने 21वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **''देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा''** का प्रकाशन करने जा रही है। इस अवसर पर विभिन्न सेवा के उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **''क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान-2025''** से सम्मानित किया जायेगा।

'केवल सच' मासिक पत्रिका ने विगत 21 वर्षो से निष्पक्ष एवं निर्भिक रूप से राष्ट्रहित एवं जनहित में समस्याओं से जुड़ी खबरें को पूरी प्राथमिकता से लिखता आ रहा है। इसने अपने समाचारों, लेखों एवं जानकारियों का प्रकाशन कर आम जनता के बीच अपनी एक अलग पहचान बनाई है। भारत के प्रथम शहीद क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय के जीवन एवं बलिदान पर विशेषांक का प्रकाशन एवं सम्मान समारोह का आयोजन प्रशंसनीय कार्य है।

मैं 'केवल सच' मासिक पत्रिका द्वारा प्रकाश्य **''देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा''** के सफल एवं लोकोपयोगी प्रकाशन की मंगलकामना करता हूँ।

04/07/2026

(ई० कुमार शैलेन्द्र)

Office : 7th Floor, Vishweshwaraiya Bhawan, Bailey Road, Patna- 800015
Residence : 152, MLA Flat, Veer Chand Patel Path, Patna- 800001
0612-2547115/2547942 (Office), 7979924526, 9431214583
mla.krshailendra@gmail.com, ministerrcd-bih@gov.in Ershailendrabjp Er Kumar Shailendra

मो० जमा खान
मंत्री
अल्पसंख्यक कल्याण विभाग
बिहार सरकार।
محمد زماں خان
وزیر
محکمہ اقلیتی فلاح و بہبود
حکومت بہار

बिहार सरकार

Md. Zama Khan
Minister
Minority Welfare Dept.
Govt. of Bihar
दूरभाष : (का.) 0612–2210478 (फैक्स)
मोबाईल : 9470662786

पत्रांक : 474/m

दिनांक : 07.07.26

प्रिय ब्रजेश जी,

अत्यंत हर्ष एवं प्रसन्नता की बात है कि **"केवल सच"** हिन्दी मासिक पत्रिका के द्वारा बिहार राज्य के विकास को दृष्टिगत रखते हुए अपने स्थापना के 21वें वर्ष के सुअवसर पर **"देश की आजादी एवं क्रांतीकरी युवा"** विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है, जो अत्यंत ही सराहनीय एवं सार्थक कदम है। साथ ही इस अवसर पर विभिन्न सेवा में उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को सम्मानित भी किया जाएगा। विश्वास है कि इसके माध्यम से समस्त बिहार की प्राचीन गौरवशाली संस्कृति के अनछुए पहलुओं को सजोने तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृतिक समरसता के संवर्द्धन में इसकी उपादेयता महत्वपूर्ण साबित होगी एवं **क्रांतीकरी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान–2026** समारोह करने जा रहे हैं, जो काफी सराहनीय है।

एक बार पुनः इस आयोजन में शामिल सभी कार्यक्रमों के सफल आयोजन के साथ ही प्रकाशित होने वाली विशेषांक के लिए अपनी हार्दिक शुभकामना प्रकट करता हूँ।

आपका

Md. Zama Khan
(मो० जमा खान)

सेवा में,

श्री ब्रजेश मिश्र
संपादक सह प्रबंधकर्ता,
पूर्वी अशोक नगर,
रोड नं०–14 मकान संख्या–14/28
कंकड़बाग, पटना–800020 (बिहार)
मोबाईल संख्या–9431073769, 8340360961

आवास : 16/6, बेली रोड, पटना, ई–मेल : min-welfare-bih@nic.in

डॉ0 संतोष कुमार सुमन
Dr. Santosh Kumar Suman

बिहार सरकार

मंत्री
लघु जल संसाधन विभाग,
बिहार सरकार
Minister
Minor Water Resource Department,
Govt. of Bihar

पत्रांक : ....

दिनांक : 12.07.2026..

संदेश

भारत की प्रथम स्वतंत्रता चेतना के अग्रदूत, अमर क्रांतिकारी **वीर शहीद मंगल पाण्डेय** के जन्मोत्सव के पावन अवसर पर केवल सच हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा प्रकाशित हो रहे **''देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा''** विशेषांक के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

वीर मंगल पाण्डेय ने अपने अदम्य साहस, राष्ट्रभक्ति और बलिदान से अंग्रेजों के शासन के विरूद्ध स्वतंत्रता की अलख जगाई है । उनका त्याग, स्वाभिमान और देशप्रेम आज भी प्रत्येक भारतीय को राष्ट्रहित में समर्पित होकर कार्य करने की प्रेरणा देता है ।

यह विशेषांक शहीद मंगल पाण्डेय के व्यक्तित्व, कृतित्व और बलिदान को जन-जन तक पहुँचाने तथा नई पीढ़ी में राष्ट्रप्रेम, स्वाभिमान और कर्तव्यबोध की भावना जागृत करने का एक सार्थक प्रयास है । मुझे विश्वास है कि यह प्रकाशन पाठकों के लिए प्रेरणास्त्रोत सिद्ध होगा ।

इस पुनीत प्रयास के लिए केवल सच के संपादक सह प्रबंधकर्त्ता श्री ब्रजेश मिश्र एवं सभी लेखकों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ । मेरी कामना है कि यह विशेषांक व्यापक रूप से सफल हो तथा वीर मंगल पाण्डेय के अमर संदेश को समाज के प्रत्येक वर्ग (विशेष करके गरीब-वंचित वर्ग) तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए ।

शुभकामानाओं के साथ !

(डॉ० संतोष कुमार सुमन)

पता:- कार्यालय:- कमरा नं0-334, विकास भवन (न्यू सचिवालय), तीसरा तल्ला, बेली रोड, पटना, बिहार-800015
आवास : 25-एम.स्ट्रंण्ड रोड, बिहार, पटना, दूरभाष संख्या :- 0612-2547405(का०), 0612-2233048 (आ०), Email ID:-minmwrd44@gmail.com

विजय कुमार सिन्हा
मंत्री
कृषि विभाग, बिहार सरकार

बिहार सरकार

Vijay Kumar Sinha
MINISTER
Agriculture Department
Government of Bihar

पत्रांक: ....470..........

दिनांक : ..14-07-2026..

।। शुभकामना संदेश।।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि केवल सच हिन्दी मासिक पत्रिका के 21वें वर्ष के अवसर पर दिनांक 19 जुलाई 2026 को "देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा विशेषांक" का प्रकाशन किया जा रहा है तथा उक्त अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट करने वाले कर्मयोगियो को "क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान–2026" से सम्मानित किया जायेगा जो अत्यंत ही सराहनीय कार्य है।

केवल सच पत्रिका के आयोजक मंडल समय–समय पर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से युवा पीढ़ी में राष्ट्रीयता का भाव जगाते हुए भारत के गौरवशाली व्यक्तित्व एवं इतिहास को याद कराकर एवं उनमें नई ऊर्जा का संचार भरकर पत्रकारिता जगत के स्वस्थ परम्परा का सम्यक् निर्वहन कर रही है।

मैं प्रकाश्य स्मारिका के लोकोपयोगी प्रकाशन एवं कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु आयोजक मंडल एवं प्रकाशन मंडल को हृदय से बधाई देता हूँ।

विजय कुमार सिन्हा
(विजय कुमार सिन्हा)

कार्यालय : विकास भवन, न्यू सचिवालय, बेली रोड, पटना–800015 Vikas Bhawan, New Secretariat, Bailey Road, Patna- 800015
कृषि भवन, मीठापुर, पटना–800001 Krishi Bhawan, Mithapur, Patna-800001
दूरभाष : 0612–2231212 (विकास भवन) 0612–2217102 (कृषि भवन)
आवास – 3, स्ट्रैण्ड रोड, पटना, दूरभाष : 0612–2999102
ई–मेल : agri.ministerbihar@gmail.com

अशोक चौधरी
मंत्री
खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

☎: 0612-2217819 (का.)
0612-2217234 (आ.)
✆: +91 9386594300
आवास : 2, पोलो रोड, पटना

पत्रांक : 118/आ०

दिनांक : 15/7/26

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि "केवल सच मासिक पत्रिका" द्वारा दिनांकः– 19.07.2026 को **"देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा"** कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

विभिन्न सेवाओं के द्वारा सराहनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को "क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय केवल सच सम्मान–2026" से भी सम्मानित किया जायेगा। इस अवसर पर "केवल सच विशेषांक" भी प्रकाशित किया जा रहा है।

यह विशेषांक समाज में प्रेरणा, जागरूकता और सद्भाव का संदेश फैलाने में अवश्य सफल होगा–इसी विश्वास के साथ मैं सम्पादकीय टीम एवं पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(अशोक चौधरी)

कार्यालय : पुराना सचिवालय, पटना - 800015
foodministerbihar@gmail.com | @AshokChoudhaary

सरयू राय
सदस्य
झारखण्ड विधान सभा
सभापति
प्रत्यायुक्त विधान समिति

आवास :
● एफ टाईप, आवास सं०-1, ए.जी. मोड़, डोरण्डा, राँची - 834002
मोबाईल नं. : 9431114466
ई-मेल : saryuroyoffice@gmail.com
वेबसाईट : www.saryuroy.in

पत्रांक 471/SSR/26

दिनांक : 28/06/2026

–: शुभकामना संदेश :–

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय हिंदी मासिक प्रत्रिका 'केवल सच' का 21वां स्थापना दिवस का आयोजन महान क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय के जन्मदिन के उपलक्ष्य पर दिनांक 19 जुलाई, 2026 को किया जा रहा है। इस अवसर पर "देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा" विषय पर एक विशेषांक का प्रकाशन करने के साथ ही विभिन्न सेवा में उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को "क्रांतिकारी मंगल पांडेय केवल सच सम्मान–2026" से सम्मानित करने का कार्यक्रम भी आयोजित हो रहा है जो सराहनीय है।

भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले अमर क्रांतिकारियों का त्याग, साहस और राष्ट्रप्रेम आज भी हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। विशेष रूप से अमर शहीद मंगल पांडेय का अद्वितीय बलिदान सदैव देशवासियों के हृदय में राष्ट्रभक्ति की ज्योति प्रज्ज्वलित करता रहेगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक एक संग्रहणीय दस्तावेज साबित होगा और युवाओं में देशभक्ति, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा राष्ट्र निर्माण के प्रति नई चेतना का संचार करेगा तथा स्वतंत्रता सेनानियों के आदर्शों को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

मैं, हिंदी विशेषांक "देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा" के भव्य प्रकाशन की कामना करता हूँ और इस प्रेरणादायी पहल के लिए "केवल सच" परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करना हूँ।

सरयू राय

अर्जुन मुंडा
ARJUN MUNDA

सत्यमेव जयते

पूर्व केंद्रीय मंत्री, भारत सरकार एवं
पूर्व मुख्यमंत्री, झारखण्ड
Former Cabinet Minister, GOI &
Former Chief Minister, Jharkhand
Tele No.-0651-2360060
E-mail : arjunmundapr@gmail.com

दिनांक: 29/06/2026

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष का अनुभव हुआ कि राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका "केवल सत्य" अपने 21 वें स्थापना दिवस के अवसर पर अमर क्रांतिकारी शहीद मंगल पांडेय की जयंती के उपलक्ष्य में दिनांक 19 जुलाई, 2026 को "देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा" विषय पर विशेषांक का प्रकाशन एवं सम्मान समारोह का आयोजन कर रही है। समाज और राष्ट्र के प्रति उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्तित्वों को **क्रांतिकारी मंगल पांडेय केवल सत्य सम्मान-2026** से सम्मानित करने की यह पहल निस्संदेह प्रेरणादायी एवं प्रशंसनीय है।

भारत का स्वतंत्रता संग्राम असंख्य वीर सपूतों के अदम्य साहस, त्याग और बलिदान का अमर इतिहास है। शहीद मंगल पांडेय ने अपने अद्वितीय पराक्रम और राष्ट्रभक्ति से स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा प्रदान की। उनका जीवन आज भी युवाओं को देशप्रेम, आत्मसम्मान, कर्तव्यनिष्ठा तथा राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने की प्रेरणा देता है।

मेरा विश्वास है कि यह विशेषांक स्वतंत्रता आंदोलन के गौरवपूर्ण इतिहास को नई पीढ़ी तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने के साथ-साथ युवाओं में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पण की भावना को और अधिक सशक्त करेगा। ऐसे प्रयास हमारी सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय विरासत को संरक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मैं देश की 'आजादी एवं क्रांतिकारी युवा' विषय पर प्रकाशित होने वाले इस विशेषांक तथा आयोजित सम्मान समारोह की पूर्ण सफलता की हार्दिक कामना करता हूँ। इस प्रेरक एवं राष्ट्रहितकारी पहल के लिए **'केवल सत्य'** परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

सादर,

(अर्जुन मुंडा)

अमर कुमार बाउरी

पूर्व नेता प्रतिपक्ष

झारखण्ड विधान सभा, राँची।

आवास :
चन्दनकियारी, ब्लॉक रोड,
बोकारो (झारखण्ड)
मोबाईल : 7759907386
ई–मेल : akbauri@gmail.com

पत्रांक : RNCREC/EXLoP/0059

दिनांक : 28.06.2026

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत ही प्रसन्नता का विषय है कि राष्ट्रीय हिंदी मासिक प्रत्रिका 'केवल सच का 21वां स्थापना दिवस का आयोजन महान क्रांतिकारी मंगल पाण्डेय के जयंती के अवसर पर दिनांक 19 जुलाई, 2026 को किया जा रहा है। इस अवसर पर "देश की आजादी एवं क्रांतिकारी युवा" विषय पर एक विशेषांक का प्रकाशन करने के साथ ही विभिन्न सेवा में उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को "क्रांतिकारी मंगल पांडेय केवल सच सम्मान-2026" से सम्मानित करने का कार्यक्रम भी आयोजित हो रहा है जो सराहनीय है।

अमर शहीद मंगल पांडेय भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) के महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता के अग्रदूत थे। अंग्रेजों द्वारा भारतीय सैनिकों के साथ किए जा रहे अन्याय और धार्मिक भावनाओं के अपमान के विरुद्ध उन्होंने 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी में विद्रोह का बिगुल फूंका। उनके साहस और बलिदान ने पूरे देश में स्वतंत्रता की ज्वाला प्रज्वलित कर दी, जिसने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का रूप लिया। उनका बलिदान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रेरणा का अमर स्रोत बन गया। मंगल पांडेय का नाम आज भी देशभक्ति, साहस और मातृभूमि के प्रति समर्पण का प्रतीक माना जाता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक आज के ज्ञान-विज्ञान के युग में हमारी संस्कृति, सभ्यता और राष्ट्रीय पहचान का सशक्त माध्यम बनेगा। यह पत्रिका विचारों, रचनात्मकता और ज्ञान के आदान-प्रदान का एक उत्कृष्ट मंच है। यह विद्यार्थियों में साहित्यिक अभिरुचि, सृजनात्मकता और अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करती है।

मैं पत्रिका से जुड़े सभी संपादकों, लेखकों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। विश्वास है कि यह पत्रिका अपने उत्कृष्ट लेखों, कविताओं, कहानियों एवं प्रेरक सामग्री के माध्यम से पाठकों का मार्गदर्शन करेगी तथा उन्हें नई सोच और सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करेगी।

मेरी ओर से पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

"ज्ञान, संस्कार और सृजनशीलता की यह यात्रा निरंतर आगे बढ़ती रहे।"

एक कदम स्वच्छता की ओर...

Facebook :- amarbauriofficial

Twitter (X) :- amarbauri

केवल सच
राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
21 वें
स्थापना वर्ष
की हार्दिक
शुभकामनाएं
केवल सच
पत्रकारिता के
क्षेत्र में निष्पक्ष,
बेबाक और बिना भय के
खबरों को प्रकाशित
करने वाला
"आपकी निडर, निष्पक्ष और जिम्मेदार पत्रकारिता
समाज और राष्ट्र के लिए प्रेरणास्रोत है।
इसी सत्यानिष्ठा और जनहित के मार्ग पर
आप निरंतर अग्रसर रहें।
इसी शुभेच्छा के साथ..."
निवेदक
चंद्र प्रकाश सिंह
(राष्ट्रीय संगठन मंत्री,
राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (INTUC)

देश की आज़ादी एवं क्रांतिकारी युवा

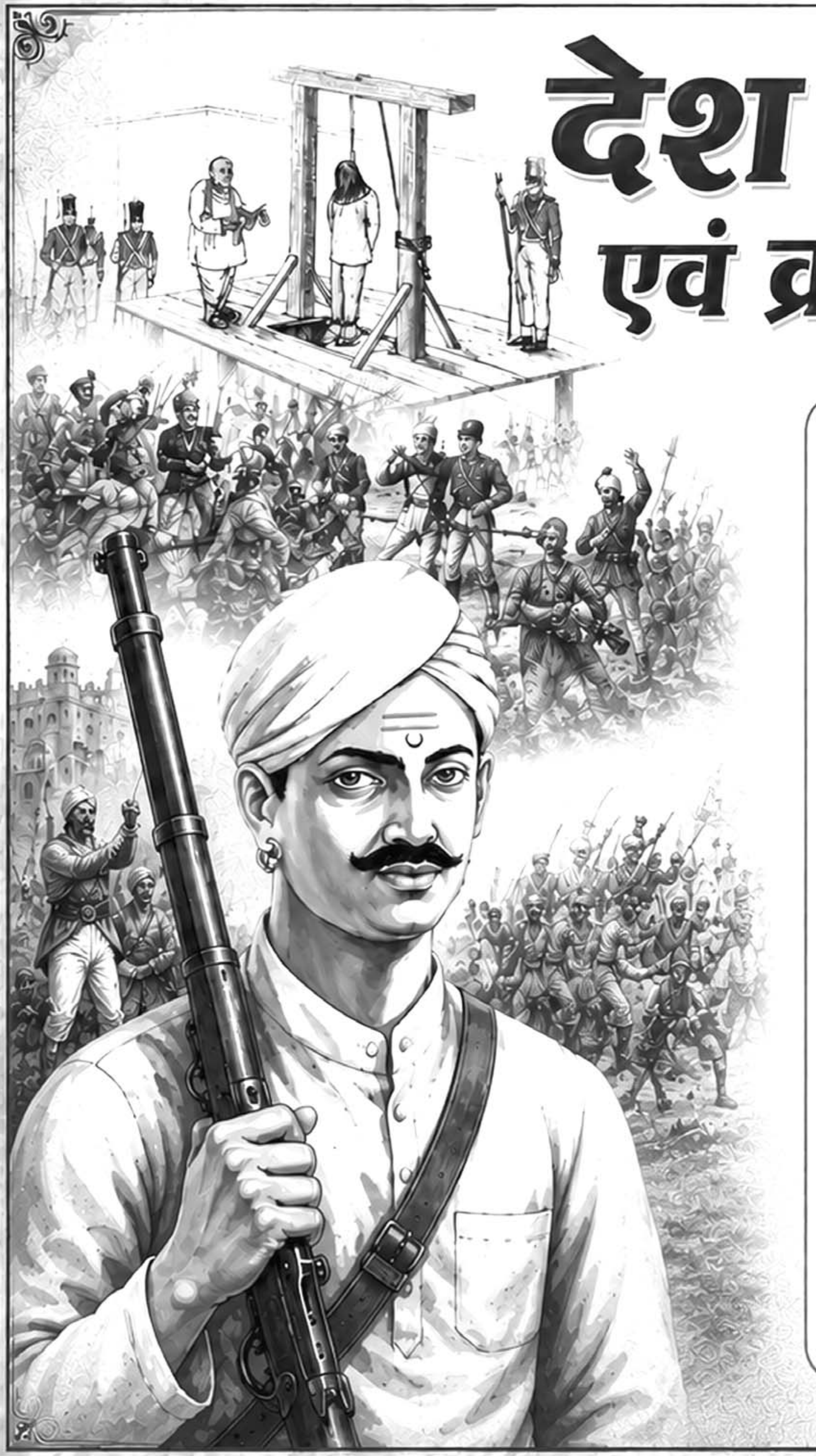

स्वतंत्रता की चाह अब अपने प्रचंड रूप में प्रज्ज्वलित हो चुकी थी। वह वर्ष भारत के इतिहास में एक नया अध्याय लिखने के लिए व्यग्र था। वर्ष 1857 कई नायकों को जन्म देने वाला था। परन्तु उस वर्ष भारत के मानचित्र पर एक ऐसी घटना घटित होने वाली थी, जो युगों युगों तक स्वतंत्रता की लौ जलाए रखने वाली थी और साथ ही वह वर्ष नायकों के साथ की जाने वाले कायरता का भी वर्ष था। 8 अप्रैल 1857 भी ऐसी ही तिथियों में से एक तिथि थी, जो इतिहास में दर्ज होने वाली थीं। परन्तु आरम्भ कहीं और से था। गुलामी की बेड़ियों से भारत को आजादी दिलाने के लिए हमारे देश के कई वीर सपूतों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है। स्वतंत्रा संग्राम के लिए कई सालों तक लड़ाई चली और उसके बाद 15 अगस्त 1947 को भारत को अंग्रेजों की गुलामी से स्वतंत्रा मिली। बहरहाल, स्वतंत्रता संग्राम की बात हो और अमर जवान मंगल पांडे का जिक्र ना हो, ऐसा संभव नहीं। मंगल पांडे भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत थे। उनके द्वारा भड़काई गई क्रांति की ज्वाला से अंग्रेज शासन बुरी तरह हिल गया था। हालाँकि अंग्रेजों ने इस क्रांति को दबा दिया पर मंगल पांडे की शहादत ने देश में जो क्रांति के बीज बोए उसने अंग्रेजी हुकुमत को 100 साल के अन्दर ही भारत से उखाड़ फेका। भारत में स्वतंत्रा का पहला बिगुल बजाने वाले मंगल पांडेय ने साल 1857 में हुए सैनिक विद्रोह को अंजाम दिया था। इसके बाद पूरे देश में स्वतंत्रता के लिए लोगों में आक्रोश जागा और ऐसे शुरू हुआ था भारत का स्वाधीनता संग्राम.....! 19 जुलाई को वीर शहीद, स्वाधीनता संग्राम के पुरोधा मंगल पांडे जी की जयंती पर केवल सच पत्रिका इनके प्रारंभिक जीवन से संघर्ष क्रांति तक के घटनाओं को विशेषांक के तौरपर प्रकाशित कर रही है, जिसे पत्रिका के संयुक्त संपादक अमित कुमार ने विभिन्न स्त्रोतों से तैयार किया है, प्रस्तुत है :-

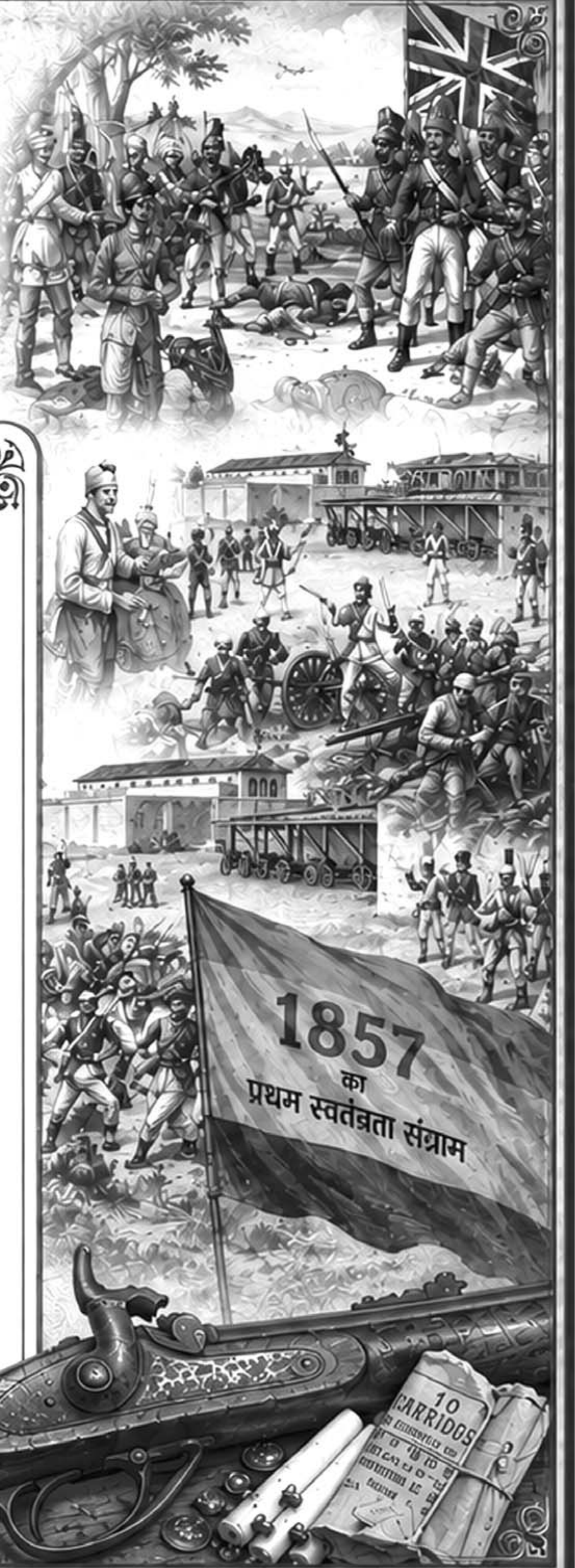

19 जुलाई 1827 में पैदा होने वाले मंगल पांडे का जीवन भले ही बहुत छोटा था, लेकिन उनकी कीर्ति इतनी बड़ी है कि आज भी लोग स्वतंत्रता सेनानियों में मंगल पांडे का नाम बड़ी श्रद्धा और आदर के साथ लेते हैं। मंगल पांडे की ख्याति प्रथम भारतीय स्वतंत्रता सेनानी के रूप में है। भारत में बाद में भले ही अनेक स्वतंत्रता सेनानी आए तथा जोरदार तरीके से अंग्रेजों का विरोध भी किया, कुछ हिंसा के पद से तथा कुछ अहिंसा के बल से अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन किया, पर इस बगावत की चिंगारी को मंगल पांडे ने जलाया जो 90 साल में पूरी तरह से दावानल के रूप में परिवर्तित हो गया तथा जिस आग ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए बाध्य किया। जिस तरह नन्ही सी चींटी मदमस्त हाथी को धाराशाही कर सकती है, छोटी सी चिंगारी दावानल का रूप धारण कर पूरे वन को भस्मीभूत कर सकती है लगभग वैसा ही काम देश के प्रथम क्रान्तिकारी मंगल पांडे की गोली ने किया, जिसने ब्रिटिश इंडिया कंपनी के सैनिक अधिकारियों को धाराशाही कर पूरे देश में स्वतंत्रता की ऐसी मशाल जलाई जिसने नब्बे साल के कालखण्ड में ही उस बर्तानवी साम्राज्य का मानमर्दन कर डाला, जिसका सूरज कभी अस्त नहीं होता था। मंगल पांडे ने 1857 में जो साहस दिखाया, वह किसी चमत्कार से कम नहीं था। एक ऐसे समय में जब संपूर्ण आर्यावर्त विदेशी

मुख्य घटनाओं की समयरेखा

वर्ष/तारीख	घटना
19 जुलाई 1827	नगवा (उत्तर प्रदेश) में जन्म
1830	अकाल में बहन की मृत्यु
1849	34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री में भर्ती
1856	अवध का विलय, असंतोष बढ़ा
26 फरवरी 1857	बहारामपुर घटना
29 मार्च 1857	बैरकपुर विद्रोह की शुरुआत
6 अप्रैल 1857	मुकदमा और फाँसी का आदेश
8 अप्रैल 1857	मंगल पांडे को फाँसी दी गई
6 मई 1857	34वीं बटालियन भंग
10 मई 1857	मेरठ से विद्रोह की शुरुआत

शासन के नीचे दबा हुआ था, उन्होंने अकेले खड़े होकर उस व्यवस्था को झकझोरा। उनके बलिदान ने देश की चेतना को ऐसा जगाया कि फिर भारत कभी चैन से नहीं बैठा, जब तक कि अंतिम अंग्रेज यहाँ से चला नहीं गया। मंगल पांडेय मात्र एक नाम नहीं, अपितु भारतीय शौर्य की पराकाष्ठा हैं।

भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के अग्रदूत मंगल पांडे का जन्म 19 जुलाई, 1827 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में नगवा नामक गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम 'दिवाकर पांडे' तथा माता का नाम 'अभय रानी' था। उनका पालन-पोषण एक अत्यंत धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध वातावरण में हुआ। ब्रिटिश शासन की सामाजिक परिस्थितियों और आर्थिक कठिनाइयों ने उनके समय के कई युवाओं को सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। मंगल पांडे की शिक्षा के बारे में सीमित रिकॉर्ड उपलब्ध हैं। उस दौर में ग्रामीण पृष्ठभूमि के कई युवाओं की तरह, उन्होंने संभवतः धर्म और संस्कृति से संबंधित बुनियादी पारंपरिक शिक्षा प्राप्त की होगी। वह बचपन से ही शारीरिक रूप से मजबूत और अनुशासित थे। मंगल पांडे के बचपन में उनकी गहरी दोस्ती नक्की खान, गाँव के मौलवी के बेटे से थी। दोनों साथ खेलते, मेले घूमते और एक-दूसरे के घर जाते थे। पांडे परिवार में मुसलमान मेहमान आते थे और अलग बर्तनों में खाना खाते थे, जबकि पांडे परिवार मुस्लिम मेलों और दरगाहों में जाता था। यह मेलजोल उस समय के अवध की धार्मिक सह-अस्तित्व वाली संस्कृति को दर्शाता है, जब हिंदू और मुसलमानों के बीच आत्मीयता थी, जिसे बाद में अंग्रेजी नीतियों ने तोड़ने की कोशिश की। एक कम ज्ञात प्रसंग के अनुसार, एक मेले में एक अंग्रेज अफसर का घोड़ा नक्की खान को कुचलने वाला था। जब उसके पिता ने विरोध किया, तो अफसर ने उन्हें डंडे से पीट दिया, जबकि दिवाकर पांडे माफी और मुआवजे की पेशकश कर रहे थे। इस अपमानजनक घटना ने बालक मंगल के मन में अंग्रेजों की क्रूरता की पहली छवि अंकित की, एक ऐसी याद जिसने शायद उनके विद्रोही स्वभाव की नींव रखी। उन्हें सैन्य सेवा में रुचि विकसित हुई और उन्होंने 1849 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में भर्ती हो गए। चुँकि वह परेड बहुत अच्छा करते थे इसीलिए उन्हें पैदल सेना में सिपाही नंबर 1446 बनाया गया। इन सेना में अधिकतर ब्राह्मण ही भर्ती हुआ करते थे। वह अपने कार्य को पूरी लगन व निष्ठा से करते थे। इसके साथ ही वे काफी महत्वाकांक्षी भी थे और कुछ अलग करने, का जज्बा रखते थे। उनकी परवरिश ने उनके मजबूत धार्मिक विश्वासों को आकार दिया, जिसने बाद में ब्रिटिश नीतियों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को प्रभावित

किया। वे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री में कार्यरत थे। उनका जीवन धार्मिक परंपराओं और आत्मसम्मान से गहराई से जुड़ा था। उनका बचपन उस समय बीता जब अंग्रेजों की नीतियों से किसानों पर अत्याचार बढ़ रहे थे। 1830 के अकाल में उनकी बहन की मृत्यु ने उनके मन पर गहरा असर छोड़ा, जिससे उनमें अन्याय और पीड़ा के प्रति संवेदनशीलता बढ़ी। इन्हीं अनुभवों ने उनके भीतर धर्म और सम्मान की रक्षा के लिए लड़ने का साहस पैदा किया। अंग्रेजी रिकॉर्ड बताते हैं कि विद्रोह से पहले मंगल पांडे ने भांग और अफीम का सेवन शुरू किया था, जो पहले उनकी आदत नहीं थी। मुकदमे में उन्होंने स्वीकार किया कि उस दिन वे नशे में थे, पर इससे पहले उन्होंने कभी नशा नहीं किया था। ब्रिटिश अफसरों ने इसी आधार पर उन्हें "नशे में पागल" कहकर प्रस्तुत किया, ताकि उनके विद्रोह को राजनीतिक नहीं मानसिक उबाल बताया जा सके। यह ब्रिटिशों की सामान्य चाल थी–भारतीय प्रतिरोध को 'उन्माद' या 'पागलपन' का रूप देना।

-: मंगल पांडे के बारे में रोचक तथ्य :-

- ☞ उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री में सेवा की।
- ☞ उनका विद्रोह कोलकाता के पास बैरकपुर में हुआ था।
- ☞ उनकी फांसी के कुछ ही हफ्तों बाद 1857 का विद्रोह शुरू हुआ।
- ☞ उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम के पहले शहीदों में से एक माना जाता है।
- ☞ उनके जीवन को 1857 के विद्रोह पर आधारित पुस्तकों और फिल्मों में चित्रित किया गया है।
- ☞ इतिहास में उनका नाम वीरता और प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में याद किया जाता है।

वे बैरकपुर की सैनिक छावनी में '34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री' (BNI) की 6वीं कंपनी में पैदल सेना के सिपाही थे। मार्च 1857 म` ` बैरकपुर में ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ उनका विद्रोह उत्तर भारत में व्यापक विद्रोह का आधार बनने वाले शुरुआती प्रतिरोधों में से एक माना जाता है। मंगल पांडे की जीवनी स्कूलों और प्रतियोगी परीक्षाओं में पढ़ाई जाती है क्योंकि उनके कार्यों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मोड़ का काम किया। मंगल पांडे का प्रारंभिक जीवन ब्रिटिश शासन के अधीन ग्रामीण भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को दर्शाता है। सन् 1857 की क्रांति के दौरान मंगल पाण्डेय ने एक ऐसे विद्रोह को जन्म दिया जो जंगल में आग की तरह सम्पूर्ण उत्तर भारत और देश के दूसरे भागों में भी फैल गया। यह भले ही भारत के स्वाधीनता का प्रथम संग्राम न रहा हो पर यह क्रांति निरंतर आगे बढ़ती गयी। अंग्रेजी हुकुमत ने उन्हें गद्दार और विद्रोही की संज्ञा दी, पर मंगल पांडे प्रत्येक भारतीय के लिए एक महानायक हैं। भारत माता को गुलामी की जंजीरों से आजाद कराने के लिए सही मायने में तो बिगुल मंगल पांडे ने ही फूंका था, उनके बलिदान को ये देश कभी नहीं भूला सकता है। सन् 1857 के विद्रोह के पश्चात् अंग्रेजों के बीच 'पैंडी' शब्द बहुत प्रचलित हुआ, जिसका अभिप्राय था गद्दार या विद्रोही।

1857 का भारतीय विद्रोह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ 1857–58 में भारत में एक बड़ा विद्रोह था, जो ब्रिटिश ताज की ओर से एक संप्रभु शक्ति के रूप में कार्य करता था। विद्रोह 10 मई 1857 को दिल्ली से 40 मील (64 किमी) उत्तर-पूर्व में मेरठ के गैरीसन शहर में कंपनी की सेना के सिपाहियों के विद्रोह के रूप में शुरू हुआ। इसके बाद यह मुख्य रूप से ऊपरी गंगा के मैदान और मध्य भारत में अन्य विद्रोहों और नागरिक विद्रोहों में बदल गया, हालांकि विद्रोह की घटनाएं उत्तर और पूर्व में भी हुईं। विद्रोह ने उस क्षेत्र में ब्रिटिश सत्ता के लिए एक सैन्य खतरा पैदा कर दिया।

सन् 1857 के विद्रोह के विभिन्न राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक,

लॉर्ड डलहौजी

सैनिक तथा सामाजिक कारण बताये जाते हैं। कई इतिहासकारों का मानना है कि उस समय के जनमानस में यह धारणा थी कि अंग्रेज उन्हें जबर्दस्ती या धोखे से ईसाई बनाना चाहते हैं। यह पूरी तरह से गलत भी नहीं था, कुछ कंपनी अधिकारी धर्म परिवर्तन के कार्य में जुटे थे। हालांकि कंपनी ने धर्म परिवर्तन को स्वीकृति कभी नहीं दी। कंपनी इस बात से अवगत थी कि धर्म, पारम्परिक भारतीय समाज में विद्रोह का एक कारण बन सकता है। इससे पहले 16वीं सदी में भारत तथा जापान से पुर्तगालियों के पतन का एक कारण यह भी था कि उन्होंने जनता पर ईसाई धर्म बलात लादने का प्रयास किया था। लॉर्ड डलहौजी की राज्य हड़पने की नीति (डाक्ट्रिन औफ लैप्स) के अन्तर्गत अनेक राज्य जैसे झाँसी, अवध, सतारा, नागपुर और संबलपुर को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया और इनके उत्तराधिकारी राजा से अंग्रेजी राज्य से पेंशन पाने वाले कर्मचारी बन गये। शाही घराने, जमींदार और सेनाओं ने अपने आप को बेरोजगार और अधिकारहीन पाया। ये लोग अंग्रेजों के हाथों अपनी शर्मिंदगी और हार का बदला लेने के लिये तैयार थे। लॉर्ड डलहौजी के शासन के आठ वर्षों में दस लाख वर्गमील क्षेत्र को कंपनी के अधिकार में ले लिया गया। इसके अतिरिक्त ईस्ट इंडिया कंपनी की बंगाल सेना में बहुत से सिपाही अवध से भर्ती होते थे, वे अवध में होने वाली घटनाओं से अछूते नहीं रह सके। नागपुर के शाही घराने के आभूषणों की कलकत्ता में बोली लगायी गयी, इस घटना को शाही परिवार के प्रति अनादर के रूप में देखा गया।

भारतीय, कंपनी के कठोर शासन से भी नाराज थे, जो कि तेजी से फैल रहा था और पश्चिमी सभ्यता का प्रसार कर रहा था। अंग्रेजों ने हिन्दुओं और मुसलमानों के उस समय माने जाने वाले बहुत से रिवाजों को गैरकानूनी घोषित कर दिया जो कि अंग्रेजों द्वारा असमाजिक माने जाते थे। इसमें सती प्रथा पर रोक लगाना शामिल था। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि सिखों ने यह बहुत पहले ही बंद कर दिया था और बंगाल के प्रसिद्ध समाज सुधारक राजा राममोहन राय इस प्रथा को बंद करने के पक्ष में प्रचार कर रहे थे। इन कानूनों ने समाज के कुछ पक्षों मुख्यत: बंगाल में क्रोध उत्पन्न कर दिया। अंग्रेजों ने बाल विवाह प्रथा को समाप्त किया तथा कन्या भ्रूण हत्या पर भी रोक लगायी। अंग्रेजों द्वारा ठगी की समाप्ति भी की गई परन्तु यह सन्देह अभी भी बना हुआ है कि ठग एक धार्मिक समुदाय था या केवल साधारण डकैतों का समुदाय।

ब्रितानी न्याय व्यवस्था भारतीयों के लिये अन्यायपूर्ण मानी जाती थी। सन 1853 में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लौर्ड अब्रेडीन ने प्रशासनिक सेवा को भारतीयों के लिये खोल दिया परन्तु कुछ प्रबुद्ध भारतीयों के हिसाब से यह सुधार पर्याप्त नहीं था। कंपनी के अधिकारियों को भारतीयों के विरुद्ध न्यायालयों में अनेक अपीलों का अधिकार प्राप्त था। कंपनी भारतीयों पर भारी कर भी लगाती थी जिसे न चुकाने की स्थिति में उनकी संपत्ति अधिग्रहित कर ली जाती थी। कंपनी के आधुनिकीकरण के प्रयासों को पारम्परिक भारतीय समाज में सन्देह की दृष्टि से देखा गया। लोगो ने माना कि रेलवे जो बॉम्बे से सर्वप्रथम चला एक दानव है और लोगो पर विपत्ति लायेगा। परन्तु बहुत से इतिहासकारों का यह भी मानना है कि इन सुधारों को बढ़ा चढ़ाकर बताया गया है, क्योंकि कंपनी के पास इन सुधारों को लागू करने के साधन नहीं थे और कलकत्ता से दूर उनका प्रभाव नगण्य था।

1857 के विद्रोह का एक प्रमुख कारण कंपनी द्वारा भारतीयों का आर्थिक शोषण भी था। कंपनी की नीतियों ने भारत की पारम्परिक अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से समाप्त कर दिया था। इन नीतियों के कारण बहुत से किसान, कारीगर, श्रमिक और कलाकार कंगाल हो गये। इनके साथ-साथ जमींदारों और बड़े किसानों की स्थिति भी बदतर हो गयी। सन् 1813 में कंपनी ने एक तरफा मुक्त व्यापार की नीति अपना ली। इसके अन्तर्गत ब्रितानी व्यापारियों को आयात करने की पूरी छूट मिल गयी। परम्परागत तकनीक से बनी हुई भारतीय वस्तुएं इसके सामने टिक नहीं सकी और भारतीय शहरी हस्तशिल्प व्यापार को अकल्पनीय क्षति हुई। रेल सेवा के आने के साथ ग्रामीण क्षेत्र के लघु उद्यम भी नष्ट हो गये। रेल सेवा ने ब्रितानी व्यापारियों को दूर दराज के गावों तक पहुँच दे दी। सबसे अधिक क्षति कपड़ा उद्योग (कपास और रेशम) को हुई। इसके साथ लोहा व्यापार, बर्तन, कांच, कागज, धातु, बन्दूक, जहाज और रंगरेजी के उद्योगों को भी बहुत क्षति हुई। 18वीं और 19वीं शताब्दी में ब्रिटेन और यूरोप में आयात कर और अनेक रोकों के चलते भारतीय निर्यात समाप्त हो गया। पारम्परिक उद्योगों के नष्ट होने और साथ-साथ आधुनिक उद्योगों का विकास न होने

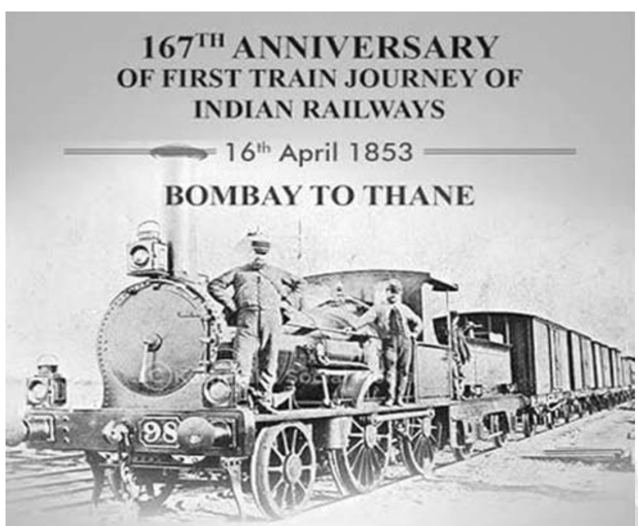

के कारण यह स्थिति और भी विषम हो गयी। साधारण जनता के पास खेती के अलावा कोई और साधन नहीं बचा। खेती करने वाले किसानो की हालत भी खराब थी। ब्रितानी शासन के प्रारम्भ में किसानों को जमीदारों की दया पर छोड़ दिया गया, जिन्होने लगान को बहुत बढ़ा दिया और बेगार तथा अन्य तरीकों से किसानो का शोषण करना प्रारम्भ कर दिया। कंपनी ने खेती के सुधार पर बहुत कम खर्च किया और अधिकतर लगान कंपनी के खर्चो को पूरा करने में प्रयोग होता था। फसल के खराब होने की दशा में किसानो को साहूकार अधिक ब्याज पर कर्जा देते थे और अनपढ़ किसानो को कई तरीकों से ठगते थे। ब्रितानी कानून व्यवस्था के अन्तर्गत भूमि हस्तांतरण वैध हो जाने के कारण किसानों को अपनी भूमि से भी हाथ धोना पड़ता था। इन समस्याओं के कारण समाज के हर वर्ग में असंतोष व्याप्त था।

सन् 1848 और 1858 के बीच लार्ड डलहोजी ने 'डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स' के कानून के अन्तर्गत अनेक राज्यों पर अधिकार कर लिया। इस सिद्धांत के अनुसार कोई राज्य, क्षेत्र या ब्रितानी प्रभाव का क्षेत्र कंपनी के अधीन हो जायेगा, यदि क्षेत्र का राजा निसन्तान मर जाता है या शासक कंपनी की दृष्टि में अयोग्य साबित होता है। इस सिद्धांत पर कार्य करते हुए लार्ड डलहोजी और उसके उत्तराधिकारी लार्ड कैन्निग ने सतारा, नागपुर, झाँसी, अवध को कंपनी के शासन में मिला लिया। कंपनी द्वारा तोड़ी गयी सन्धियों और वादों के कारण कंपनी की राजनैतिक विश्वसनियता पर भी प्रश्नचिन्ह् लग चुका था। सन् 1841 में लार्ड डलहोजी की घोषणा के अनुसार बहादुर शाह के उत्तराधिकारी को ऐतिहासिक लाल किला छोड़ना पडेगा और शहर के बाहर जाना होगा और सन 1856 में लार्ड कैन्निग ने घोषणा की कि बहादुर शाह के उत्तराधिकारी राजा नहीं कहलायेंगे ने मुगलों को कंपनी के विद्रोह में खड़ा कर दिया।

सिपाही मूलत: कंपनी की बंगाल सेना में काम करने वाले भारतीय मूल के सैनिक थे। बम्बई, मद्रास और बंगाल प्रेसीडेन्सी की अपनी अलग सेना और सेना प्रमुख होता था। इस सेना में ब्रितानी सेना से अधिक सिपाही थे। सन 1847 में इस सेना में 2,57,000 सिपाही थे। बम्बई और मद्रास प्रेसीडेन्सी की सेना में अलग-अलग क्षेत्रों के लोग होने के कारण ये सेनाएं विभिन्नता से पूर्ण थी और इनमे किसी एक क्षेत्र के लोगो का प्रभुत्व नहीं था। परन्तु बंगाल प्रेसीडेन्सी की सेना में भर्ती होने वाले सैनिक मुख्यत: अवध और गंगा के मैदानी इलाको के अधिकांश गुर्जर थे, जबकि ब्राह्मणों और राजपूत ने अंग्रेजों का साथ दिया था। प्रारम्भिक वर्षों में बंगाल सेना में जातिगत विशेषाधिकारों और रीति-रिवाजों को महत्व दिया जाता था। परन्तु सन् 1840 के बाद कलकत्ता में आधुनिकता पसंद सरकार आने के बाद सिपाहियों में अपनी जाति खोने की आशंका व्याप्त हो गयी। सेना में सिपाहियों को जाति और धर्म से सम्बन्धित चिन्ह् पहनने से मना कर दिया गया। सन् 1856 में एक आदेश के अन्तर्गत सभी नये भर्ती सिपाहियों को विदेश में कुछ समय के लिये काम करना अनिवार्य कर दिया गया। सिपाही धीरे-धीरे सेना के जीवन के विभिन्न पहलुओं से असंतुष्ट हो चुके थे। सेना का वेतन कम था। भारतीय सैनिकों का वेतन महज सात रूपये प्रतिमाह था और अवध और पंजाब जीतने के बाद सिपाहियों का भत्ता भी समाप्त कर दिया गया था। एनफील्ड बंदूक के बारे

1857 के विद्रोह के अन्य प्रमुख नेताओं के बारे में :-

☞ नाना साहब (कानपुर) :- पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र; अंग्रेजों द्वारा पेंशन के अधिकार से वंचित। कानपुर में नेतृत्व संभाला; वर्ष 1859 में नेपाल भाग गए, जहाँ संभवत: उनकी मृत्यु हो गई।

☞ बेगम हजरत महल (लखनऊ) :- नवाब वाजिद अली शाह की विधवा; लखनऊ से विद्रोह का नेतृत्व किया। अपने बेटे बिरजिस कद्र को राजा बनाया। वर्ष 1879 में अपनी मृत्यु तक नेपाल में निर्वासित रहीं।

☞ वीर कुंवर सिंह (बिहार) :- भोजपुर के 80 वर्षीय जमींदार; गुरिल्ला युद्ध का नेतृत्व किया। वर्ष 1858 में घायल होने से पहले उन्होंने जगदीशपुर पर पुन: कब्जा कर लिया।

☞ रानी लक्ष्मीबाई (झाँसी) :- हड़प नीति के तहत उत्तराधिकार से वंचित। वर्ष 1858 में जनरल ह्यूग रोज के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना से लड़ीं।

☞ खान बहादुर खान (बरेली) :- 82 वर्ष की आयु में बरेली में लंबे समय तक चले प्रतिरोध का नेतृत्व किया; सर कॉलिन कैंपबेल से लड़े।

☞ मौलवी लियाकत अली (इलाहाबाद) :- कुछ समय तक इलाहाबाद पर नियंत्रण रखा; खुसरो बाग को केंद्र बनाया। उन्हे वर्ष 1872 में गिरफ्तार कर अंडमान द्वीप भेज दिया गया।

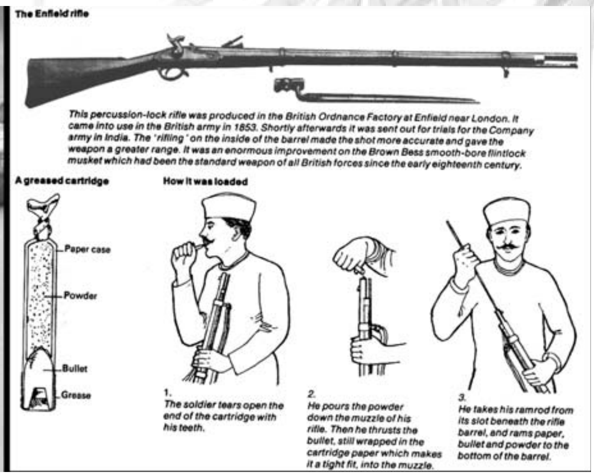

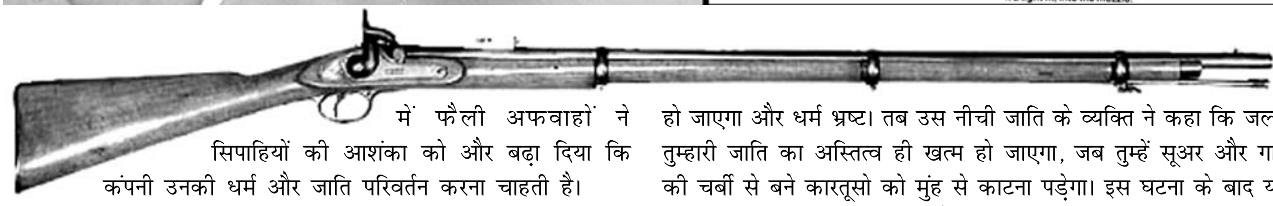

में फैली अफवाहों ने सिपाहियों की आशंका को और बढ़ा दिया कि कंपनी उनकी धर्म और जाति परिवर्तन करना चाहती है।

बहरहाल, उन्नीसवीं शताब्दी का वह कालखंड भारतीय समाज के लिए अत्यंत संवेदनशील था। आंग्ल शासक अपनी सत्ता के मद में चूर होकर भारतीय जनमानस की भावनाओं की निरंतर अनदेखी कर रहे थे। इसी बीच सेना में एक नई बंदूक का आगमन हुआ, जिसे भरने की प्रक्रिया ने विद्रोह की आधारशिला रख दी। 1850 के दशक के मध्य में जब वे बैरकपुर (अब पश्चिम बंगाल में) की चौकी पर तैनात थे, तब एक नईभारत में ‘एनफील्ड पी-53’ राइफल का प्रचलन शुरू हुआ। 1856 से पहले तक अंग्रेजी सेना के भारतीय सिपाही ‘ब्राउन ब्रीज’ नाम की बंदूक का इस्तेमाल करते थे, फिर 1856 में भारतीय सेना के इस्तेमाल के लिए ‘एनफील्ड पी-53’ लाई गई। जिसमें सैनिकों को कारतूसों को लोड करने के लिए चिकनाई लगे कारतूसों के सिरों को दांतों से काटना पड़ता था। दरअसल, इस राइफल का निशाना अचूक माना जाता था, लेकिन इस राइफल में गोली भरने के लिए कारतूस को दांत से खोलना पड़ता था। हालांकि, लोगों में ऐसी बात फैल रही थी कि इस कारतूस के ऊपर लगी कवर में सुअर और गाय के मांस का प्रयोग किया जाता है, जो क्रमशः हिंदुओं और मुसलमानों के लिए घृणित थी। यह बात लोगों के धर्म पर चोट थी। सिपाहियों में यह धारणा बन गई कि अंग्रेजों ने जानबूझकर कारतूसों पर चर्बी का इस्तेमाल किया था।

इस विद्रोह के पीछे एक और कहानी भी है। लेफ्टिनेंट जे.ए. राइट ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि, एक बार एक नीची जाति के खलासी ने ब्राह्मण सिपाही के लोटे से पानी पीने की इच्छा जाहिर की तो उसने उसे यह कहकर पानी पिलाने से मना कर दिया कि इससे उसका लोटा अशुद्ध हो जाएगा और धर्म भ्रष्ट। तब उस नीची जाति के व्यक्ति ने कहा कि जल्दी तुम्हारी जाति का अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा, जब तुम्हें सूअर और गाय की चर्बी से बने कारतूसो को मुंह से काटना पड़ेगा। इस घटना के बाद यह खबर जंगल में आग की तरह फैल गई कि अंग्रेजी सरकार भारतीयों का धर्म भ्रष्ट करने की साजिश कर रही है। ऐसी भी अफवाह उड़ाई गई कि अंग्रेज अपने सिपाहियों को समाज में बहिष्कृत करके, ईसाई धर्म में परिवर्तित होने के लिए मजबूर कर सके। दरअसल ईस्ट इंडिया कंपनी के अवध, पूर्वांचल और पश्चिमी बिहार इन्फेंट्री में ब्राह्मण जाति के सैनिक थे, जो शाकाहारी थे। मंगल पांडे के साथ जब कई और सिपाहियों ने कारतूस इस्तेमाल करने से मना किया, तब अंग्रेज डर गए। अंग्रेजों ने विद्रोहियों से लड़ने के लिए नई सेना भी बुलवाई। मंगल पांडेय समझ गए थे कि यहीं मौका है लोगों में स्वतंत्रता की चिंगारी जलाने का। इस विद्रोह के लिए मंगल पांडेय ने अपने साथियों को इस बारे में विद्रोह करने को कहा और ऐसा ही हुआ।

मार्च के अंतिम दिनों में बैरकपुर की छावनी में वातावरण अत्यंत तनावपूर्ण हो गया। 26 मार्च, 1857 का वह दिन भारत के भाग्य को बदलने वाला सिद्ध हुआ। मंगल पांडे ने अपनी वर्दी पहनी, अपनी बंदूक उठाई और परेड के मैदान में पहुँच गए। उनका मुखमंडल क्रोध और संकल्प से दीप्तिमान था। उन्होंने अपने साथियों का आह्वान किया और चिल्लाकर कहा कि, ***‘‘फिरंगियों के सामने झुकना बंद करो’’***। उन्होंने अपने सहकर्मियों से अपनी धर्म-रक्षा के लिए शस्त्र उठाने को कहा। जब उनके वरिष्ठ अधिकारी मेजर ह्यूसन ने उन्हें रोकने का प्रयास किया, तो मंगल की बंदूक से निकली पहली गोली ने उस अधिकारी को धूल चटा दी। यह केवल एक गोली नहीं थी, बल्कि यह विदेशी साम्राज्य

विद्रोह का प्रारम्भ एक बंदूक की वजह से हुआ। सिपाहियों को पैटर्न 1853 एनफील्ड बंदूक दी गयीं जो कि 0.577 कैलीबर की बंदूक थी तथा पुरानी और कई दशकों से उपयोग में लायी जा रही ब्राउन बैस के मुकाबले में शक्तिशाली और अचूक थी। नयी बंदूक में गोली दागने की आधुनिक प्रणाली (प्रिकशन कैप) का प्रयोग किया गया था परन्तु बंदूक में गोली भरने की प्रक्रिया पुरानी थी। नयी एनफील्ड बंदूक भरने के लिये कारतूस को दांतों से काट कर खोलना पड़ता था और उसमे भरे हुए बारुद को बंदूक की नली में भर कर कारतूस को डालना पड़ता था। कारतूस का बाहरी आवरण में चर्बी होती थी जो कि उसे पानी की सीलन से बचाती थी।

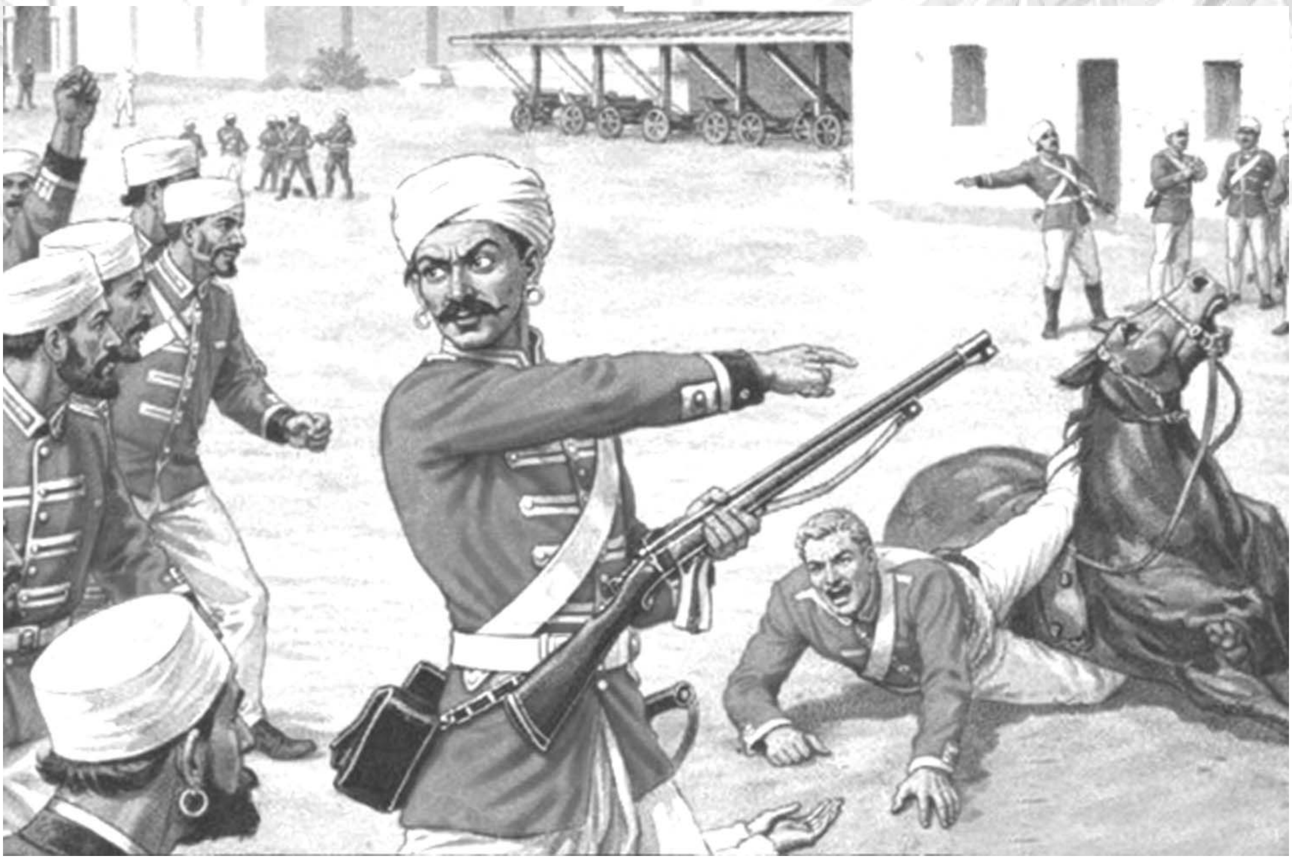

के अंत की घोषणा थी। इसके पश्चात लेफ्टिनेंट बॉघ भी उन्हें पकडने के लिए आगे बढ़े, किंतु मंगल के साहस के सामने वे भी टिक न सके। मंगल पांडे ने अदम्य वीरता का परिचय देते हुए अकेले ही ब्रिटिश अधिकारियों का सामना किया। छावनी के अन्य सैनिक इस दृश्य को देख रहे थे, किंतु उनमें से अधिकांश ने अपने ही साथी के विरुद्ध शस्त्र उठाने से इनकार कर दिया। यह इस बात का प्रमाण था कि मंगल की आवाज ने उनके भीतर सोए हुए राष्ट्र प्रेम को जगा दिया था। जब अंग्रेजी सेना के घेरे ने मंगल को चारों ओर से घेर लिया और उन्हें लगा कि वे अब शत्रुओं के चंगुल में फँस जाएंगे, तो उन्होंने आत्मसमर्पण करने के स्थान पर स्वयं के प्राणों की आहुति देने का निर्णय लिया। उन्होंने अपनी ही बंदूक से अपनी छाती पर गोली चला दी, ताकि वे जीवित रहते हुए अंग्रेजों के दास न बन सकें। यद्यपि वे इस प्रयास में केवल घायल हुए और उन्हें उपचार के बाद बंदी बना लिया गया, किंतु उनका यह कृत्य भारतीय इतिहास की एक युगांतकारी घटना बन गया। अस्पताल में रहने के दौरान और उसके बाद के परीक्षणों के समय भी मंगल पांडेय अडिग रहे। उनसे उन लोगों के नाम पूछे गए जो इस विद्रोह में उनके साथ थे, किंतु उन्होंने किसी भी साथी का नाम उजागर नहीं किया और सारा उत्तरदायित्व स्वयं पर ले लिया।

29 मार्च 1857 को मंगल पांडेय ने अपने सीनियर सार्जेंट मेजर ह्वीसन पर गोली चला दी। इतिहासकार किम ए. वैगनर की किताब 'द ग्रेट फियर ऑफ 1857–रयूमर्स, कॉन्सपिरेसीज एंड मेकिंग ऑफ द इंडियन अपराइजिंग' में लिखते हैं कि मंगल पांडे ने दो अंग्रेज अफसरों पर गोली चलाई, लेकिन दोनों बार उनका निशाना चूक गया। इसके बाद उन्होंने अपनी तलवार से हमला कर अंग्रेज अफसर को घायल कर दिया। इसके बाद उनके एक साथी ने उन्हें पकड़ लिया। इसके बाद उनसे छूटकर भागे मंगल पांडे ने अपनी बंदूक को जमीन पर रखकर पैर के अंगूठे से अपने ही ऊपर गोली

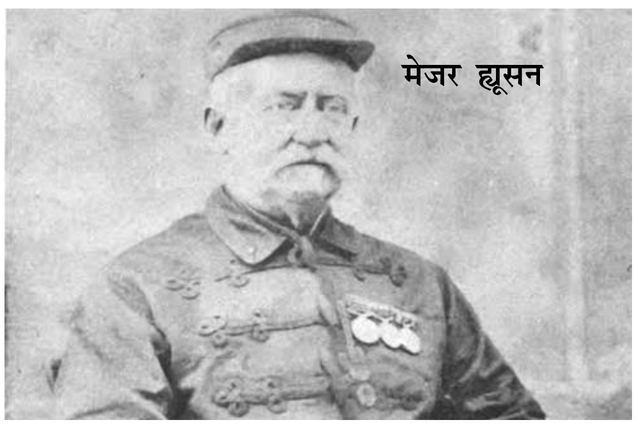

मेजर ह्यूसन

9 फरवरी 1857 को जब 'नया कारतूस' देशी पैदल सेना को बांटा गया तब मंगल पाण्डेय ने उसे लेने से इनकार कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप अंग्रेजों ने उनके हथियार छीन लिये जाने व वर्दी उतार लेने का हुक्म हुआ। मंगल पाण्डेय ने उस आदेश को मानने से इनकार कर दिया, 29 मार्च सन् 1857 को उनकी राइफल छीनने के लिये जब अंग्रेज अफसर मेजर ह्यूसन आगे बढे तो मंगल ने उन पर आक्रमण कर दिया। मंगल पांडे ने मदद के लिए साथियों की ओर देखा लेकिन किसी ने उनकी मदद नहीं की लेकिन मंगल पांडे ने हिम्मत नहीं हारी और उन्होंने ह्यूसन को मौत के घाट उतार दिया।

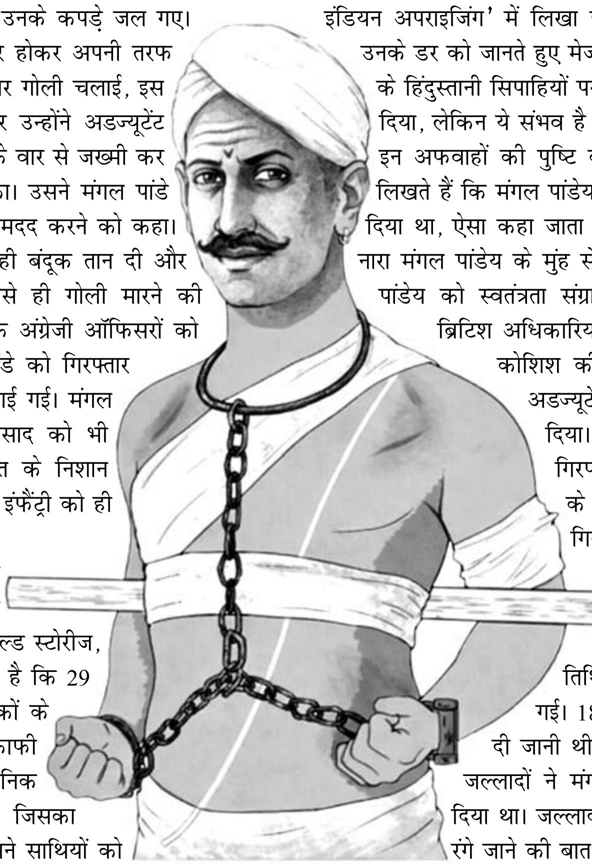

चला दी। इसमें वह जख्मी हो गए और उनके कपड़े जल गए। मंगल पांडे ने इसके बाद घोड़े पर सवार होकर अपनी तरफ आ रहे अडज्यूटेंट लेफ्टिनेंट बेंपदे बॉघ पर गोली चलाई, इस बार भी उनका निशाना चूक गया। फिर उन्होंने अडज्यूटेंट लेफ्टिनेंट बेंपदे बॉघ को अपनी तलवार के वार से जख्मी कर दिया। इस दौरान शेख पल्टू ने उन्हें रोका। उसने मंगल पांडे की टुकड़ी के प्रमुख को उन्हें रोकने में मदद करने को कहा। इस पर ईश्वरी प्रसाद ने शेख पल्टू पर ही बंदूक तान दी और मंगल पांडे को नहीं भागने देने पर उसे ही गोली मारने की चेतावनी दी। इस घटना ने कलकत्ता तक अंग्रेजी ऑफिसरों को डरा दिया। इस घटना के बाद मंगल पांडे को गिरफ्तार किया गया और फांसी की सजा भी सुनाई गई। मंगल पांडे के बाद 21 अप्रैल को ईश्वरी प्रसाद को भी फांसी पर चढ़ा दिया गया। इस बगावत के निशान मिटाने के लिए ब्रिटिश अफसरों ने 34वीं इंफैंट्री को ही भंग कर दिया।

ब्रिटिश इतिहासकार रोजी लिलवेलन जोंस की किताब 'द ग्रेट अपराइजिंग इन इंडिया, 1857-58 अनटोल्ड स्टोरीज, इंडियन एंड ब्रिटिश' में जानकारी दी गई है कि 29 मार्च की शाम मंगल पांडे यूरोपीय सैनिकों के बैरकपुर आने की खबर को सुनकर काफी बैचेन थे। मंगल पांडेय को लगा कि ये सैनिक भारतीय सैनिकों को मारने आ रहे हैं, जिसका परिणाम ये हुआ कि मंगल पांडेय ने अपने साथियों को

इंडियन अपराइजिंग' में लिखा है कि सिपाहियों के मन में डर बैठा था। उनके डर को जानते हुए मेजर जनरल जेबी हिअरसी ने यूरोपीय सैनिकों के हिंदुस्तानी सिपाहियों पर हमला बोलने की बात को अफवाह करार दिया, लेकिन ये संभव है कि हिअरसी ने सिपाहियों तक पहुंच चुकी इन अफवाहों की पुष्टि करते हुए स्थिति को बिगाड़ दिया। वैगनर लिखते हैं कि मंगल पांडेय ने इस दौरान ***'मारो फिरंगी को'*** का नारा दिया था, ऐसा कहा जाता है कि फिरंगियों के खिलाफ सबसे पहला नारा मंगल पांडेय के मुंह से ही निकला था। यही वजह है कि मंगल पांडेय को स्वतंत्रता संग्राम का पहला क्रांतिकारी माना जाता है। ब्रिटिश अधिकारियों ने जब मंगल पांडेय को काबू करने की कोशिश की तो पांडेय ने सार्जेंट मेजर ह्वीसन और अडज्यूटेंट लेफ्टिनेंट बेंपदे बाघ पर हमला कर दिया। इसके बाद जनरल ने मंगल पांडेय की गिरफ्तारी का आदेश दिया गया और शेख पल्टू के अलावा सभी साथियों ने मंगल पांडेय की गिरफ्तारी का विरोध किया।

अंग्रेजी अफसरों पर गोली चलाने और हमला करने के आरोप में मंगल पांडेय को फांसी की सजा सुनाई गई थी, लेकिन तय तिथि से दस दिन पहले ही उन्हें फांसी दे दी गई। 18 अप्रैल 1857 को मंगल पांडेय को फांसी दी जानी थी, ऐसा कहा जाता है कि बैरकपुर के सभी जल्लादों ने मंगल पांडेय को फांसी देने से इनकार कर दिया था। जल्लादों ने अपने हाथ मंगल पांडेय के खून से न रंगे जाने की बात कहते हुए फांसी देने से इनकार किया था।

मंगल पांडेय ने 'मारो फिरंगी को' का नारा दिया था, ऐसा कहा जाता है कि फिरंगियों के खिलाफ सबसे पहला नारा मंगल पांडेय के मुंह से ही निकला था। यही वजह है कि मंगल पांडेय को स्वतंत्रता संग्राम का पहला क्रांतिकारी माना जाता है। ब्रिटिश अधिकारियों ने जब मंगल पांडेय को काबू करने की कोशिश की तो पांडेय ने सार्जेंट मेजर ह्वीसन और अडज्यूटेंट लेफ्टिनेंट बेंपदे बाघ पर हमला कर दिया। इसके बाद जनरल ने मंगल पांडेय की गिरफ्तारी का आदेश दिया गया और शेख पल्टू के अलावा सभी साथियों ने मंगल पांडेय की गिरफ्तारी का विरोध किया।

ऐसा अफवाह को मारने आ आ ॅ प न

भड़काया और ब्रिटिश अफसरों पर हमला बोल दिया। कहा जाता है कि 1857 की क्रांति के पीछे यही थी कि बड़ी संख्या में यूरोपीय सैनिक भारतीय सैनिकों रहे हैं। किम ए वैगनर ने अपनी किताब 'द ग्रेट फियर 1857-रयूमर्स, कॉन्सपिरेसीज एंड मेकिंग ऑफ द

बैरकपुर में कोई जल्लाद नहीं मिलने पर ब्रिटिश अधिकारियों ने कलकत्ता से 04 जल्लाद बुलाए। यह समाचार मिलते ही कई छावनियों में ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ असंतोष भड़क उठा। इसी वजह से आनन-फानन में करीब चुपचाप मंगल पांडे को 8 अप्रैल 1857 को तड़के जल्दी ही फांसी पर लटका दिया गया। मंगल पांडे और उनके मुट्ठी भर दोस्तों को इस विद्रोह की भारी कीमत चुकानी पड़ी। कुछ को गिरफ्तार किया गया तो कुछ को मार डाला गया। लेकिन यह बात यहां

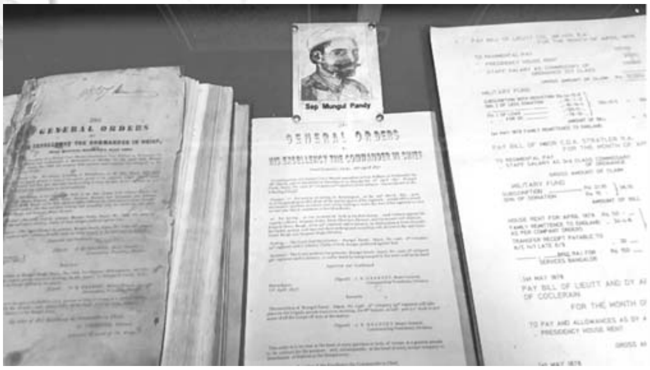

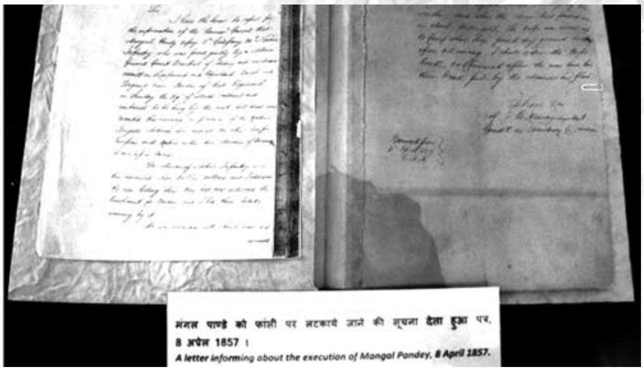

दबी नहीं बल्कि जंगल में आग की तरह फैल गई और देश भर में मंगल पांडे पर हुए अत्याचार का विरोध शुरू हो गया।

इसी विरोध से शुरू होती हैं देश की आजादी की लड़ाई, जिसका बिगुल मंगल पांडे ने फूंका था। हालांकि उस घटना के बाद भी हमें आजादी मिलने में तकरीबन 100 साल लग गए। इतिहासकार किम ए. वैगनर की किताब 'द ग्रेट फियर ऑफ 1857–रयूमर्स, कॉन्सपिरेसीज एंड मेकिंग ऑफ द इंडियन अपराइजिंग' में बैरकपुर में अंग्रेज अफसरों पर हमले से लेकर मंगल पांडे की फांसी तक के घटनाक्रम के बारे में सिलसिलेवार तरीके से जिक्र किया गया है। अवधी लोककथाओं में मंगल पांडे की कहानी कई बार पौराणिक रूप लेती है। कुछ गीतों में कहा गया है कि उन्हें बरगद के पेड़ से फाँसी दी गई, न कि फाँसीघर में। लोकगीतों में वे नाना साहब और अजीमुल्ला खान से गुप्त बैठकें करते दिखते हैं। इन कहानियों ने उन्हें नायक से अधिक धार्मिक प्रतीक बना दिया, एक ऐसा प्रतीक जो अन्याय के विरुद्ध लोक–आस्था में बस गया। इस अवज्ञापूर्ण कार्य ने 1857 के ऐतिहासिक विद्रोह को जन्म दिया, जिसे अक्सर सिपाही विद्रोह या भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध कहा जाता है। इस विद्रोह के परिणामस्वरूप अंततः भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया

मंगल पांडे का नाम ब्रिटिशों के बीच इतना प्रसिद्ध हुआ कि "Pandee" शब्द ही विद्रोही सिपाहियों के लिए गाली के रूप में इस्तेमाल होने लगा। यह दर्शाता है कि उनका नाम अंग्रेजी शासन के लिए कितना भयावह प्रतीक बन चुका था।

तथा ब्रिटिश क्राउन ने वर्ष 1858 की महारानी विक्टोरिया की घोषणा और भारत सरकार अधिनियम, 1858 के अधिनियमन के माध्यम से अपने हाथ में प्रत्यक्ष नियंत्रण ले लिया, जिसके तहत गवर्नर–जनरल के स्थान पर एक वायसराय की नियुक्ति की गई। इस नई व्यवस्था के तहत लॉर्ड कैनिंग पहले वायसराय बने।

मंगल पांडे का नाम ब्रिटिशों के बीच इतना प्रसिद्ध हुआ कि "पांडी" शब्द ही विद्रोही सिपाहियों के लिए गाली के रूप में इस्तेमाल होने लगा। यह दर्शाता है कि उनका नाम अंग्रेजी शासन के लिए कितना भयावह प्रतीक बन चुका था। मंगल पांडेय के बलिदान ने संपूर्ण भारत में एक ऐसी लहर पैदा की, जिसकी कल्पना आंग्ल शासकों ने कभी नहीं की थी। कुछ ही हफ्तों के भीतर, मेरठ, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ और झांसी जैसे क्षेत्रों में विद्रोह की ज्वाला फैल गई। 1857 का महान विप्लव, जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है, वास्तव में मंगल पांडेय की उसी एक गोली का विस्तार था। उन्हें अक्सर एक विद्रोही सैनिक के रूप में चित्रित किया जाता रहा, किंतु भारतीय दृष्टिकोण से वे एक राष्ट्रनायक और क्रांति के अग्रदूत थे। उनके द्वारा जलाई गई ज्योति ने आगामी नौ दशकों तक भारतीय स्वाधीनता सेनानियों का मार्ग प्रशस्त किया। सुभाष चंद्र बोस से लेकर भगत सिंह तक, प्रत्येक क्रांतिकारी ने मंगल पांडेय के बलिदान से प्रेरणा प्राप्त की।

आज भी मंगल पांडेय का नाम प्रत्येक भारतीय के हृदय में देशभक्ति का संचार करता है। वे केवल एक ऐतिहासिक पात्र नहीं हैं, बल्कि वे अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध के प्रतीक हैं। ब्रिटिश इतिहासकारों ने

मंगल पांडे की प्रमुख उपलब्धियाँ :–

☞ 1857 के विद्रोह को भड़काने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

☞ वह ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ खुलेआम विद्रोह करने वाले पहले सैनिकों में से एक बन गया।

☞ इसने हजारों भारतीय सैनिकों और नागरिकों को स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया।

☞ भारत के स्वतंत्रता संग्राम के शुरुआती शहीदों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त।

मंगल पांडे को "नशे में हिंसक सिपाही" बताया, जबकि भारतीय राष्ट्रवादी लेखकों जैसे वी. डी. सावरकर ने उन्हें "पहला स्वतंत्रता सेनानी" कहा, जिसने अत्याचार के खिलाफ पहला बिगुल बजाया। आधुनिक इतिहासकार जैसे रुद्रांग्शु मुखर्जी और किम वैग्नर मानते हैं कि मंगल पांडे भले ही संगठित साजिश का हिस्सा न रहे हों, लेकिन उनका विद्रोह उस समय के धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक आक्रोश का प्रतीक था। मंगल पांडे की कहानी केवल एक सिपाही की नहीं, वह उस भारत की कहानी है जिसने गुलामी की जंजीरें तोड़ने का साहस दिखाया। उनकी एक गोली ने सिर्फ एक अफसर को नहीं, बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य के अभिमान को भी घायल किया। ब्रिटिशों के लिए वह "बागी" थे, पर भारत के लिए वे "शहीद मंगल पांडे" हैं, वह नाम जिसने डर को हिम्मत में और अधीनता को आजादी की पहली चिंगारी में बदल दिया। मंगल पांडे का यह विद्रोह व्यक्तिगत पीड़ा, धार्मिक सह-अस्तित्व, सांस्कृतिक अपमान और आर्थिक अन्याय के खिलाफ एक आत्मिक पुकार भी थी। मंगल पांडे याद दिलाते हैं कि क्रांतियाँ हमेशा योजनाओं से नहीं, बल्कि किसी एक व्यक्ति के अंतरात्मा की आग से शुरू होती हैं, जो एक पूरे राष्ट्र को जगा देती है। मंगल पांडे का साहस भारत की आजादी की सबसे शुरुआती और प्रेरणादायक कहानियों में से एक है। जब पूरा देश डर और अधीनता में झुका हुआ था, तब उन्होंने अकेले ब्रिटिश साम्राज्य के सामने विद्रोह का बिगुल फूँक दिया। उनके पास न कोई पद था, न ताकत। था तो सिर्फ धर्म, कर्तव्य और आत्मसम्मान में अटूट विश्वास। बैरकपुर की वह घटना सिर्फ एक विद्रोह नहीं थी, बल्कि आजादी की पहली चिंगारी थी, जिसने पूरे देश में प्रतिरोध की भावना को जन्म दिया। वे जानते थे कि इस बगावत की कीमत उनकी जान होगी, लेकिन उन्होंने पीछे हटना मंजूर नहीं किया। उनकी फाँसी ने उनकी आवाज को नहीं दबाया, बल्कि उस क्रांति को जन्म दिया जिसने भारत के इतिहास की दिशा बदल दी। आज भी भारत का हर नागरिक मंगल पांडे के उस बलिदान का ऋणी है, जिसने स्वतंत्रता की लौ जलाई और आने वाली पीढ़ियों को अपने देश की गरिमा के लिए लड़ने की प्रेरणा दी। मंगल पांडेय का जीवन हमें सिखाता है कि व्यक्ति नश्वर है, किंतु राष्ट्र के लिए दिया गया उसका बलिदान अमर होता है। उन्होंने जिस चिंगारी को जन्म दिया था, उसी ने अंततः 1947 में उस विशाल साम्राज्य को भस्म कर दिया, जिसका सूर्य कभी अस्त नहीं होता था। भारत के इतिहास में मंगल पांडेय सदैव उस प्रथम सेनानी के रूप में पूजे जाएंगे, जिसने भारतीयता के गौरव को सर्वोपरि रखा और हंसते-हंसते मृत्यु का वरण किया। उनका वह गर्जन आज भी बैरकपुर की हवाओं में सुनाई देता है, जो हमें निरंतर स्मरण कराता रहता है कि स्वतंत्रता का मूल्य क्या है और इसे अक्षुण्ण रखने के लिए किस स्तर के त्याग की आवश्यकता होती है।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात, मंगल पांडे को वह सम्मान प्राप्त

मंगल पांडे को 8 अप्रैल 1857 को बैरकपुर में फाँसी दी गई थी। कम लोग जानते हैं कि उनकी कब्र उसी स्थान के पास है, जहाँ आज शहीद मंगल पांडे महा उद्यान स्थित है। 1984 में यहाँ उनके नाम से डाक टिकट और स्मारक बनाए गए, जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान की याद दिलाते हैं।

विरासत और सम्मान :– मंगल पांडे का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। उनकी शहादत ने पूरे देश में 1857 के महान विद्रोह की चिंगारी सुलगा दी जो आगे चलकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का आधार बनी।

☞ 5 अक्टूबर 1984 को भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया।

☞ 2005 में बॉलीवुड फिल्म "मंगल पांडे: द राइजिंग" आमिर खान की मुख्य भूमिका में बनाई गई।

☞ उनके गांव नगवा में उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है।

☞ बैरकपुर में उनकी याद में एक पार्क बनाया गया है।

हुआ, जिसके वे वास्तविक अधिकारी थे। भारत सरकार ने 5 अक्टूबर 1984 को मंगल पांडे की छवि वाला एक 'डाक टिकट' जारी करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। यह टिकट और इसके साथ जारी किया गया प्रथम-दिन का कवर दिल्ली स्थित कलाकार सी.आर. पक्राशी द्वारा डिजाइन किया गया था। बैरकपुर में 'शहीद मंगल पांडे महा उद्यान' नामक एक पार्क स्थापित किया गया है, जो उस स्थान की स्मृति में है जहाँ पांडे ने ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला किया था और बाद में उन्हें फाँसी दी गई थी। इसके अलावा, 2005 में बनी बॉलीवुड फिल्म 'मंगल पांडे: द राइजिंग' में उनके जीवन को दर्शाया गया था, जिसमें भारतीय अभिनेता आमिर खान के साथ रानी मुखर्जी, अमीषा पटेल और टोबी स्टीफंस ने अभिनय किया है और जिसका निर्देशन केतन मेहता ने किया था, जो 12 अगस्त 2005 को रिलीज हुई थी। हालांकि 2005 की फिल्म "मंगल पांडे: द राइजिंग" में उनके चरित्र को गलत ढंग से दिखाने पर बलिया में विरोध भी हुआ। लोगों को आपत्ति थी कि फिल्म ने उन्हें स्त्री संग और नशेड़ी के रूप में दिखाया, जबकि उनके गाँव नगवा का उल्लेख तक नहीं किया गया। इसी तरह 2007 में बैरकपुर में बनी उनकी प्रतिमा के नीचे गलत जानकारी लिखी गई, जिसमें दावा था कि उन्होंने तीन अफसरों को मारा था। ऐसी घटनाएँ बताती हैं कि आधुनिक स्मारक कभी-कभी जोश में तथ्यों को तोड़

देते हैं। वही पांडे के जीवन पर आधारित एक नाटक का मंचन 'द रोटी रिबेलियन' था, जिसे सुप्रिया करुणाकरण ने लिखा और निर्देशित किया था। इस नाटक का आयोजन स्पर्श नामक एक थिएटर समूह द्वारा किया गया था और इसे जून 2005 में आंध्र प्रदेश के हैदराबाद स्थित आंध्र सारस्वत परिषद के मूविंग थिएटर में प्रस्तुत किया गया था। समद इकबाल, मंगल पांडे के एक काल्पनिक वंशज, जैडी स्मिथ के पहले उपन्यास व्हाइट टीथ में एक केंद्रीय पात्र हैं। पांडे समद के जीवन पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं और उपन्यास के पात्रों द्वारा बार-बार संदर्भित और जांच की जाती है। मंगल पांडे के जीवन गाथा को विद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया, ताकि आने वाली पीढ़ियां जान सकें कि आजादी की यह नींव किन पत्थरों पर टिकी है।

मंगल पांडे को याद करते हुए इसी वर्ष 8 अप्रैल 2026 को उनके 169वें बलिदान दिवस पर बड़ी संख्या में लोगों ने शामिल होकर वीर सपूत को श्रद्धांजलि अर्पित की थी, जहां उनकी प्रतिमा पर 169 किलो का माला पहनाकर नमन किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम का आयोजक सदर विधायक और प्रदेश सरकार के परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत मंगल पांडेय के नाम पर एक ट्रिपल आईटी बनवाने की घोषणा की। ट्रिपल आईटी को लेकर कुलपति ने हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। साथ ही उक्त कार्यक्रम में मंगल पांडेय को भारत रत्न देने की भी मांग परिवहन मंत्री ने की। वही वर्ष 2025 में संसद सत्र के दौरान बलिया जनपद के बागी तेवर और स्वतंत्रता आंदोलन को धार देने वाले सेनानियों को याद करते हुए सपा सांसद सनातन पांडेय ने मंगल पांडेय के नाम पर ट्रेन चलाने की मांग की थी। उन्होंने कहा था कि यदि इसमें किसी प्रकार का अवरोध हो तो पूर्व से संचालित स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एक्सप्रेस ट्रेन का नाम ही शहीद मंगल पांडेय पर कर दिया जाए। वही महान स्वतंत्रता सेनानी के नाम पर 'शहीद मंगल पांडेय इंटर कॉलेज', नगवा, जनपद-बलिया, उत्तर प्रदेश, 'शहीद मंगल पांडे राजकीय महिला महाविद्यालय', बलिया एवं 'शहीद मंगल पांडे सरकारी बालिका स्नातकोत्तर महाविद्यालय', माधवपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश में में स्थापित है।●

''जब तक हम शस्त्रों की गोद में रत्ती भर जीने की बजाय स्वतंत्रता की लालसा नहीं करेंगे, तब तक हमारी आजादी संभव नहीं है'' -: क्रांतिकारी मंगल पांडे

आन्दोलन भारत के आजादी की कहानी शहीद बलिदानी वीर क्रांतिकारी की

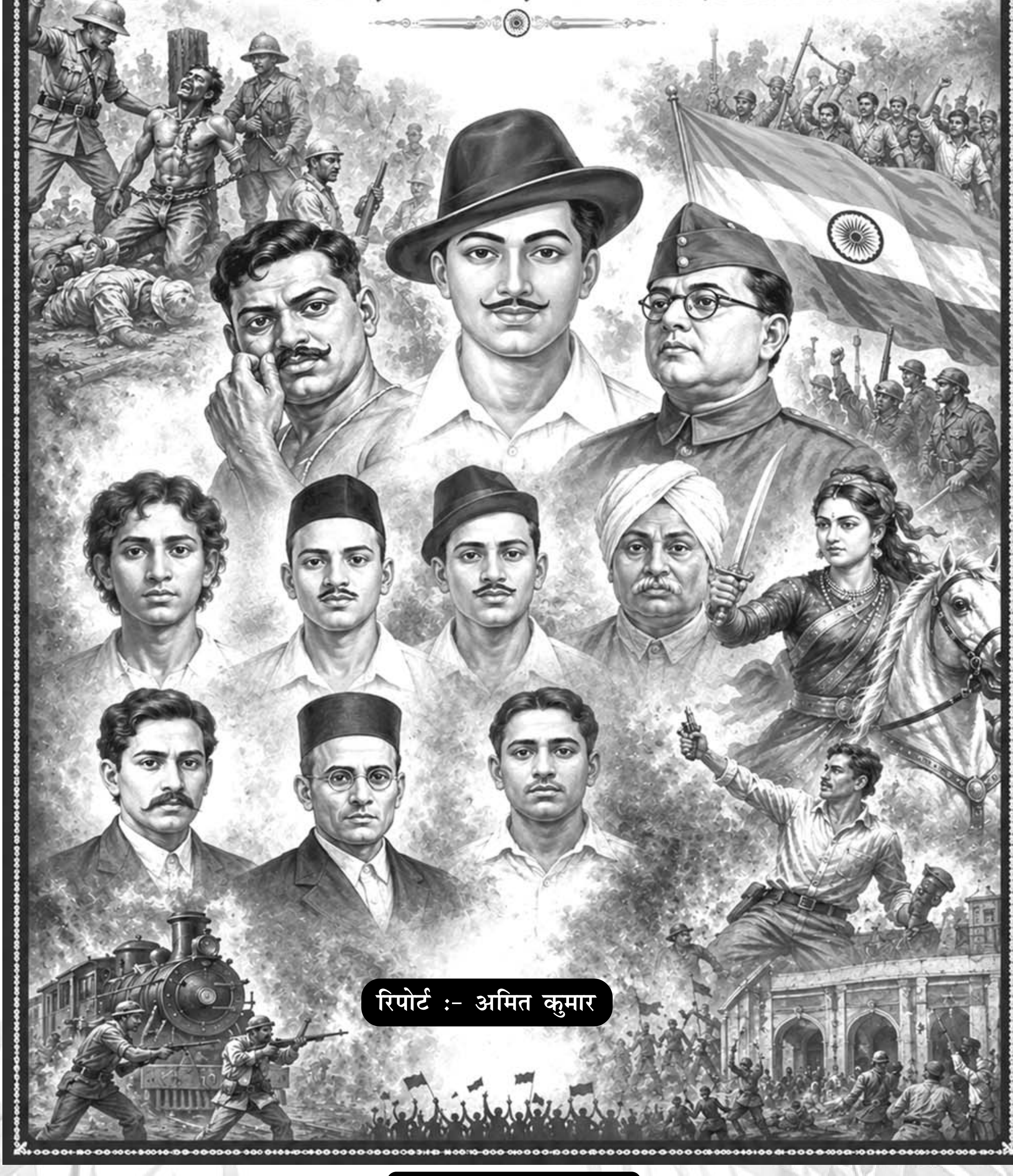

भारत की स्वतंत्रता के लिये अंग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलन दो प्रकार का था, एक अहिंसक आन्दोलन एवं दूसरा सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन। भारत की आजादी के लिए 1857 से 1947 के बीच जितने भी प्रयत्न हुए, उनमें स्वतंत्रता का सपना संजोये क्रान्तिकारियों और शहीदों की उपस्थिति सबसे अधिक प्रेरणादायी सिद्ध हुई। वस्तुत: भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है। भारत की धरती के जितनी भक्ति और मातृ-भावना उस युग में थी, उतनी कभी नहीं रही। मातृभूमि की सेवा और उसके लिए मर-मिटने की जो भावना उस समय थी, आज उसका नितान्त अभाव हो गया है। क्रांतिकारी आंदोलन का समय सामान्यत: लोगों ने सन् 1857 से 1942 तक माना है। श्रीकृष्ण सरल का मत है कि इसका समय सन् 1757 अर्थात् प्लासी के युद्ध से सन् 1961 अर्थात् गोवा मुक्ति तक मानना चाहिए। सन् 1961 में गोवा मुक्ति के साथ ही भारतवर्ष पूर्ण रूप से स्वाधीन हो सका है। जिस प्रकार एक विशाल नदी अपने उद्‌गम स्थान से निकलकर अपने गंतव्य अर्थात् सागर मिलन तक अबाध रूप से बहती जाती है और बीच-बीच में उसमें अन्य छोटी-छोटी धाराएँ भी मिलती रहती हैं, उसी प्रकार भारत की मुक्ति गंगा का प्रवाह भी सन् 1757 से सन् 1961 तक अजस्र रहा है और उसमें मुक्ति यत्न की अन्य धाराएँ भी मिलती रही हैं। भारतीय स्वतंत्रता के सशस्त्र संग्राम की विशेषता यह रही है कि क्रांतिकारियों के मुक्ति प्रयास कभी शिथिल नहीं हुए। भारत की स्वतंत्रता के बाद आधुनिक नेताओं ने भारत के सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन को प्राय: दबाते हुए उसे इतिहास में कम महत्व दिया गया और कई स्थानों पर उसे विकृत भी किया गया। स्वराज्य उपरान्त यह सिद्ध करने की चेष्टा की गई कि हमें स्वतंत्रता केवल कांग्रेस के अहिंसात्मक आंदोलन के माध्यम से मिली है। इस नये विकृत इतिहास में स्वाधीनता के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाले, सर्वस्व समर्पित करने वाले असंख्य क्रांतिकारियों, अमर हुतात्माओं की पूर्ण रूप से उपेक्षा की गई। भारत को मुक्त कराने के लिए सशस्त्र विद्रोह की एक अखण्ड परम्परा रही है। भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के साथ ही सशस्त्र विद्रोह का आरम्भ हो गया था। बंगाल में सैनिक-विद्रोह, चुआड़ विद्रोह, सन्यासी विद्रोह, भूमिज विद्रोह, संथाल विद्रोह अनेक सशस्त्र विद्रोहों की परिणति सत्तावन के विद्रोह के रूप में हुई। प्रथम स्वातंत्रता संघर्ष के असफल हो जाने पर भी विद्रोह की अग्नि ठण्डी नहीं हुई। शीघ्र ही दस-पन्द्रह वर्षों के बाद पंजाब में कूका विद्रोह व महाराष्ट्र में वासुदेव बलवन्त फड़के के छापामार युद्ध शुरू हो गए। संयुक्त प्रान्त में पं. गेंदालाल दीक्षित ने शिवाजी समिति और मातृदेवी नामक संस्था की स्थापना की। बंगाल में क्रान्ति की अग्नि सतत जलती रही। सरदार अजीत सिंह ने सत्तावन के स्वतंत्रता आन्दोलन की पुनरावृत्ति के प्रयत्न शुरू कर दिए। रासबिहारी बोस और शचीन्द्रनाथ सान्याल ने बंगाल, बिहार, दिल्ली, राजपुताना, संयुक्त प्रान्त व पंजाब से लेकर पेशावर तक की सभी छावनियों में प्रवेश कर 1915 में पुन: विद्रोह की सारी तैयारी कर ली थी। दुर्दैव से यह प्रयत्न भी असफल हो गया। इसके भी नए-नए क्रान्तिकारी उभरते रहे। राजा महेन्द्र प्रताप और उनके साथियों ने तो अफगान प्रदेश में अस्थायी व समान्तर सरकार स्थापित कर ली। सैन्य संगठन कर ब्रिटिश भारत से युद्ध भी किया। रासबिहारी बोस ने जापान में आजाद हिन्द फौज के लिए अनुकूल भूमिका बनाई। मलाया व सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज संगठित हुई। सुभाष चन्द्र बोस ने इसी कार्य को आगे बढ़ाया। उन्होंने भारतभूमि पर अपना झण्डा गाड़ा। आजाद हिन्द फौज का भारत में भव्य स्वागत हुआ, उसने भारत की ब्रिटिश फौज की आँखें खोल दीं। भारतीयों का नाविक विद्रोह तो ब्रिटिश शासन पर अन्तिम प्रहार था। अंग्रेज, मुट्ठी-भर गोरे सैनिकों के बल पर नहीं, बल्कि भारतीयों की फौज के बल पर शासन कर रहे थे। आरम्भिक सशस्त्र विद्रोह में क्रान्तिकारियों को भारतीय जनता की सहानुभूति प्राप्त नहीं थी। वे अपने संगठन व कार्यक्रम गुप्त रखते थे। अंग्रेजी शासन द्वारा शोषित जनता में उनका प्रचार नहीं था। अंग्रेजों के क्रूर व अत्याचारपूर्ण अमानवीय व्यवहारों से ही उन्हें इनके विषय में जानकारी मिली। विशेषत: काकोरी काण्ड के अभियुक्त तथा भगत सिंह और उसके साथियों ने जनता का प्रेम व सहानुभूति अर्जित की। भगत सिंह ने अपना बलिदान क्रांति के उद्देश्य के प्रचार के लिए ही किया था। जनता में जागृति लाने का कार्य महात्मा गांधी के चुम्बकीय व्यक्तित्व ने किया। बंगाल की सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी श्रीमती कमला दासगुप्त ने कहा कि क्रांतिकारी की निधि थी 'कम व्यक्ति अधिकतम बलिदान', महात्मा गांधी की निधि थी 'अधिकतम व्यक्ति न्यूनतम बलिदान'। सन् 42 के बाद उन्होंने अधिकतम व्यक्ति तथा अधिकतम बलिदान का मंत्र दिया। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में क्रांतिकारियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

भारतीय क्रांतिकारियों के कार्य सिरफिरे युवकों के अनियोजित कार्य नहीं थे। भारत माता के पैरों में बंधी शृंखला तोड़ने के लिए सतत संघर्ष करने वाले देशभक्तों की एक अखण्ड परम्परा थी। देश की रक्षा के लिए कर्तव्य समझकर उन्होंने शस्त्र उठाए थे। क्रान्तिकारियों का उद्देश्य अंग्रेजों का रक्त बहाना नहीं था। वे तो अपने देश का सम्मान लौटाना चाहते थे। अनेक क्रान्तिकारियों के हृदय में क्रांति की ज्वाला थी, तो दूसरी ओर अध्यात्म का आकर्षण भी। हंसते हुए फाँसी के फंदे का चुम्बन करने वाले व मातृभूमि के लिए सरफरोशी की तमन्ना रखने वाले ये देशभक्त युवक भावुक ही नहीं, विचारवान भी थे। शोषणरहित समाजवादी प्रजातंत्र चाहते थे। उन्होंने देश के संविधान की रचना भी की थी। सम्भवत: देश को स्वतंत्रता यदि सशस्त्र क्रांति के द्वारा मिली होती तो भारत का विभाजन नहीं हुआ होता, क्योंकि सत्ता उन हाथों में न आई होती, जिनके कारण देश में अनेक भीषण समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। जिन शहीदों के प्रयत्नों व त्याग से हमें स्वतंत्रता मिली, उन्हें उचित सम्मान नहीं मिला। अनेकों को स्वतंत्रता के बाद भी गुमनामी का अपमानजनक जीवन जीना पड़ा। ये शब्द उन्हीं पर लागू होते हैं :-

उनकी तुरबत पर नहीं है एक भी दीया,
जिनके खूँ से जलते हैं ये चिरागे वतन।
जगमगा रहे हैं मकबरे उनके,
बेचा करते थे जो शहीदों के कफन।।

आज हम ऐसे खास क्रांतिकारियों को पाठकों के बीच रखेंगे जिन्होंने स्वाधिनता में अपना सबकुछ न्यौछावर कर दिया, आइए जानते हैं :-

❖ **रानी लक्ष्मीबाई :-** रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी और 1857 की राज्यक्रान्ति की द्वितीय शहीद वीरांगना थीं। उन्होंने सिर्फ 29 वर्ष की उम्र में अंग्रेज साम्राज्य की सेना से युद्ध किया और रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हुईं। लक्ष्मीबाई का जन्म वाराणसी में 19 नवम्बर 1828 को हुआ था। उनका बचपन का नाम मणिकर्णिका था लेकिन प्यार से उन्हें मनु कहा जाता था। उनकी माँ का नाम भागीरथीबाई और पिता का नाम मोरोपंत तांबे था। मोरोपंत एक मराठी थे और मराठा बाजीराव की सेवा में थे। माता भागीरथीबाई एक सुसंस्कृत, बुद्धिमान और धर्मनिष्ठ स्वभाव की थी तब उनकी माँ की मृत्यु हो गयी। क्योंकि घर में मनु की देखभाल के लिये कोई नहीं था, इसलिए पिता मनु को अपने साथ पेशवा बाजीराव द्वितीय के दरबार में ले जाने लगे। जहाँ चंचल और सुन्दर मनु को सब लोग उसे प्यार से 'छबीली' कहकर बुलाने लगे। मनु ने बचपन में शास्त्रों की शिक्षा के साथ शस्त्र की शिक्षा भी ली। सन् 1842 में उनका विवाह झाँसी के मराठा शासित राजा गंगाधर राव नेवालकर के साथ हुआ और वे झाँसी की रानी बनीं। विवाह के बाद उनका नाम लक्ष्मीबाई रखा गया। सितंबर 1851 में रानी लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया। परन्तु चार महीने की उम्र में ही उसकी मृत्यु हो गयी। सन् 1853 में राजा गंगाधर राव का स्वास्थ्य बहुत अधिक बिगड़ जाने पर उन्हें दत्तक पुत्र लेने की सलाह दी गयी। पुत्र गोद लेने के बाद 21 नवम्बर 1853 को राजा गंगाधर राव की मृत्यु हो गयी। दत्तक पुत्र का नाम दामोदर राव रखा गया। ब्रितानी राज ने अपनी राज्य हड़प नीति के तहत बालक दामोदर राव के खिलाफ अदालत में मुकदमा दायर कर दिया। हालांकि मुकदमे में बहुत बहस हुई, परन्तु इसे खारिज कर दिया गया। ब्रितानी अधिकारियों ने राज्य का खजाना जब्त कर लिया और उनके पति के कर्ज को रानी के सालाना खर्च में से काटने का फरमान जारी कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप रानी को झाँसी का किला छोड़कर झाँसी के रानीमहल में जाना पड़ा, पर रानी लक्ष्मीबाई ने हिम्मत नहीं हारी और उन्होनें हर हाल में झाँसी राज्य की रक्षा करने का निश्चय किया।

झाँसी 1857 के संग्राम का एक प्रमुख केन्द्र बन गया जहाँ हिंसा भड़क उठी। रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी की सुरक्षा को सुदृढ़ करना शुरू कर दिया और एक स्वयंसेवक सेना का गठन प्रारम्भ किया। इस सेना में महिलाओं की भर्ती की गयी और उन्हें युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया। साधारण जनता ने भी इस संग्राम में सहयोग दिया। झलकारी बाई जो लक्ष्मीबाई की हमशक्ल थी को उसने अपनी सेना में प्रमुख स्थान दिया। 1857 के सितम्बर तथा अक्टूबर के महीनों में पड़ोसी राज्य ओरछा तथा दतिया के राजाओं ने झाँसी पर आक्रमण कर दिया। रानी ने सफलतापूर्वक इसे विफल कर दिया। 1858 के जनवरी माह में ब्रितानी सेना ने झाँसी की ओर बढ़ना शुरू कर दिया और मार्च के महीने में शहर को घेर लिया। दो हफ्तों की लड़ाई के बाद ब्रितानी सेना ने शहर पर कब्जा कर लिया। परन्तु रानी दामोदर राव के साथ अंग्रेजों से बच कर भाग निकलने में सफल हो गयी। रानी झाँसी से भाग कर कालपी पहुँची और तात्या टोपे से मिली। तात्या टोपे और रानी की संयुक्त सेनाओं ने ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों की मदद से ग्वालियर के एक किले पर कब्जा कर लिया। बाजीराव प्रथम के वंशज अली बहादुर द्वितीय ने भी रानी लक्ष्मीबाई का साथ दिया और रानी लक्ष्मीबाई ने उन्हें राखी भेजी थी, इसलिए वह भी इस युद्ध में उनके साथ शामिल हुए। 18 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में ब्रितानी सेना से लड़ते-लड़ते रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु हो गई। लड़ाई की रिपोर्ट में ब्रितानी जनरल ह्यूरोज ने टिप्पणी की कि रानी लक्ष्मीबाई अपनी सुन्दरता, चालाकी और दृढ़ता के लिये उल्लेखनीय तो थी ही, विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक खतरनाक भी थी।

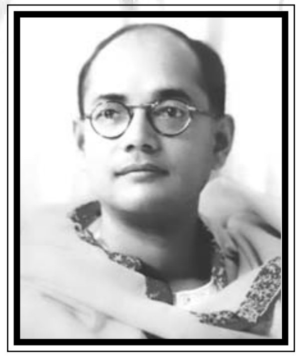

❖ **सुभाष चन्द्र बोस :-** सुभाष चन्द्र बोस भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी तथा सबसे बड़े नेता थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए, उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिन्द फौज का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया 'जय हिन्द' का नारा। 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा' का नारा भी उनका था जो उस समय अत्यधिक प्रचलन में आया। भारतवासी उन्हें नेता जी के नाम से सम्बोधित करते हैं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जब नेता जी ने जापान और जर्मनी से सहायता लेने का प्रयास किया था, तो ब्रिटिश सरकार ने अपने गुप्तचरों को 1941 में उन्हें खत्म करने का आदेश दिया था। नेता जी ने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हॉल के सामने 'सुप्रीम कमाण्डर' (सर्वोच्च सेनापति) के रूप में सेना को सम्बोधित करते हुए 'दिल्ली चलो!' का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश व कॉमनवेल्थ सेना से बर्मा, इम्फाल और कोहिमा में एक साथ जमकर मोर्चा लिया। 21 अक्टूबर 1943 को बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार बनाई जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपीन्स, कोरिया, चीन, इटली, मान्चुको और आयरलैंड सहित 11 देशो की सरकारों ने मान्यता दी थी। जापान ने अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह इस अस्थायी सरकार को दे दिए। सुभाष उन द्वीपों में गए और उनका नया नामकरण किया। 1944 को आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों पर दोबारा आक्रमण किया और कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त भी करा लिया। कोहिमा का युद्ध 4 अप्रैल 1944 से 22 जून 1944 तक लड़ा गया एक भयंकर युद्ध था। इस युद्ध में जापानी सेना को पीछे हटना पड़ा था और यही एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ। 6 जुलाई 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम एक प्रसारण जारी किया जिसमें उन्होंने इस निर्णायक युद्ध में विजय के लिए उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ मांगी।

सुभाष चंद्र बोस का स्वाधिनता में प्रवेश और किये कार्यो के बारे में कहा जाता है कि जवाहरलाल नेहरू के साथ सुभाष ने कांग्रेस के अन्तर्गत युवकों की इण्डिपेण्डेंस लीग शुरू की। 1927 में जब साइमन कमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काले झण्डे दिखाये। कोलकाता में सुभाष ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। साइमन कमीशन को जवाब देने के लिये कांग्रेस ने भारत का भावी संविधान बनाने का काम आठ सदस्यीय आयोग को सौंपा। मोतीलाल नेहरू इस आयोग के अध्यक्ष और सुभाष उसके एक सदस्य थे। इस आयोग ने नेहरू रिपोर्ट पेश की। 1928 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में कोलकाता में हुआ। इस अधिवेशन में सुभाष ने खाकी गणवेश धारण करके मोतीलाल नेहरू को सैन्य तरीके से सलामी दी। गाँधी जी उन दिनों पूर्ण स्वराज्य की माँग से सहमत नहीं थे। इस अधिवेशन में उन्होंने अंग्रेज सरकार से डोमिनियन स्टेट्स माँगने की ठान ली थी। लेकिन सुभाष बाबू और जवाहरलाल नेहरू को पूर्ण स्वराज की माँग से पीछे हटना मंजूर नहीं था। अन्त में यह तय किया गया कि अंग्रेज सरकार को डोमिनियन स्टेट्स देने के लिये एक साल का वक्त दिया जाये। अगर एक साल में अंग्रेज सरकार ने यह माँग पूरी नहीं

की तो कांग्रेस पूर्ण स्वराज की माँग करेगी। परन्तु अंग्रेज सरकार ने यह माँग पूरी नहीं की। इसलिये 1930 में जब कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में हुआ तब ऐसा तय किया गया कि 26 जनवरी का दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जायेगा। 26 जनवरी 1931 को कोलकाता में राष्ट्र ध्वज फहराकर सुभाष एक विशाल मोर्चे का नेतृत्व कर रहे थे तभी पुलिस ने उन पर लाठी चलायी और उन्हें घायल कर जेल भेज दिया। जब सुभाष जेल में थे तब गाँधी जी ने अंग्रेज सरकार से समझौता किया और सब कैदियों को रिहा करवा दिया। लेकिन अंग्रेज सरकार ने भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारियों को रिहा करने से साफ इन्कार कर दिया। भगत सिंह की फाँसी माफ कराने के लिये गाँधी जी ने सरकार से बात तो की परन्तु नरमी के साथ ऐसा बताया जाता है परंतु सत्य कुछ और ही है। सुभाष चाहते थे कि इस विषय पर गाँधीजी अंग्रेज सरकार के साथ किया गया समझौता तोड़ दें। लेकिन गांधीजी अपनी ओर से दिया गया वचन तोड़ने को राजी नहीं थे। अंग्रेज सरकार अपने स्थान पर अड़ी रही और भगत सिंह व उनके साथियों को फाँसी दे दी गयी। भगत सिंह को न बचा पाने पर सुभाष गाँधी और कांग्रेस के तरीकों से बहुत नाराज हो गये।

सन् 1933 से लेकर 1936 तक सुभाष यूरोप में रहे। यूरोप में सुभाष ने अपनी सेहत का ख्याल रखते हुए अपना कार्य बदस्तूर जारी रखा। वहाँ वे इटली के नेता मुसोलिनी से मिले, जिन्होंने उन्हें भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में सहायता करने का वचन दिया। आयरलैंड के नेता डी वलेरा सुभाष के अच्छे दोस्त बन गये। जिन दिनों सुभाष यूरोप में थे उन्हीं दिनों जवाहरलाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू का ऑस्ट्रिया में निधन हो गया। सुभाष ने वहाँ जाकर जवाहरलाल नेहरू को सान्त्वना दी। 1934 में सुभाष को उनके पिता के मृत्युशय्या पर होने की खबर मिली। खबर सुनते ही वे हवाई जहाज से कराची होते हुए कोलकाता लौटे। यद्यपि कराची में ही उन्हे पता चल गया था कि उनके पिता की मृत्यु हो चुकी है फिर भी वे कोलकाता गये। कोलकाता पहुँचते ही अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और कई दिन जेल में रखकर वापस यूरोप भेज दिया। सन् 1934 में जब सुभाष ऑस्ट्रिया में अपना इलाज कराने हेतु ठहरे हुए थे उस समय उन्हें अपनी पुस्तक लिखने हेतु एक अंग्रेजी जानने वाले टाइपिस्ट की आवश्यकता हुई। उनके एक मित्र ने एमिली शेंकल नाम की एक ऑस्ट्रियन महिला से उनकी मुलाकात करा दी। एमिली के पिता एक प्रसिद्ध पशु चिकित्सक थे। सुभाष, एमिली की ओर आकर्षित हुए और उन दोनों में स्वाभाविक प्रेम हो गया। नाजी जर्मनी के सख्त कानूनों को देखते हुए उन दोनों ने सन् 1942 में बाड गास्टिन नामक स्थान पर हिन्दू पद्धति से विवाह रचा लिया। वियेना में एमिली ने एक पुत्री को जन्म दिया। सुभाष ने उसे पहली बार तब देखा जब वह मुश्किल से चार सप्ताह की थी।

बर्लिन में सुभाष सर्वप्रथम रिबेन ट्रोप जैसे जर्मनी के अन्य नेताओं से मिले। उन्होंने जर्मनी में भारतीय स्वतन्त्रता संगठन और आजाद हिन्द रेडियो की स्थापना की। इसी दौरान सुभाष नेताजी के नाम से जाने जाने लगे। जर्मन सरकार के एक मन्त्री एडॅम फॉन ट्रॉट सुभाष के अच्छे दोस्त बन गये। आखिर 29 मई 1942 के दिन, सुभाष जर्मनी के सर्वोच्च नेता एडॉल्फ हिटलर से मिले। लेकिन हिटलर को भारत के विषय में विशेष रुचि नहीं थी। उन्होने सुभाष को सहायता का कोई स्पष्ट वचन नहीं दिया। कई साल पहले हिटलर ने माईन काम्फ नामक आत्मचरित्र लिखा था। इस किताब में उन्होने भारत और भारतीय लोगों की बुराई की थी। इस विषय पर सुभाष ने हिटलर से अपनी नाराजगी व्यक्त की। हिटलर ने अपने किये पर माफी माँगी और माईन काम्फ के अगले संस्करण में वह परिच्छेद निकालने का वचन दिया। अन्त में सुभाष को पता लगा कि हिटलर और जर्मनी से उन्हें कुछ और नहीं मिलने वाला है। इसलिये 8 मार्च 1943 को जर्मनी के कील बन्दरगाह में वे अपने साथी आबिद हसन सफरानी के साथ एक जर्मन पनडुब्बी में बैठकर पूर्वी एशिया की ओर निकल गये। वह जर्मन पनडुब्बी उन्हें हिन्द महासागर में मैडागास्कर के किनारे तक लेकर गयी। वहाँ वे दोनों समुद्र में तैरकर जापानी पनडुब्बी तक पहुँचे। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय किन्हीं भी दो देशों की नौसेनाओं की पनडुब्बियों के द्वारा नागरिकों की यह एकमात्र अदला-बदली हुई थी। यह जापानी पनडुब्बी उन्हें इंडोनेशिया के पादांग बन्दरगाह तक पहुँचाकर आयी।

आजाद हिन्द फौज में जापानी सेना ने अंग्रेजों की फौज से पकड़े हुए भारतीय युद्धबन्दियों को भर्ती किया था। आजाद हिन्द फौज में औरतों के लिये झाँसी की रानी रेजिमेंट भी बनायी गयी। पूर्वी एशिया में नेताजी ने अनेक भाषण देकर वहाँ के स्थायी भारतीय लोगों से आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने और उसे आर्थिक मदद देने का आह्वान किया। उन्होंने अपने आह्वान में यह सन्देश भी दिया-'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान आजाद हिन्द फौज ने जापानी सेना के सहयोग से भारत पर आक्रमण किया। अपनी फौज को प्रेरित करने के लिये नेताजी ने 'दिल्ली चलो' का नारा दिया। दोनों फौजों ने अंग्रेजों से अंदमान और निकोबार द्वीप जीत लिये। यह द्वीप आर्जी-हुकूमते-आजाद-हिन्द के अनुशासन में रहे। नेताजी ने इन द्वीपों को 'शहीद द्वीप' और 'स्वराज द्वीप' का नया नाम दिया। दोनों फौजों ने मिलकर इंफाल और कोहिमा पर आक्रमण किया। लेकिन बाद में अंग्रेजों का पलड़ा भारी पड़ा और दोनों फौजों को पीछे हटना पड़ा। जब आजाद हिन्द फौज पीछे हट रही थी तब जापानी सेना ने नेताजी के भाग जाने की व्यवस्था की। परन्तु नेताजी ने झाँसी की रानी रेजिमेंट की लड़कियों के साथ सैकड़ों मील चलते रहना पसन्द किया। इस प्रकार नेताजी ने सच्चे नेतृत्व का एक आदर्श प्रस्तुत किया। 6 जुलाई 1944 को आजाद हिन्द रेडियो पर अपने भाषण के माध्यम से गान्धीजी को सम्बोधित करते हुए नेताजी ने जापान से सहायता लेने का अपना कारण और आर्जी-हुकूमते-आजाद-हिन्द तथा आजाद हिन्द फौज की स्थापना के उद्देश्य के बारे में बताया। इस भाषण के दौरान नेताजी ने गान्धीजी को राष्ट्रपिता कहा तभी गांधीजी ने भी उन्हे नेताजी कहा।

सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु को लेकर आज भी विवाद है। जापान में प्रतिवर्ष 18 अगस्त को उनका शहीद दिवस मनाया जाता है परन्तु भारत में रहने वाले उनके परिवार के लोगों का आज भी यह मानना है कि सुभाष की मौत 1945 में नहीं हुई। वे उसके बाद रूस में नजरबन्द थे। यदि ऐसा नहीं है तो भारत सरकार ने उनकी मृत्यु से संबंधित दस्तावेज अब तक सार्वजनिक नहीं किए क्योंकि नेता जी की मृत्यु नहीं हुई थी। 16 जनवरी 2014 (गुरुवार) को कलकत्ता उच्च न्यायालय ने नेता जी के लापता होने के रहस्य से जुड़े खुफिया दस्तावेजों को सार्वजनिक करने की मांग वाली जनहित याचिका पर सुनवाई के लिए विशेष पीठ के गठन का आदेश दिया। आजाद हिन्द सरकार के 75 वर्ष पूर्ण होने पर इतिहास में पहली बार वर्ष 2018 में भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किला पर तिरंगा फहराया। 23 जनवरी 2021 को नेताजी की 125वीं जयंती थी जिसे भारत सरकार के निर्णय के तहत पराक्रम दिवस के रूप में मनाया गया। 8 सितम्बर 2022 को नई दिल्ली में राजपथ, जिसका नामकरण कर्तव्यपथ किया गया, पर नेताजी की विशाल प्रतिमा का अनावरण किया गया।

❖ **अरविन्द घोष :-** अरविन्द घोष या श्री अरविन्द एक योगी एवं दार्शनिक थे। वे 15 अगस्त 1872 को कलकत्ता में जन्मे थे। इनके पिता एक डाक्टर थे। इन्होंने युवा अवस्था में स्वतन्त्रता संग्राम में क्रान्तिकारी के रूप में भाग लिया, किन्तु बाद में यह एक योगी बन गये और इन्होंने पांडिचेरी में एक आश्रम स्थापित किया। वेद, उपनिषद ग्रन्थों आदि पर टीका लिखी।

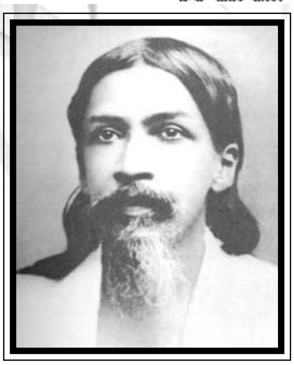

योग साधना पर मौलिक ग्रन्थ लिखे। उनका पूरे विश्व में दर्शन शास्त्र पर बहुत प्रभाव रहा है और उनकी साधना पद्धति के अनुयायी सब देशों में पाये जाते हैं। यह कवि भी थे और गुरु भी। अरविन्द के पिता डॉक्टर कृष्णधन घोष उन्हें उच्च शिक्षा दिला कर उच्च सरकारी पद दिलाना चाहते थे, अतएव मात्र 7 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने इन्हें इंग्लैण्ड भेज दिया। उन्होंने केवल 18 वर्ष की आयु में ही आई० सी० एस० की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। इसके साथ ही उन्होंने अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, ग्रीक एवं इटैलियन भाषाओँ में भी निपुणता प्राप्त की थी। देशभक्ति से प्रेरित इस युवा ने जानबूझ कर घुड़सवारी की परीक्षा देने से इनकार कर दिया और राष्ट्र-सेवा करने की ठान ली। इनकी प्रतिभा से बड़ौदा नरेश अत्यधिक प्रभावित थे, अत: उन्होंने इन्हें अपनी रियासत में शिक्षा शास्त्री के रूप में नियुक्त कर लिया। बड़ौदा में ये प्राध्यापक, वाइस प्रिंसिपल, निजी सचिव आदि कार्य योग्यता पूर्वक करते रहे और इस दौरान हजारों छात्रों को चरित्रवान देशभक्त बनाया। 1896 से 1905 तक उन्होंने बड़ौदा रियासत में राजस्व अधिकारी से लेकर बड़ौदा कॉलेज के फ्रेंच अध्यापक और उपाचार्य रहने तक रियासत की सेना में क्रान्तिकारियों को प्रशिक्षण भी दिलाया था। हजारों युवकों को उन्होंने क्रान्ति की दीक्षा दी थी। वे निजी रुपये-पैसे का हिसाब नहीं रखते थे परन्तु राजस्व विभाग में कार्य करते समय उन्होंने जो विश्व की प्रथम आर्थिक विकास योजना बनायी उसका कार्यान्वियन करके बड़ौदा राज्य देशी रियासतों में अन्यतम बन गया था। लार्ड कर्जन के बंग-भंग की योजना रखने पर सारा देश तिलमिला उठा। बंगाल में इसके विरोध के लिये जब उग्र आन्दोलन हुआ तो अरविन्द घोष ने इसमे सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने किशोरगंज (वर्तमान में बंगलादेश में) में स्वदेशी आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। अब वे केवल धोती, कुर्ता और चादर ही पहनते थे। उसके बाद उन्होंने राष्ट्रीय विद्यालय से भी अलग होकर अग्निवर्षी पत्रिका बन्दे मातरम् (पत्रिका) का प्रकाशन प्रारम्भ किया। ब्रिटिश सरकार इनके क्रन्तिकारी विचारों और कार्यों से अत्यधिक आतंकित थी अत: 2 मई 1908 को चालीस युवकों के साथ उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इतिहास में इसे 'अलीपुर षड्यन्त्र केस' के नाम से जानते हैं। उन्हें एक वर्ष तक अलीपुर जेल में कैद रखा गया। अलीपुर जेल में ही उन्हें हिन्दू धर्म एवं हिन्दू-राष्ट्र विषयक अद्‌भुत आध्यात्मिक अनुभूति हुई। इस षड्यन्त्र में अरविन्द को शामिल करने के लिये सरकार की ओर से जो गवाह तैयार किया था उसकी एक दिन जेल में ही हत्या कर दी गयी। घोष के पक्ष में प्रसिद्ध बैरिस्टर चितरंजन दास ने मुकदमे की पैरवी की थी। उन्होने अपने प्रबल तर्को के आधार पर अरविन्द को सारे अभियोगों से मुक्त घोषित करा दिया। इससे सम्बन्धित अदालती फैसले 6 मई 1909 को जनता के सामने आये। 30 मई 1909 को उत्तरपाड़ा में एक संवर्धन सभा की गयी वहाँ अरविन्द का एक प्रभावशाली व्याख्यान हुआ जो इतिहास में उत्तरपाड़ा अभिभाषण के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने अपने इस अभिभाषण में धर्म एवं राष्ट्र विषयक कारावास-अनुभूति का विशद विवेचन करते हुए कहा था। जब मुझे आप लोगों के द्वारा आपकी सभा में कुछ कहने के लिए कहा गया तो में आज एक विषय हिन्दू धर्म पर कहूँगा। मुझे नहीं पता कि मैं अपना आशय पूर्ण कर पाउँगा या नहीं। जब में यहाँ बैठा था तो मेरे मन में आया कि मुझे आपसे बात करनी चाहिए। एक शब्द पूरे भारत से कहना चाहिये। यही शब्द मुझसे सबसे पहले जेल में कहा गया और अब यह आपको कहने के लिये मैं जेल से बाहर आया हूँ। एक साल हो गया है मुझे यहाँ आए हुए। पिछली बार आया था तो यहाँ राष्ट्रीयता के बड़े-बड़े प्रवर्तक मेरे साथ बैठे थे। यह तो वह सब था जो एकान्त से बाहर आया जिसे ईश्वर ने भेजा था ताकि जेल के एकान्त में वह इश्वर के शब्दों को सुन सके। यह तो वह ईश्वर ही था जिसके कारण आप यहाँ हजारों की संख्या में आये। अब वह बहुत दूर है हजारों मील दूर।

❖ **खुदीराम बोस** :- भारतीय स्वाधीनता के लिये मात्र 18 वर्ष की आयु में भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के लिए फाँसी पर चढ़ गये। कुछ इतिहासकारों की यह धारणा है कि वे अपने देश के लिये फाँसी पर चढ़ने वाले सबसे कम उम्र के ज्वलन्त तथा युवा क्रान्तिकारी देशभक्त थे, किन्तु खुदीराम से पूर्व 17 जनवरी 1872 को 68 कूकाओं के सार्वजनिक नरसंहार के समय 13 वर्ष का एक बालक भी शहीद हुआ था। उपलब्ध तथ्यानुसार उस बालक को, जिसका नंबर 50वाँ था, जैसे ही तोप के सामने लाया गया, उसने लुधियाना के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर कावन की दाढ़ी कसकर पकड़ ली और तब तक नहीं छोड़ी जब तक उसके दोनों हाथ तलवार से काट नहीं दिये गए। बाद में उसे उसी तलवार से मौत के घाट उतार दिया गया था। खुदीराम का जन्म 3 दिसम्बर 1889 को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के बहुवैनी नामक गाँव में कायस्थ परिवार में बाबू त्रैलोक्यनाथ बोस के यहाँ हुआ था। उनकी माता का नाम लक्ष्मीप्रिया देवी था। बालक खुदीराम के मन में देश को आजाद कराने की ऐसी लगन लगी कि नौवीं कक्षा के बाद ही पढ़ाई छोड़ दी और स्वदेशी आन्दोलन में कूद पड़े। स्कूल छोड़ने के बाद खुदीराम रिवोल्यूशनरी पार्टी के सदस्य बने और वन्दे मातरम् पैफलेट वितरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 1905 में बंगाल के विभाजन (बंग-भंग) के विरोध में चलाये गये आन्दोलन में उन्होंने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। फरवरी 1906 में मिदनापुर में एक औद्योगिक तथा कृषि प्रदर्शनी लगी हुई थी। प्रदर्शनी देखने के लिये आसपास के प्रान्तों से सैंकडों लोग आने लगे। बंगाल के एक क्रान्तिकारी सत्येन्द्रनाथ द्वारा लिखे 'सोनार बांगला' नामक ज्वलंत पत्रक की प्रतियाँ खुदीरामने इस प्रदर्शनी में बाँटी। एक पुलिस वाला उन्हें पकडने के लिये भागा। खुदीराम ने इस सिपाही के मुँह पर घूँसा मारा और शेष पत्रक बगल में दबाकर भाग गये। इस प्रकरण में राजद्रोह के आरोप में सरकार ने उन पर अभियोग चलाया परन्तु गवाही न मिलने से खुदीराम निर्दोष छूट गये। इतिहासवेत्ता मालती मलिक के अनुसार 28 फरवरी 1906 को खुदीराम बोस गिरफ्तार कर लिये गये लेकिन वह कैद से भाग निकले। लगभग दो महीने बाद अप्रैल में वह फिर से पकड़े गये। 16 मई 1906 को उन्हें रिहा कर दिया गया। 6 दिसंबर 1907 को खुदीराम ने नारायणगढ़ रेलवे स्टेशन पर बंगाल के गवर्नर की विशेष ट्रेन पर हमला किया परन्तु गवर्नर बच गया। सन 1908 में उन्होंने दो अंग्रेज अधिकारियों वाट्सन और पैम्फायल्ट फुलर पर बम से हमला किया लेकिन वे भी बच निकले। मिदनापुर में 'युगान्तर' नाम की क्रान्तिकारियों की गुप्त संस्था के माध्यम से खुदीराम क्रान्तिकार्यों पहले ही में जुट चुके थे। 1905 में लॉर्ड कर्जन ने जब बंगाल का विभाजन किया तो उसके विरोध में सड़कों पर उतरे अनेकों भारतीयों को उस समय के कलकत्ता के मॅजिस्ट्रेट किंग्जफोर्ड ने क्रूर दण्ड दिया। अन्य मामलों में भी उसने क्रान्तिकारियों को बहुत कष्ट दिया था। इसके परिणामस्वरूप किंग्जफोर्ड को पदोन्नति देकर मुजफ्फरपुर में सत्र न्यायाधीश के पद पर भेजा। 'युगान्तर' समिति कि एक गुप्त बैठक में

किंग्जफोर्ड को ही मारने का निश्चय हुआ। इस कार्य हेतु खुदीराम तथा प्रफुल्ल कुमार चाकी का चयन किया गया। खुदीराम को एक बम और पिस्तौल दी गयी। प्रफुल्लकुमार को भी एक पिस्तौल दी गयी। मुजफ्फरपुर में आने पर इन दोनों ने सबसे पहले किंग्जफोर्ड के बँगले की निगरानी की। उन्होंने उसकी बग्घी तथा उसके घोड़े का रंग देख लिया। खुदीराम तो किंग्जफोर्ड को उसके कार्यालय में जाकर ठीक से देख भी आए। 30 अप्रैल 1908 को ये दोनों नियोजित काम के लिये बाहर निकले और किंग्जफोर्ड के बँगले के बाहर घोड़ागाड़ी से उसके आने की राह देखने लगे। बँगले की निगरानी हेतु वहाँ मौजूद पुलिस के गुप्तचरों ने उन्हें हटाना भी चाहा परन्तु वे दोनो उन्हें योग्य उत्तर देकर वहीं रुके रहे। रात में साढ़े आठ बजे के आसपास क्लब से किंग्जफोर्ड की बग्घी के समान दिखने वाली गाड़ी आते हुए देखकर खुदीराम गाड़ी के पीछे भागने लगे। रास्ते में बहुत ही अँधेरा था। गाड़ी किंग्जफोर्ड के बँगले के सामने आते ही खुदीराम ने अँधेरे में ही आने वाली बग्घी पर निशाना लगाकर जोर से बम फेंका। हिन्दुस्तान में इस पहले बम विस्फोट की आवाज उस रात तीन मील तक सुनाई दी और कुछ दिनों बाद तो उसकी आवाज इंग्लैंड तथा योरोप में भी सुनी गयी जब वहाँ इस घटना की खबर ने तहलका मचा दिया। यूँ तो खुदीराम ने किंग्जफोर्ड की गाड़ी समझकर बम फेंका था परन्तु उस दिन किंग्जफोर्ड थोड़ी देर से क्लब से बाहर आने के कारण बच गया। दैवयोग से गाडियाँ एक जैसी होने के कारण दो यूरोपीय स्त्रियों को अपने प्राण गँवाने पड़े। खुदीराम तथा प्रफुल्लकुमार दोनों ही रातों-रात नंगे पैर भागते हुए गये और 24 मील दूर स्थित वैनी रेलवे स्टेशन पर जाकर ही विश्राम किया। अंग्रेज पुलिस उनके पीछे लग गयी जैसे ही वैनी रेलवे स्टेशन पर खुदीराम पहुंचे वहा मौजूद दो सिपाहिकर्मी जिनके नाम फतेह सिंग और शेव पार्षद थे उन्हें खुदीराम के चाल चलन पर तब शक हुआ जब वो किसी चाय की दुकान पर पानी मांग रहा था साथ ही उसके मैले कपड़े और थकान की वजह। इतना कुछ देखने पर वे उनके नजदीक गए उन्होंने खुदीराम से कुछ सवाल पूछे कई जवाब ठीक से ना मिलने से दोनो का शक गहराता गया, उन्होंने उसको झप लिया खुदीराम ने उनसे छुड़ाने का काफी प्रयास किया, लेकिन वो विफल रहा और आखिरकार पकड़ लिया गया। इधर दूसरी ओर अपने सहकर्मी खुदीराम से बिछड़ ने के बाद प्रफुल्लकुमार काफी दूर तक भागने में कामयाब रहे तकरीबन दोपहर के वक्त एक व्यक्ति त्रिगुणचर्न घोष ने उन्हें अपनी और भागते हुए देखा उन्हें बमबारी के घटना के बारे मे जानकारी मिल चुकी थी और समझ चुके थे की यह शख्स उन क्रांतिकारियों में से है। उन्होंने उसे पनाह देने का फैसला किया उसी रात वो खुद प्रफुल्ल के साथ रेलवे स्टेशन कोलकाता छोड़ने निकले हावड़ा के नजदीक आने के बाद ब्रिटिश सब-इंस्पेक्टर बनर्जी भी उसी ट्रेन में सवार थे। कुछ देर बाद उन्हें प्रफुल्ल के असलियत के बारे में पता चला प्रफुल्ल भी समझ चुके थे की वो घिर चुका है। पकड़ में आने से पहले ही वे वहा से भाग निकला लेकिन अपने आप को चारो ओर घिरा देख प्रफुल्ल कुमार चाकी ने खुद को गोली मारकर अपनी शहादत दे दी और यहा खुदीराम के गिरफ्तार होने के कुछ दिन बाद 11 अगस्त 1908 को उन्हें मुजफ्फरपुर जेल में फाँसी दे दी गयी। उस समय उनकी उम्र मात्र 18+ वर्ष थी। दूसरे दिन सन्देह होने पर प्रफुल्ल कुमार चाकी को पुलिस पकड़ने गयी, तब उन्होंने स्वयं पर गोली चलाकर अपने प्राणार्पण कर दिये। खुदीराम को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इस गिरफ्तारी का अन्त निश्चित ही था। 11 अगस्त 1908 को भगवद्गीता हाथ में लेकर खुदीराम धैर्य के साथ खुशी-खुशी फाँसी चढ़ गये। किंग्जफोर्ड ने घबराकर नौकरी छोड़ दी और जिन क्रान्तिकारियों को उसने कष्ट दिया था, उनके भय से उसकी शीघ्र ही मौत भी हो गयी। फाँसी के बाद खुदीराम इतने लोकप्रिय हो गये कि बंगाल के जुलाहे एक खास किस्म की धोती बुनने लगे। इतिहासवेत्ता शिरोल के अनुसार बंगाल के राष्ट्रवादियों के लिये वह वीर शहीद और अनुकरणीय हो गया। विद्यार्थियों तथा अन्य लोगों ने शोक मनाया। कई दिन तक स्कूल कालेज सभी बन्द रहे और नौजवान ऐसी धोती पहनने लगे, जिनकी किनारी पर खुदीराम लिखा होता था।

❖ **प्रफुल्ल चाकी :-** प्रफुल्ल का जन्म 10 दिसम्बर 1888 को उत्तरी बंगाल के बोगरा जिला (अब बांग्लादेश में स्थित) के बिहारी गाँव में हुआ था। जब प्रफुल्ल दो वर्ष के थे तभी उनके पिता जी का निधन हो गया। उनकी माता ने अत्यन्त कठिनाई से प्रफुल्ल का पालन-पोषण किया। विद्यार्थी जीवन में ही प्रफुल्ल का परिचय स्वामी महेश्वरानन्द द्वारा स्थापित गुप्त क्रांतिकारी संगठन से हुआ। प्रफुल्ल ने स्वामी विवेकानंद के साहित्य का अध्ययन किया और वे उससे बहुत प्रभावित हुए। अनेक क्रांतिकारियों के विचारों का भी प्रफुल्ल ने अध्ययन किया, इससे उनके अन्दर देश को स्वतंत्र कराने की भावना बलवती हो गई। बंगाल विभाजन के समय अनेक लोग इसके विरोध में उठ खड़े हुए। अनेक विद्यार्थियों ने भी इस आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रफुल्ल ने भी इस आन्दोलन में भाग लिया। वे उस समय रंगपुर जिला स्कूल में कक्षा 9 के छात्र थे। प्रफुल्ल को आन्दोलन में भाग लेने के कारण उनके विद्यालय से निकाल दिया गया। इसके बाद प्रफुल्ल का सम्पर्क क्रांतिकारियों की युगान्तर पार्टी से हुआ।

कोलकाता का चीफ प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड क्रांतिकारियों को अपमानित करने और उन्हें दण्ड देने के लिए बहुत बदनाम था। क्रांतिकारियों ने किंग्सफोर्ड को जान से मार डालने का निर्णय लिया। यह कार्य प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस को सौंपा गया। ब्रिटिश सरकार ने किंग्सफोर्ड के प्रति जनता के आक्रोश को भाँप कर उसकी सरक्षा की दृष्टि से उसे सेशन जज बनाकर मुजफ्फरपुर भेज दिया। दोनों क्रांतिकारी प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस उसके पीछे-पीछे मुजफ्फरपुर पहुँच गए। दोनों ने किंग्सफोर्ड की गतिविधियों का बारीकी से अध्ययन किया। इसके बाद 30 अप्रैल 1908 ई० को किंग्सफोर्ड पर उस समय बम फेंक दिया जब वह बग्घी पर सवार होकर यूरोपियन क्लब से बाहर निकल रहा था। लेकिन जिस बग्घी पर बम फेंका गया था उस पर किंग्सफोर्ड नहीं था बल्कि बग्घी पर दो यूरोपियन महिलाएँ सवार थीं। वे दोनों इस हमले में मारी गईं। दोनों क्रांतिकारियों ने समझ लिया कि वे किंग्सफोर्ड को मारने में सफल हो गए हैं। वे दोनों घटनास्थल से भाग निकले। प्रफुल्ल चाकी ने समस्तीपुर पहुँच कर कपड़े बदले और टिकिट खरीद कर रेलगाड़ी में बैठ गए। दुर्भाग्य से उसी में पुलिस का सब इंस्पेक्टर नंदलाल बनर्जी बैठा था। उसने प्रफुल्ल चाकी को गिरफ्तार करने के उद्देश्य से अगली स्टेशन को सूचना दे दी। स्टेशन पर रेलगाड़ी के रुकते ही प्रफुल्ल को पुलिस ने पकड़ना चाहा लेकिन वे बचने के लिए दौड़े। परन्तु जब प्रफुल्ल ने देखा कि वे चारों ओर से घिर गए हैं तो उन्होंने अपनी रिवाल्वर से अपने ऊपर गोली चलाकर अपनी जान दे दी। यह घटना 1 मई 1908 की है। बिहार के मोकामा स्टेशन के पास प्रफुल्ल चाकी की मौत के बाद पुलिस उपनिरीक्षक एनएन बनर्जी ने चाकी का सिर काट कर उसे सबूत के तौर पर मुजफ्फरपुर की अदालत में पेश किया। यह अंग्रेज शासन की जघन्यतम घटनाओं में शामिल है। खुदीराम को बाद में गिरफ्तार किया गया था व उन्हें फांसी दे दी गई थी।

❖ **कन्हाई लाल दत्त :-** कन्हाईलाल दत्त भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक क्रान्तिकारी थे। वे युगान्तर से सम्बद्ध थे। उनका जन्म पश्चिम बंगाल

के चन्दननगर में कायस्थ परिवार में 30 अगस्त 1888 को हुआ था। चन्दन नगर तब फ्रांसीसी उपनिवेश था। चन्दन नगर के डुप्ले कालेज से उन्होंने स्नातक की परीक्षा दी थी। उसी कालेज के एक प्राध्यापक चारु चन्द्र राय से गहनता के कारण कन्हाई को क्रान्ति पथ का परिचय प्राप्त हुआ था। चन्दन नगर में सर्वप्रथम क्रान्ति की योजना बनाने वाले थे-संध्या के सम्पादक ब्रम्हबाधव उपाध्याय। कन्हाई उनके सम्पर्क में भी अपने प्राध्यापक के माध्यम से ही आये थे। खुदीराम बोस द्वारा किये गये मुजफ्फरपुर बम काण्ड के उपरान्त अंग्रेजी राज्य की रातों की नींद हराम हो गयी थी। सारा अंग्रेजी शासन चौकन्ना हो हो गया था। चारो ओर संदिग्ध लोगो की खोज आरम्भ कर दी गयी थी। खूब दौड़-धूप के बाद पुलिस को पता चला कि इन क्रान्तिकारियो का अड्डा मानिकतल्ला के एक बगीचे में है। यह बगीचा अरविन्द घोष के भाई सिविल सर्जन डॉक्टर वारीन्द्र घोष का था। गुप्तचर विभाग वहां से क्रान्तिकारियो की गतिविधि पर दृष्टि रखने लगे। दुर्भाग्य से क्रान्तिकारी की गुप्तचर विभाग की इस कारस्तानी से सर्वथा अनभिज्ञ रहे। इसका परिणाम क्रान्तिकारियों के लिए भारी संकटकारी साबित हुआ। गुप्तचर विभाग को इससे सफलता मिली और उसने देश के सर्वप्रथम बम षड्यंत्र का पर्दाफाश कर दिया। इसमें बगीचे के मालिक वारींद्र घोष, उनके भाई अरविन्द घोष, नलिनी, कन्हाई लाल दत्त समेत लगभग 35 देशभक्त लोगो को बन्दी बनाने में पुलिस सफल हो गयी। इन सब बन्दियो को अलीपुर कारागार में रखा गया था और वही पर इन क्रान्तिकारियो पर अभियोग चलाया गया। इसी कारण इस अभियोग का नाम अलीपुर षड्यंत्र रखा गया था। कन्हाई लाल दत्त के साथ-साथ उसके प्रेरक प्रोफेसर चारु चन्द्र राय भी बन्दी बनाये गये थे। सब पर अभियोग चला किन्तु चारू चन्द्र राय को फ्रांसीसी सरकार की बस्ती का नागरिक होने के कारण रिहा कर दिया गया। अलीपुर अभियोग में भी नरेन्द्र गोस्वामी नामक का एक व्यक्ति भी बन्दी बनाया गया था, जिसने सरकारी गवाह बनना स्वीकार कर लिया। उसके इस देशद्रोह से क्रान्तिकारियो के रहे-सहे प्रयत्नों पर पर पानी फिर जाने की आशंका होने लगी। यद्यपि नरेन्द्र के इस कुकृत्य की देशभक्त समुदाय द्वारा चारो ओर भर्त्सना होती रही किन्तु इससे अभियोग में तो किसी प्रकार की सहायता मिलने की संभावना थी ही नही। यहाँ तक कि अभियोग के दौरान ही एक दिन भरी अदालत में किसी अभियुक्त ने उसको लात तक मार दी थी। उसका परिणाम यह हुआ कि एक तो वह इन बन्दियो के सामने आने से सदा बचता रहा और दूसरे सरकार ने भी उसके लिए सुरक्षा की व्यवस्था कर दी। उसको दो सरकारी अंगरक्षक दिए गये। अब जेल में ही कन्हाई लाल दत्त और सत्येन्द्र बसु ने इस देशद्रोही को सबक सिखाने की एक अदभुत योजना बना डाली। उन्होंने निश्चय किया कि नरेंद्र अपना ब्यान पूरा करे उससे पूर्व ही उसको इस संसार से प्रयाण कर लेना चाहिए। कन्हाई लाल दत्त और सत्येन्द्र की बुद्धि निरंतर कार्य कर रही थी। उन्होंने सबसे पहले जेल के वाडरो से घनिष्ठता बढ़ाई, उन्हें बहुत हद तक प्रभावित कर लिया। उसके फलस्वरूप जेल के भीतर लाये जाने वाले कटहल- मछली के भीतर रखी दो पिस्तौल को प्राप्त करने में वो सफल हो गये। उसमे किसी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं हुई। वे पिस्तौल किन वाडरो द्वारा आयोजित किये गये और किसने बाहर से भेजे थी, इस तथ्य को बाह्य जगत कभी नहीं जान पाया। सितम्बर माह की तिथि निकट आ गयी, जिस तिथि को नरेन्द्र को अपना वक्तव्य देना निर्धारित किया गया था। नरेन्द्र नियमित रूप से प्रतिदिन सत्येन्द्र और कन्हाई लाल के पास मिलने के लिए आता था। 31 अगस्त 1908 के दिन भी वह अपने समय पर उनके पास आया, तभी सत्येन्द्र ने अपने सिरहाने रखी पिस्तौल से नरेन्द्र पर वार किया। गोली उसके पैर में लगी किन्तु वह उससे गिरा नहीं। सत्येन्द्र ने तभी दूसरी गोली चलाई तब तक नरेन्द्र भागने लगा था। सत्येन्द्र और कन्हाई दोनों ने उसके निकट पहुंचकर उसे गोलियों से छलनी कर दिया। कन्हाई को 10 नवम्बर 1908 को फांसी देने का दिन तय किया गया तो वही सत्येन्द्र को दो दिन बाद प्राण दण्ड दिया गया।

❖ **मदन लाल ढींगरा :-** मदन लाल ढींगरा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अप्रतिम क्रान्तिकारी थे। भारतीय स्वतंत्रता की चिनगारी को अग्नि में बदलने का श्रेय महान शहीद मदन लाल धींगरा को ही जाता है। भले ही मदन लाल ढींगरा के परिवार में राष्ट्रभक्ति की कोई ऐसी परंपरा नहीं थी किंतु वह खुद से ही देश भक्ति के रंग में रंगे गए थे। मदन लाल धींगड़ा का जन्म 18 फरवरी सन् 1883 को पंजाब प्रान्त के एक सम्पन्न हिन्दू परिवार में हुआ था। उनके पिता दित्तामल जी सिविल सर्जन थे और अंग्रेजी रंग में पूरी तरह रंगे हुए थे किन्तु माताजी अत्यन्त धार्मिक एवं भारतीय संस्कारों से परिपूर्ण महिला थीं। उनका परिवार अंग्रेजों का विश्वासपात्र था और जब मदनलाल को भारतीय स्वतन्त्रता सम्बन्धी क्रान्ति के आरोप में लाहौर के एक कालेज से निकाल दिया गया तो परिवार ने मदनलाल से नाता तोड़ लिया। मदनलाल को जीवन यापन के लिये पहले एक क्लर्क के रूप में, फिर एक तांगा-चालक के रूप में और अन्त में एक कारखाने में श्रमिक के रूप में काम करना पड़ा। कारखाने में श्रमिकों की दशा सुधारने हेतु उन्होने यूनियन (संघ) बनाने की कोशिश की किन्तु वहाँ से भी उन्हें निकाल दिया गया। कुछ दिन उन्होंने मुम्बई में काम किया फिर अपने बड़े भाई की सलाह पर सन् 1906 में उच्च शिक्षा प्राप्त करने इंग्लैण्ड चले गये जहाँ उन्होंने यूनिवर्सिटी कालेज लन्दन में यांत्रिकी अभियांत्रिकी में प्रवेश ले लिया। विदेश में रहकर अध्ययन करने के लिये उन्हें उनके बड़े भाई ने तो सहायता दी ही, इंग्लैण्ड में रह रहे कुछ राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं से भी आर्थिक मदद मिली थी। लन्दन में धींगड़ा भारत के प्रख्यात राष्ट्रवादी विनायक दामोदर सावरकर एवं श्यामजी कृष्ण वर्मा के सम्पर्क में आये। वे लोग धींगड़ा की प्रचण्ड देशभक्ति से बहुत प्रभावित हुए। ऐसा विश्वास किया जाता है कि सावरकर ने ही मदनलाल को अभिनव भारत नामक क्रान्तिकारी संस्था का सदस्य बनाया और हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया। मदनलाल धींगड़ा इण्डिया हाउस में रहते थे जो उन दिनों भारतीय विद्यार्थियों के राजनैतिक क्रियाकलापों का केन्द्र हुआ करता था। ये लोग उस समय खुदीराम बोस, कन्हाई लाल दत्त, सतिन्दर पाल और काशी राम जैसे क्रान्तिकारियों को मृत्युदण्ड दिये जाने से बहुत क्रोधित थे। कई इतिहासकार मानते हैं कि इन्ही घटनाओं ने सावरकर और धींगड़ा को सीधे बदला लेने के लिये विवश किया। 1 जुलाई सन् 1909 की शाम को इण्डियन नेशनल ऐसोसिएशन के वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिये भारी संख्या में भारतीय और अंग्रेज इकट्ठे हुए। जैसे ही भारत सचिव के राजनीतिक सलाहकार सर विलियम हट कर्जन वायली अपनी पत्नी के साथ हॉल में घुसे, ढींगरा ने उनके चेहरे पर पाँच गोलियाँ दागी; इसमें से चार सही निशाने पर लगीं। उसके बाद धींगड़ा ने अपने पिस्तौल से स्वयं को भी गोली मारनी चाही किन्तु उन्हें पकड़ लिया गया। फिर बाद में 23 जुलाई 1909 को धींगड़ा

मामले की सुनवाई पुराने बेली कोर्ट में हुई। अदालत ने उन्हें मृत्युदण्ड का आदेश दिया और 17 अगस्त सन् 1909 को लन्दन की पेंटविले जेल में फाँसी पर लटका कर उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी। मदनलाल मर कर भी अमर हो गये। इनका स्मारक अजमेर में रेलवे स्टेशन के ठीक सामने है।

❖ **जतीन्द्रनाथ मुखर्जी (बाघा जतीन) :-** बाघा जतीन के बचपन का नाम जतीन्द्रनाथ मुखर्जी (यतीन्द्रनाथ मुखोपाध्याय) था। वे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध कार्यकारी दार्शनिक क्रान्तिकारी थे। वे युगान्तर पार्टी के मुख्य नेता थे। युगान्तर पार्टी बंगाल में क्रान्तिकारियों का प्रमुख संगठन थी। जतीन्द्र नाथ मुखर्जी का जन्म जैसोर जिले में सन् 1879 ईसवी में हुआ था। पाँच वर्ष की अल्पायु में ही उनके पिता का देहावसान हो गया। माँ ने बड़ी कठिनाई से उनका लालन-पालन किया। 18 वर्ष की आयु में उन्होंने मैट्रिक पास कर ली और परिवार के जीविकोपार्जन हेतु स्टेनोग्राफी सीखकर कलकत्ता विश्वविद्यालय से जुड़ गए। वह बचपन से हई बड़े बलिष्ठ थे। सत्यकथा है कि 27 वर्ष की आयु में एक बार जंगल से गुजरते हुए उनकी मुठभेड़ एक बाघ (रॉयल बेन्गाल टाइगर) से हो गयी। उन्होंने बाघ को अपने हंसिये से मार गिराया था। इस घटना के बाद यतीन्द्रनाथ 'बाघा जतीन' नाम से विख्यात हो गए थे। उन्हीं दिनों अंग्रेजों ने बंग-भंग की योजना बनायी। बंगालियों ने इसका विरोध खुल कर किया। यतींद्र नाथ मुखर्जी का नया खून उबलने लगा। उन्होंने साम्राज्यशाही की नौकरी को लात मारकर आन्दोलन की राह पकड़ी। सन् १९१० में एक क्रांतिकारी संगठन में काम करते वक्त यतींद्र नाथ 'हावड़ा षडयंत्र केस' में गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें साल भर की जेल काटनी पड़ी। जेल से मुक्त होने पर वह 'अनुशीलन समिति' के सक्रिय सदस्य बन गए और 'युगान्तर' का कार्य संभालने लगे। उन्होंने अपने एक लेख में उन्हीं दिनों लिखा था-'पूंजीवाद समाप्त कर श्रेणीहीन समाज की स्थापना क्रांतिकारियों का लक्ष्य है। देसी-विदेशी शोषण से मुक्त कराना और आत्मनिर्णय द्वारा जीवनयापन का अवसर देना हमारी मांग है।' क्रांतिकारियों के पास आन्दोलन के लिए धन जुटाने का प्रमुख साधन डकैती था। दुलरिया नामक स्थान पर भीषण डकैती के दौरान अपने ही दल के एक सहयोगी की गोली से क्रांतिकारी अमृत सरकार घायल हो गए। विकट समस्या यह खड़ी हो गयी कि धन लेकर भागें या साथी के प्राणों की रक्षा करें! अमृत सरकार ने जतींद्र नाथ से कहा कि धन लेकर भागो। जतींद्र नाथ इसके लिए तैयार न हुए तो अमृत सरकार ने आदेश दिया-'मेरा सिर काट कर ले जाओ ताकि अंग्रेज पहचान न सकें।' इन डकैतियों में 'गार्डन रीच' की डकैती बड़ी मशहूर मानी जाती है। इसके नेता यतींद्र नाथ मुखर्जी थे। प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ हो चुका था। कलकत्ता में उन दिनों राडा कम्पनी बंदूक-कारतूस का व्यापार करती थी। इस कम्पनी की एक गाड़ी रास्ते से गायब कर दी गयी थी, जिसमें क्रांतिकारियों को 52 मौजर पिस्तौलें और 50 हजार गोलियाँ प्राप्त हुई थीं। ब्रिटिश सरकार को ज्ञात हो चुका था कि 'बलिया घाट' तथा 'गार्डन रीच' की डकैतियों में यतींद्र नाथ का हाथ था। 9 सितंबर 1915 को पुलिस ने जतींद्र नाथ का गुप्त अड्डा 'काली पोक्ष' (कप्तिपोद) ढूंढ़ निकाला। यतींद्र बाबू साथियों के साथ वह जगह छोड़ने ही वाले थे कि राज महन्ती नामक अफसर ने गाँव के लोगों की मदद से उन्हें पकड़ने की कोशश की। बढ़ती भीड़ को तितर-बितर करने के लिए यतींद्र नाथ ने गोली चला दी। राज महन्ती वहीं ढेर हो गया। यह समाचार बालासोर के जिला मजिस्ट्रेट किल्वी तक पहुंचा दिया गया। किल्वी दल बल सहित वहाँ आ पहुंचा। यतीश नामक एक क्रांतिकारी बीमार था। जतींद्र उसे अकेला छोड़कर जाने को तैयार नहीं थे। चित्तप्रिय नामक क्रांतिकारी उनके साथ था। दोनों तरफ से गोलियाँ चली। चित्तप्रिय वहीं शहीद हो गया। वीरेन्द्र तथा मनोरंजन नामक अन्य क्रांतिकारी मोर्चा संभाले हुए थे। इसी बीच यतींद्र नाथ का शरीर गोलियों से छलनी हो चुका था। वह जमीन पर गिर कर 'पानी-पानी' चिल्ला रहे थे। मनोरंजन उन्हें उठा कर नदी की ओर ले जाने लगा, तभी अंग्रेज अफसर किल्वी ने गोलीबारी बंद करने का आदेश दे दिया। गिरफ्तारी देते वक्त जतींद्र नाथ ने किल्वी से कहा-'गोली मैं और चित्तप्रिय ही चला रहे थे, बाकी के तीनों साथी बिल्कुल निर्दोष हैं।' इसके अगले दिन भारत की आजादी के इस महान सिपाही ने अस्पताल में सदा के लिए आँखें मूँद लीं।

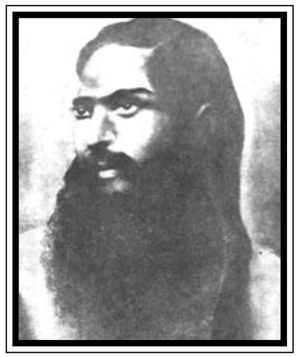

❖ **अल्लूरी सीताराम राजू :-** अल्लूरि सीताराम राजु भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के एक क्रांतिकारी थे। आदिवासी प्रिय उन्हें किसी बंधन में अथवा पराधीनता में नहीं जकड़ा जा सकता है, इसीलिये उन्होंने सबसे पहले जंगलों से ही विदेशी आक्रांताओं एवं दमनकारियों के विरुद्ध उनका यह संघर्ष देश के स्वतंत्र होने तक निरंतर चलता रहा। आज हम कह सकते हैं कि जंगलों के टीलों से ही स्वाधीनता की योजना का आरंभ हुआ। यह प्रकृति पुत्र हैं, इसीलिए जंगलों से ही स्वतंत्रता का अलख जगाया। ऐसे प्रकृति प्रेमी आदिवासी क्रांतिकारियों की लंबी शृंखला हैं। कई परिदृश्य में छाए रहे और कई अनाम रहे। जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन स्वतंत्रता के संघर्ष में गुजारा। ऐसे ही महान क्रांतिकारी अल्लूरी सीताराम राजू का जन्म 4 जुलाई 1897 को विशाखापट्टणम जिले के पांड्रिक गांव में हुआ। जब उसने युवावस्था में आदिवासी समाज को अंग्रेजों के खिलाफ संगठित करना शुरू किया तो इन विधाओं की जानकारियों ने उसे अभूतपूर्व सहायता प्रदान की। राजू के क्रांतिकारी साथियों में बीरैयादौरा का नाम विख्यात है। बीरैयादौरा का प्रारंभ में अपना अलग संगठन था। वह भी आदिवासीयों का ही एक संगठन था, जिन्होंने अंग्रेजों से युद्ध छेड़ रखा था। यह बात अनंतर अंग्रेजों ने बीरैयादौरा को एक मुठभेड़ में गिरफ्तार कर लिया, उसे जेल में रखा, लेकिन वह जेल की दीवार कूदकर जंगलों में भाग गया। उसके बाद बीरैयादौरा ने दल से संपर्क जोडकर ब्रिटिश सत्ता से संग्राम जारी रखा। जिसमें वो दोबारा जेल भेज दिए गए। अंग्रेज बीरैयादौरा को फांसी पर लटका देते, परंतु उस समय सीताराम राजू का संगठन बहुत प्रबल हो चुका था। पुलिस राजू से थरथर कांपती थी। वह ब्रिटिश सत्ता को खुलेआम चुनौती देता था। कैदी बीरैयादौरा के लिए भी उसने अंग्रेज सत्ता को पहले से सूचना भिजवा दी थी कि 'मैं बीरैया को रिहा करवाकर रहूंगा। दम हो तो रोक लेना।' वही हुआ। एक दिन पुलिस दल जब बीरैया को हथकड़ी, बेड़ी से कसे अदालत ले जा रहा था, सीताराम राजू ने पुलिस टुकड़ी पर धावा बोला दिया। दोनों तरफ से गोलियां चलीं, लेकिन गोलियों की बौछार में भी पुलिस दस्ता राजू का बाल बांका न कर सका और वह दिनदहाड़े खुलेआम लड़कर बीरैयादौरा को छुड़ा ले गया। अंग्रेजी सत्ता के लिए राजू तथा बीरैया की खोज एक समस्या बनी रही। पुलिस छापे विफल होते रहे। क्रांतिकारी बीरैया को ब्रिटिश कैद से रिहा करा लेने पर दोनों क्रांतिकारी राजू और बीरैया एकजुट हो गए, एक साथ काम करने लगे। अब राजू की शक्ति दुगुनी हो गई।

विप्लव पथ का पथिक बनकर क्रांतिकारी राजू ने अपना संगठन

खड़ा करने के साथ उत्तराखंड के क्रांतिकारियों से सम्पर्क किया। यही नहीं गदर पार्टी के नेता बाबा पृथ्वी सिंह को दक्षिण भारत की राज महेन्द्री जेल से छुड़ाने का भरसक प्रयास किया। सीताराम राजू गुरिल्ला पद्धति से युद्ध करते और नल्लईमल्लई पहाड़ियों में अन्तर्धान हो जाते। गोदावरी नदी के पास फैली यह पहाड़ियां राजू व उसके साथियों की आश्रयदात्री व प्रशिक्षण केन्द्र दोनों थी। यहीं वे युद्ध के गुर सीखते, अभ्यास करते व आक्रमण की रणनीति बनाते। इसी जगह को रम्पा कहा जाता था। राजू द्वारा चकमा देकर पहाड़ियों में विलुप्त हो जाने की वजह से अंग्रेज उन्हें रम्पा फितूरी कहते थे। ब्रिटिश अफसर राजू से लगातार मात खाते रहे। आंध्र की पुलिस राजू के सामने व्यर्थ साबित हो चुकी थी। अंत में केरल की मलाबार पुलिस के दस्ते राजू पर लगाए गए, क्योंकि उन्हें पर्वतीय इलाकों में छापे मारने का अनुभव था। 12 अक्टूबर 1922 को नल्लईमल्लई की पहाड़ियों की घाटी में ये दस्ते रवाना किए गए। मलाबार पुलिस फोर्स से राजू की कई मुठभेडें हुईं। इनमें मलाबार दस्तों को मुंह की खानी पड़ी। उसके बाद भी पुलिस राजू को गिरफ्तार नहीं कर सकी। 6 मई 1924 को राजू के दल का मुकाबला सुसज्जित असम राइफल्स से हुआ, जिसमें उसके साथी शहीद हो गए, पर राजू बचा रहा। अब ईस्ट कोस्ट स्पेशल पुलिस उसे पहाड़ियों के चप्पे-चप्पे में खोज रही थी। 7 मई 1924 को जब वह अकेला जंगल में भटक रहा था, तो सहसा उसकी खोज में वन पर्वतों को छानते फिर रहे फोर्स के अफसर की नजर राजू पर पड़ गई। उसने राजू का छिपकर पीछा किया। यद्यपि वह राजू को पहचान नहीं सका था, क्योंकि उस समय राजू ने लंबी दाढी बढ़ा ली थी। पुलिस दल ने राजू पर पीछे से गोली चलाई। राजू जख्मी होकर वहीं गिर पड़े। तब राजू ने स्वयं अपना परिचय देते हुए कहा कि 'मैं ही सीताराम राजू हूं' गिरफ्तारी के साथ ही यातनाएं शुरू हुई। अंततः उस महान क्रांतिकारी को नदी किनारे ही एक वृक्ष से बांधकर भून दिया गया। एक क्रांतिकारी की इससे श्रेष्ठ शहादत और क्या हो सकती थी। इस बलिदान के साक्ष्य थे गोदावरी नदी और नल्लईमल्लई की पहाड़ियां, जहां आज भी अल्लूरी सीताराम राजू जिंदा है। आदिवासीयों की आत्मा में देवता स्वरूप। लोकगीतों में लोकनायक के रूप में।

❖ **पंडित राम प्रसाद बिस्मिल :-** पंडित राम प्रसाद बिस्मिल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की क्रान्तिकारी धारा के एक प्रमुख सेनानी थे, जिन्हें 30 वर्ष की आयु में ब्रिटिश सरकार ने फाँसी दे दी। वे मैनपुरी षड्यन्त्र व काकोरी-काण्ड जैसी कई घटनाओं में शामिल थे तथा हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन के सदस्य भी थे।राम प्रसाद एक कवि, शायर, अनुवादक, बहुभाषाभाषी, इतिहासकार व साहित्यकार भी थे। बिस्मिल उनका उर्दू तखल्लुस (उपनाम) था जिसका हिन्दी में अर्थ होता है आत्मिक रूप से आहत। बिस्मिल के अतिरिक्त वे राम और अज्ञात के नाम से भी लेख व कवितायें लिखते थे। 11 जून 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर शहर के खिरनीबाग मुहल्ले में जन्मे रामप्रसाद अपने पिता मुरलीधर और माता मूलमती की दूसरी सन्तान थे। उन्होंने सन् 1916 में 19 वर्ष की आयु में क्रान्तिकारी मार्ग में कदम रखा था। 11 वर्ष के क्रान्तिकारी जीवन में उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं और स्वयं ही उन्हें प्रकाशित किया। उन पुस्तकों को बेचकर जो पैसा मिला उससे उन्होंने हथियार खरीदे और उन हथियारों का उपयोग ब्रिटिश राज का विरोध करने के लिये किया। 11 पुस्तकें उनके जीवन काल में प्रकाशित हुईं, जिनमें से अधिकतर सरकार द्वारा जब्त कर ली गयीं। बिस्मिल को तत्कालीन संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध की लखनऊ सेण्ट्रल जेल की 11 नम्बर बैरक में रखा गया था। इसी जेल में उनके दल के अन्य साथियों को एक साथ रखकर उन सभी पर ब्रिटिश राज के विरुद्ध साजिश रचने का ऐतिहासिक मुकदमा चलाया गया था। सन् 1915 में भाई परमानन्द की फाँसी का समाचार सुनकर रामप्रसाद ब्रिटिश साम्राज्य को समूल नष्ट करने की प्रतिज्ञा कर चुके थे, 1916 में एक पुस्तक छपकर आ चुकी थी, कुछ नवयुवक उनसे जुड़ चुके थे, स्वामी सोमदेव का आशीर्वाद भी उन्हें प्राप्त हो चुका था। एक संगठन उन्होंने पं. गेंदालाल दीक्षित के मार्गदर्शन में मातृवेदी के नाम से खुद खड़ा कर लिया था। इस संगठन की ओर से एक इश्तिहार और एक प्रतिज्ञा भी प्रकाशित की गयी। दल के लिये धन एकत्र करने के उद्देश्य से रामप्रसाद ने, जो अब तक 'बिस्मिल' के नाम से प्रसिद्ध हो चुके थे, जून 1918 में दो तथा सितम्बर 1918 में एक। कुल मिलाकर तीन डकैती भी डालीं, जिससे पुलिस सतर्क होकर इन युवकों की खोज में जगह-जगह छापे डाल रही थी। 26 से 31 दिसम्बर 1918 तक दिल्ली में लाल किले के सामने हुए कांग्रेस अधिवेशन में इस संगठन के नवयुवकों ने चिल्ला-चिल्ला कर जैसे ही पुस्तकें बेचना शुरू किया कि पुलिस ने छापा डाला किन्तु बिस्मिल की सूझबूझ से सभी पुस्तकें बच गयीं। मैनपुरी षडयंत्र में शाहजहाँपुर से 6 युवक शामिल हुए थे, जिनके लीडर रामप्रसाद बिस्मिल थे। किन्तु वे पुलिस के हाथ नहीं आये, तत्काल फरार हो गये। 1 नबम्बर 1919 को मजिस्ट्रेट बी.एस. क्रिस ने मैनपुरी षडयन्त्र का फैसला सुना दिया। जिन-जिन को सजायें हुई, उनमें मुकुन्दीलाल के अलावा सभी को फरवरी 1920 में आम माफी के ऐलान में छोड़ दिया गया। बिस्मिल पूरे 2 वर्ष भूमिगत रहे। उनके दल के ही कुछ साथियों ने शाहजहाँपुर में जाकर यह अफवाह फैला दी कि भाई रामप्रसाद तो पुलिस की गोली से मारे गये जबकि सच्चाई यह थी कि वे पुलिस मुठभेड़ के दौरान यमुना में छलाँग लगाकर पानी के अन्दर ही अन्दर योगाभ्यास की शक्ति से तैरते हुए मीलों दूर आगे जाकर नदी से बाहर निकले और जहाँ आजकल ग्रेटर नोएडा आबाद हो चुका है वहाँ के निर्जन बीहड़ों में चले गये। वहाँ उन दिनों केवल बबूल के ही वृक्ष हुआ करते थे; और ऊसर जमीन में आदमी तो कहीं दूर-दूर तक दिखता ही नहीं था।

दि रिवोल्यूशनरी नाम से प्रकाशित इस 4 पृष्ठीय घोषणापत्र को देखते ही ब्रिटिश सरकार इसके लेखक को बंगाल में खोजने लगी। संयोग से शचीन्द्र नाथ सान्याल बाँकुरा में उस समय गिरफ्तार कर लिये गये जब वे यह घोषणापत्र अपने किसी साथी को पोस्ट करने जा रहे थे। इसी प्रकार योगेशचन्द्र चटर्जी कानपुर से पार्टी की मीटिंग करके जैसे ही हावड़ा स्टेशन पर ट्रेन से उतरे कि एच.आर.ए. के संविधान की ढेर सारी प्रतियों के साथ पकड़ लिये गये। उन्हें हजारीबाग जेल में बन्द कर दिया गया। दोनों प्रमुख नेताओं के गिरफ्तार हो जाने से राम प्रसाद बिस्मिल के कन्धों पर उत्तर प्रदेश के साथ-साथ बंगाल के क्रान्तिकारी सदस्यों का उत्तरदायित्व भी आ गया। पार्टी के कार्य हेतु धन की आवश्यकता पहले भी थी किन्तु अब तो और भी अधिक बढ़ गयी थी। कहीं से भी धन प्राप्त होता न देख उन्होंने 7 मार्च 1925 को बिचपुरी तथा 24 मई 1925 को द्वारकापुर में दो राजनीतिक डकैतियाँ डालीं। परन्तु उन्हें उनमें कुछ विशेष धन प्राप्त नहीं हो सका। शाहजहाँपुर में उनके घर पर 7 अगस्त 1925 को हुई एक इमर्जेन्सी मीटिंग में निर्णय लेकर योजना बनी और 9 अगस्त 1925 को शाहजहाँपुर रेलवे स्टेशन से बिस्मिल के नेतृत्व में कुल 10 लोग, जिनमें अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, चन्द्रशेखर आजाद, शचीन्द्रनाथ बख्शी, मन्मथनाथ गुप्त, मुकुन्दी लाल, केशव चक्रवर्ती, मुरारी शर्म तथा बनवारी लाल शामिल थे, 8 डाउन सहारनपुर-लखनऊ पैसेंजर रेलगाड़ी में सवार हुए। इन सबके पास

पिस्तौलों के अतिरिक्त जर्मनी के बने चार माउजर पिस्तौल भी थे, जिनके बट में कुन्दा लगा लेने से वह छोटी स्वचालित राइफल की तरह लगता था और सामने वाले के मन में भय पैदा कर देता था। इन माउजरों की मारक क्षमता भी साधारण पिस्तौलों से अधिक होती थी। उन दिनों ये माउजर आज की ए.के.-47 रायफल की तरह चर्चित थे। लखनऊ से पहले काकोरी रेलवे स्टेशन पर रुक कर जैसे ही गाड़ी आगे बढ़ी, क्रान्तिकारियों ने चेन खींचकर उसे रोक लिया और गार्ड के डिब्बे से सरकारी खजाने का बक्सा नीचे गिरा दिया। उसे खोलने की कोशिश की गयी, किन्तु जब वह नहीं खुला तो अशफाक उल्ला खाँ ने अपना माउजर मन्मथनाथ गुप्त को पकड़ा दिया और हथौड़ा लेकर बक्सा तोड़ने में जुट गये। मन्मथनाथ गुप्त ने उत्सुकतावश माउजर का ट्रिगर दबा दिया जिससे छूटी गोली अहमद अली नाम के मुसाफिर को लग गयी। वह मौके पर ही ढेर हो गया। शीघ्रतावश चाँदी के सिक्कों व नोटों से भरे चमड़े के थैले चादरों में बाँधकर वहाँ से भागने में एक चादर वहीं छूट गयी। अगले दिन अखबारों के माध्यम से यह खबर पूरे संसार में फैल गयी। ब्रिटिश सरकार ने इस ट्रेन डकैती को गम्भीरता से लिया और डी.आई.जी. के सहायक (सी.आई.डी. इंस्पेक्टर) मिस्टर आर.ए. हार्टन के नेतृत्व में स्कॉटलैण्ड की सबसे तेज तर्रार पुलिस को इसकी जाँच का काम सौंप दिया।

सी.आई.डी. ने गम्भीर छानबीन करके सरकार को इस बात की पुष्टि कर दी कि काकोरी ट्रेन डकैती क्रान्तिकारियों का एक सुनियोजित षड्यन्त्र है। पुलिस ने काकोरी काण्ड के सम्बन्ध में जानकारी देने व षड्यन्त्र में शामिल किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करवाने के लिये इनाम की घोषणा के विज्ञापन सभी प्रमुख स्थानों पर लगा दिये। इसका परिणाम यह हुआ कि पुलिस को घटना स्थल पर मिली चादर में लगे धोबी के निशान से इस बात का पता चल गया कि चादर शाहजहाँपुर के ही किसी व्यक्ति की है। शाहजहाँपुर के धोबियों से पूछने पर मालूम हुआ कि चादर बनारसी लाल की है। बनारसी लाल से मिलकर पुलिस ने सारा भेद प्राप्त कर लिया। यह भी पता चल गया कि 9 अगस्त 1925 को शाहजहाँपुर से उसकी पार्टी के कौन-कौन लोग शहर से बाहर गये थे और वे कब-कब वापस आये? जब खुफिया तौर से इस बात की पुष्टि हो गयी कि राम प्रसाद बिस्मिल, जो एच. आर.ए. का लीडर था, उस दिन शहर में नहीं था तो 26 सितम्बर 1925 की रात में बिस्मिल के साथ समूचे हिन्दुस्तान से 40 से भी अधिक लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। काकोरी काण्ड में केवल 10 ही लोग वास्तविक रूप से शामिल हुए थे अत: उन सभी को नामजद किया गया। इनमें से पाँच-चन्द्रशेखर आजाद, मुरारी शर्मा, केशव चक्रवर्ती, अशफाक उल्ला खाँ व शचीन्द्र नाथ बख्शी को छोड़कर, जो पुलिस के हाथ नहीं आये, शेष सभी व्यक्तियों पर अभियोग चला और उन्हें ५ वर्ष की कैद से लेकर फाँसी तक की सजा सुनायी गयी। फरार अभियुक्तों के अतिरिक्त जिन-जिन क्रान्तिकारियों को एच.आर.ए. का सक्रिय कार्यकर्ता होने के सन्देह में गिरफ्तार किया गया था, उनमें से १६ को साक्ष्य न मिलने के कारण रिहा कर दिया गया। स्पेशल मजिस्ट्रेट ऐनुद्दीन ने प्रत्येक क्रान्तिकारी की छवि खराब करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। सिर्फ इतना ही नहीं, केस को सेशन कोर्ट में भेजने से पहले ही इस बात के सभी साक्षी व साक्ष्य एकत्र कर लिये थे कि यदि अपील भी की जाये तो एक भी अभियुक्त बिना सजा के छूटने न पाये।

6 अप्रैल 1927 को विशेष सेशन जज ए० हैमिल्टन ने 115 पृष्ठ के निर्णय में प्रत्येक क्रान्तिकारी पर लगाये गये आरोपों पर विचार करते हुए लिखा कि यह कोई साधारण ट्रेन डकैती नहीं, अपितु ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ फेंकने की एक सोची समझी साजिश है। हालाँकि इनमें से कोई भी अभियुक्त अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये इस योजना में शामिल नहीं हुआ परन्तु चूँकि किसी ने भी न तो अपने किये पर कोई पश्चाताप किया है और न ही भविष्य में इस प्रकार की गतिविधियों से स्वयं को अलग रखने का वचन दिया है अत: जो भी सजा दी गयी है सोच समझ कर दी गयी है और इस हालत में उसमें किसी भी प्रकार की कोई छूट नहीं दी जा सकती। फिर भी, इनमें से कोई भी अभियुक्त यदि लिखित में पश्चाताप प्रकट करता है और भविष्य में ऐसा न करने का वचन देता है तो उनकी अपील पर अपर कोर्ट विचार कर सकती है। फरार क्रान्तिकारियों में अशफाकुल्लाह खाँ और शचीन्द्र नाथ बख्शी को बहुत बाद में पुलिस गिरफ्तार कर पायी। विशेष जज जे.आर.डब्लू. बैनेट की अदालत में काकोरी षड्यंत्र का अतिरिक्त केस दायर किया गया और 13 जुलाई 1927 को यही बात दोहराते हुए अशफाक उल्ला खाँ को फाँसी तथा शचीन्द्रनाथ बख्शी को आजीवन कारावास की सजा सुना दी गयी। सेशन जज के फैसले के खिलाफ 18 जुलाई 1927 को अवध चीफ कोर्ट में अपील दायर की गयी। चीफ कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सर लुइस शर्ट और विशेष न्यायाधीश मोहम्मद रजा के सामने दोनों मामले पेश हुए। जगतनारायण 'मुल्ला' को सरकारी पक्ष रखने का काम सौंपा गया जबकि सजायाफ्ता क्रान्तिकारियों की ओर से के.सी. दत्त, जयकरणनाथ मिश्र व कृपाशंकर हजेला ने क्रमश: राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह व अशफाक उल्ला खाँ की पैरवी की। राम प्रसाद बिस्मिल ने अपनी पैरवी खुद की क्योंकि सरकारी खर्चे पर उन्हें लक्ष्मीशंकर मिश्र नाम का एक बड़ा साधारण सा वकील दिया गया था, जिसको लेने से उन्होंने साफ मना कर दिया। बिस्मिल ने चीफ कोर्ट के सामने जब धारा प्रवाह अंग्रेजी में फैसले के खिलाफ बहस की तो सरकारी वकील मुल्ला जी बगलें झाँकते नजर आये। बिस्मिल की इस तर्क क्षमता पर चीफ जस्टिस लुइस शर्टस को उनसे यह पूछना पड़ा "Mr. Ramprasad! from which university you have taken the degree of law?" (श्रीमान राम प्रसाद! आपने किस विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री ली है?) इस पर उन्होंने हँस कर कहा था-"Excuse me sir! a king maker doesn't require any degree" (क्षमा करें महोदय! सम्राट बनाने वाले को किसी डिग्री की आवश्यकता नहीं होती।) अदालत ने इस जवाब से चिढ़कर बिस्मिल द्वारा 18 जुलाई 1927 को दी गयी स्वयं वकालत करने की अर्जी खारिज कर दी। उसके बाद उन्होंने 76 पृष्ठ की तर्कपूर्ण लिखित बहस पेश की। उसे पढ़ कर जजों ने यह शंका व्यक्त की कि यह बहस बिस्मिल ने स्वयं न लिखकर किसी विधिवेत्ता से लिखवायी है। आखिरकार अदालत द्वारा उन्हीं लक्ष्मीशंकर मिश्र को बहस करने की इजाजत दी गयी, जिन्हें लेने से बिस्मिल ने मना कर दिया था।

22 अगस्त 1927 को जो फैसला सुनाया गया उसके अनुसार राम प्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी व अशफाक उल्ला खाँ अशफाक उल्ला खाँ को आई.पी.सी. की दफा 121 (ए) व 120 (बी) के अन्तर्गत आजीवन कारावास तथा 302 व 396 के अनुसार फाँसी एवं ठाकुर रोशन सिंह को पहली दो दफाओं में 5+5 = कुल 10 वर्ष की कड़ी कैद तथा अगली दो दफाओं के अनुसार फाँसी का हुक्म हुआ। शचीन्द्र नाथ सान्याल, जब जेल में थे तभी लिखित रूप से अपने किये पर पश्चाताप प्रकट करते हुए भविष्य में किसी भी क्रान्तिकारी कार्रवाई में हिस्सा न लेने का वचन दे चुके थे। इसके आधार पर उनकी उम्र-कैद बरकरार रही। शचीन्द्र के छोटे भाई भूपेन्द्र नाथ सान्याल व बनवारी लाल ने अपना-अपना जुर्म कबूल करते हुए कोर्ट की कोई भी सजा भुगतने की अण्डरटेकिंग पहले ही दे रखी थी इसलिये उन्होंने अपील नहीं की और दोनों को 5-5 वर्ष की सजा के आदेश यथावत रहे। चीफ कोर्ट में अपील करने के बावजूद योगेशचन्द्र चटर्जी, मुकुन्दी लाल व गोविन्दचरण कार की सजायें 10-10 वर्ष से बढ़ाकर उम्र-कैद में बदल दी गयीं। सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य व विष्णुशरण दुब्लिश की सजायें भी यथावत (7-7 वर्ष) कायम रहीं। खूबसूरत हैण्डराइटिंग में

लिखकर अपील देने के कारण केवल प्रणवेश चटर्जी की सजा को 5 वर्ष से घटाकर 4 वर्ष कर दिया गया। इस काण्ड में सबसे कम सजा (3 वर्ष) रामनाथ पाण्डेय को हुई। मन्मथनाथ गुप्त, जिनकी गोली से मुसाफिर मारा गया, की सजा 10 से बढ़ाकर 14 वर्ष कर दी गयी। काकोरी काण्ड में प्रयुक्त माउजर पिस्तौल के कारतूस चूँकि प्रेमकृष्ण खन्ना के शस्त्र-लाइसेन्स पर खरीदे गये थे जिसके पर्याप्त साक्ष्य मिल जाने के कारण प्रेमकृष्ण खन्ना को 5 वर्ष के कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

चीफ कोर्ट का फैसला आते ही समूचे देश में सनसनी फैल गयी। ठाकुर मनजीत सिंह राठौर ने सेण्ट्रल लेजिस्लेटिव कौन्सिल में काकोरी काण्ड के सभी फाँसी (मृत्यु-दण्ड) प्राप्त कैदियों की सजायें कम करके आजीवन कारावास (उम्र-कैद) में बदलने का प्रस्ताव पेश करने की सूचना दी। कौन्सिल के कई सदस्यों ने सर विलियम मोरिस को, जो उस समय संयुक्त प्रान्त के गवर्नर थे, इस आशय का एक प्रार्थना-पत्र भी दिया किन्तु उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। अन्ततः बैरिस्टर मोहन लाल सक्सेना ने प्रिवी कौन्सिल में क्षमादान की याचिका के दस्तावेज तैयार करके इंग्लैण्ड के विख्यात वकील एस.एल. पोलक के पास भिजवाये। परन्तु लन्दन के न्यायाधीशों व सम्राट के वैधानिक सलाहकारों ने उस पर बड़ी सख्त दलील दी कि इस षड्यन्त्र का सूत्रधार राम प्रसाद बिस्मिल बड़ा ही खतरनाक और पेशेवर अपराधी है। यदि उसे क्षमादान दिया गया तो वह भविष्य में इससे भी बड़ा और भयंकर काण्ड कर सकता है। उस स्थिति में सरकार को हिन्दुस्तान में शासन करना असम्भव हो जायेगा। इस सबका परिणाम यह हुआ कि प्रिवी कौन्सिल में भेजी गयी क्षमादान की अपील भी खारिज हो गयी। 16 दिसम्बर 1927 को बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा का आखिरी अध्याय (अन्तिम समय की बातें) पूर्ण करके जेल से बाहर भिजवा दिया। 18 दिसम्बर 1927 को माता-पिता से अन्तिम मुलाकात की और सोमवार 19 दिसम्बर 1927 (पौष कृष्ण एकादशी विक्रमी सम्वत् 1984) को प्रातःकाल 6 बजकर 30 मिनट पर गोरखपुर की जिला जेल में उन्हें फाँसी दे दी गयी। बिस्मिल के बलिदान का समाचार सुनकर बहुत बड़ी संख्या में जनता जेल के फाटक पर एकत्र हो गयी। जेल का मुख्य द्वार बन्द ही रखा गया और फाँसीघर के सामने वाली दीवार को तोड़कर बिस्मिल का शव उनके परिजनों को सौंप दिया गया। शव को डेढ़ लाख लोगों ने जुलूस निकाल कर पूरे शहर में घुमाते हुए राप्ती नदी के किनारे राजघाट पर उसका अन्तिम संस्कार कर दिया।

रामप्रसाद जी की सारी हसरतें दिल-ही-दिल में रह गयीं। आपने एक लम्बा-चौड़ा ऐलान किया है जिसे संक्षेप में हम दूसरी जगह दे रहे हैं। फाँसी से दो दिन पहले सी.आई.डी. के डिप्टी एस.पी. और सेशन जज मि. हैमिल्टन आपसे मिन्नतें करते रहे कि आप मौखिक रूप से सब बातें बता दो। आपको पन्द्रह हजार रुपया नकद दिया जायेगा और सरकारी खर्चे पर विलायत भेजकर बैरिस्टर की पढ़ाई करवाई जायेगी। लेकिन आप कब इन सब बातों की परवाह करते थे। आप तो हुकूमतों को ठुकराने वाले व कभी-कभार जन्म लेने वालों में से थे। मुकदमे के दिनों आपसे जज ने पूछा था-आपके पास कौन सी डिग्री है? तो आपने हँसकर जवाब दिया था-सम्राट बनाने वालों को डिग्री की कोई जरूरत नहीं होती, क्लाइव के पास भी तो कोई डिग्री नहीं थी। आज वह वीर हमारे बीच नहीं है, आह! बिस्मिल की अन्त्येष्टि के बाद बाबा राघव दास ने गोरखपुर के पास स्थित देवरिया जिले के बरहज नामक स्थान पर ताम्रपात्र में उनकी अस्थियों को संचित कर एक चबूतरा जैसा स्मृति-स्थल बनवा दिया।

❖ **अशफाकउल्लाह खाँ** :- अशफाकउल्लाह खाँ भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के स्वतंत्रता सेनानी थे। ये वीर शहीदों में से एक वीर नाम है, इनकी शहादत हम कभी नही भूल सकते। खान का जन्म 22 अक्टूबर 1900 को ब्रितानी भारत के शाहजहाँपुर में शफिकउल्लाह खाँ और मजरुनिसा के घर हुआ। वो एक मुस्लिम पठान परिवार के खैबर जनजाति में हुआ था। वो छः भाई बहनों में सबसे छोटे थे। वर्ष 1920 में महात्मा गांधी ने भारत में ब्रितानी शासन के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया, लेकिन वर्ष 1922 में चौरी चौरा कांड के बाद महात्मा गांधी ने आन्दोलन वापस ले लिया। इस स्थिति में खाँ सहित विभिन्न युवा लोग खिन्न हुए। इसके बाद खाँ ने समान विचारों वाले स्वतंत्रता सेनानियों से मिलकर नया संगठन बनाने का निर्णय लिया और वर्ष 1924 में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन किया। अपने आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए, हथियार खरिदने और अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक गोलाबारूद इकट्ठा करने के लिए, हिन्दुस्तानी सोशिलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सभी क्रान्तिकारियों ने शाहजहाँपुर में 8 अगस्त 1925 को एक बैठक की। एक लम्बी विवेचना के पश्चात् रेलगाड़ी में जा रहे सरकारी खजाने को कब्जाने का कार्यक्रम बना। 9 अगस्त 1925 को खाँ सहित उनके क्रान्तिकारी साथियों राम प्रसाद 'बिस्मिल', राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह, शचीन्द्रनाथ बख्शी, चन्द्रशेखर आजाद, केशव चक्रवर्ती, बनवारी लाल, मुरारी शर्मा, मुकुन्दी लाल और मन्मथनाथ गुप्त ने मिलकर लखनऊ के निकट काकोरी में रेलगाड़ी में जा रहा ब्रितानी सरकार का खजाना जो उसने भारत से लूटा था उसे फिर पा लिया। रेलगाडी के लूटे जाने के एक माह बाद भी किसी भी क्रांतिकारी की गिरफ्तारी नहीं हो सकी। यद्यपि ब्रिटेन सरकार ने एक विस्तृत जाँच का जाल आरम्भ कर दिया था। 26 अक्टूबर 1925 की एक सुबह, बिस्मिल को पुलिस ने पकड़ लिया और खाँ अकेले थे, जिनका पुलिस कोई सुराख नहीं लगा सकी। वो छुपते हुए बिहार से बनारस चले गये, जहाँ उन्होंने दस माह तक एक अभियांत्रिकी कंपनी में काम किया। उन्होंने अभियान्त्रिकी के आगे के अध्ययन के लिए विदेश में जाना चाहते थे, जिससे स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाया जा सके और वो देश छोड़ने के लिए दिल्ली चले गये। उन्होंने अपने एक पठान दोस्त की सहायता ली जो पहले उनका सहपाठी रह चुका था। दोस्त ने उन्हें धोखा देते हुए उनका ठिकाना पुलिस को बता दिया और 7 दिसंबर 1926 की सुबह पुलिस उनके घर आयी तथा उन्हें गिरफ्तार किया। खाँ को फैजाबाद कारावस में रखा गया और उनके विरुद्ध एक मामला आरम्भ किया गया। उनके भाई रियासतुल्लाह खाँ उनके कानूनी अधिवक्ता थे। कारावास के दौरान अशफाकउल्लाह खान ने कुरान का पाठ किया और नियमित तौर पर नमाज पढ़ना आरम्भ कर दिया तथा इस्लामी माह रमजान में कठोरता से रोजे रखना आरम्भ कर दिया। काकोरी डकैती का मामला बिस्मिल, खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह को फांसी की सजा सुनाकर पूरा किया गया। खाँ को 19 दिसम्बर 1927 को फैजाबाद कारावास में फांसी की सजा दी गयी। उनके क्रान्तिकारी व्यक्तित्व, प्रेम, स्पष्ट सोच, अडिग साहस, दृढ़ निश्चय और निष्ठा के कारण लोगों के लिए वो शहीद माने गये। यह क्रांतिकारी व्यक्ति मातृभूमि के प्रति अपने प्रेम, अपनी स्पष्ट सोच, अडिग साहस, दृढ़ता और निष्ठा के कारण अपने लोगों के बीच शहीद और एक किंवदंती बन गया।

❖ **रोशन सिंह** :- ठाकुर रोशन सिंह भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के एक क्रान्तिवीर थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में हुए गोली-काण्ड में सजा काटकर जैसे ही शान्तिपूर्ण जीवन बिताने घर वापस आये कि हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसियेशन में शामिल हो गये।

यद्यपि ठाकुर साहब ने काकोरी काण्ड में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लिया था फिर भी आपके आकर्षक व रौबीले व्यक्तित्व को देखकर काकोरी काण्ड के सूत्रधार पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल व उनके सहकारी श्री अशफाक उल्ला खाँ के साथ 19 दिसम्बर 1927 को फाँसी दे दी गयी। ये तीनों ही क्रान्तिकारी उत्तर प्रदेश के शहीदगढ़ कहे जाने वाले जनपद शाहजहाँपुर के रहने वाले थे। इनमें ठाकुर साहब आयु के लिहाज से सबसे बड़े, अनुभवी, दक्ष व अचूक निशानेबाज थे। कान्तिकारी ठाकुर रोशन सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर जनपद में फतेहगंज से 10 किलोमीटर दूर स्थित गाँव नबादा में 22 जनवरी 1892 को एक राजपूत परिवार में हुआ था। इनकी माता जी का नाम कौशल्या देवी जी एवं पिता जी का ठाकुर जंगी सिंह जी था। पूरा परिवार आर्य समाज से अनुप्राणित था। आप पाँच भाई-बहनों में सबसे बड़े थे। असहयोग आन्दोलन में उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर और बरेली जिले के ग्रामीण क्षेत्र में आपने अद्‌भुत योगदान दिया था। यही नहीं, बरेली में हुए गोली-काण्ड में एक पुलिस वाले की रायफल छीनकर जबर्दस्त फायरिंग शुरू कर दी थी, जिसके कारण हमलावर पुलिस को उल्टे पाँव भागना पडा। मुकदमा चला और श्री ठाकुर रोशन सिंह को सेण्ट्रल जेल बरेली में दो साल वामशक्कत कैद की सजा काटनी पड़ी थी। बरेली गोली काण्ड में सजायाफ्ता श्री रोशन सिंह की भेंट सेण्ट्रल जेल बरेली में कानपुर निवासी श्री पंडित रामदुलारे त्रिवेदी से हुई जो उन दिनों पीलीभीत में शुरू किये गये असहयोग आन्दोलन के फलस्वरूप 6 महीने की सजा भुगतने बरेली सेण्ट्रल जेल में रखे गये थे। गांधी जी द्वारा सन 1922 में हुए चौरी चौरा काण्ड के विरोध स्वरूप असहयोग आन्दोलन वापस ले लिये जाने पर पूरे हिन्दुस्तान में जो प्रतिक्रिया हुई उसके कारण श्री ठाकुर साहब ने भी राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, श्री रामदुलारे त्रिवेदी व श्री सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य आदि के साथ शाहजहाँपुर शहर के आर्य समाज पहुँच कर श्री राम प्रसाद बिस्मिल से गम्भीर मन्त्रणा की जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित कोई बहुत बड़ी क्रान्तिकारी पार्टी बनाने की रणनीति तय हुई। इसी रणनीति के तहत श्री ठाकुर रोशन सिंह को पार्टी में शामिल किया गया था। श्री ठाकुर साहब पक्के निशानेबाज थे। 1922 की गया कांग्रेस में जब पार्टी के दो अलग सोच हो गए और श्री मोतीलाल नेहरू एवम श्री देशबन्धु चितरंजन दास ने अपनी अलग से स्वराज पार्टी बना ली। ये सभी लोग पैसे वाले थे जबकि क्रान्तिकारी पार्टी के पास संविधान, विचार-धारा व दृष्टि के साथ-साथ उत्साही नवयुवकों का बहुत बड़ा संगठन था। हाँ, अगर कोई कमी थी तो वह कमी पैसे की थी। इस कमी को दूर करने के लिये आयरलैण्ड के क्रान्तिकारियों का रास्ता अपनाया गया और वह रास्ता था डकैती का। इस कार्य को पार्टी की ओर से एक्शन नाम दिया गया। एक्शन के नाम पर पहली डकैती पीलीभीत जिले में बिसलपुर तहसील के एक गाँव बमरौली में 25 दिसम्बर 1924 को क्रिस्मस के दिन एक खण्डसारी (शक्कर के निर्माता) व सूदखोर (ब्याज पर रुपये उधार देने वाले) बलदेव प्रसाद के यहाँ डाली गयी। इस पहली डकैती में 4000 रुपये और कुछ सोने-चाँदी के जेवरात क्रान्तिकारियों के हाथ लगे। परन्तु मोहनलाल पहलवान नाम का एक आदमी, जिसने डकैतों को ललकारा था, श्री ठाकुर रोशन सिंह की रायफल से निकली एक ही गोली में ढ़ेर हो गया। सिर्फ मोहनलाल की मौत ही श्री ठाकुर रोशन सिंह की फाँसी की सजा का कारण बनी। 9 अगस्त 1925 को काकोरी स्टेशन के पास जो सरकारी खजाना लूटा गया था उसमें श्री ठाकुर रोशन सिंह शामिल नहीं थे, यह हकीकत है किन्तु इन्हीं की आयु (33 वर्ष) के श्री केशव चक्रवर्ती (छद्म नाम), जरूर शामिल थे जो बंगाल की अनुशीलन समिति के सदस्य थे, फिर भी पकड़े श्री रोशन सिंह गये। चूकि श्री रोशन सिंह बमरौली डकैती में शामिल थे ही और इनके खिलाफ सारे साक्ष्य भी मिल गये थे अत: पुलिस ने सारी शक्ति श्री ठाकुर रोशन सिंह को फाँसी की सजा दिलवाने में ही लगा दी और श्री केशव चक्रवर्ती को खोजने का कोई प्रयास ही नहीं किया। सी०आई०डी० के कप्तान खानबहादुर तसद्दुक हुसैन श्री राम प्रसाद बिस्मिल पर बार-बार यह दबाव डालते रहे कि श्री बिस्मिल किसी भी तरह अपने दल का सम्बन्ध बंगाल के अनुशीलन दल या रूस की बोल्शेविक पार्टी से बता दें परन्तु श्री बिस्मिल टस से मस न हुए। आखिरकार श्री रोशन सिंह को दफा 120(बी) और 121(ए) के तहत 5-5 वर्ष की बामशक्कत कैद और 396 के अन्तर्गत सजाये-मौत अर्थात् फाँसी की सजा दी गयी। इस फैसले के खिलाफ जैसे अन्य सभी ने उच्च न्यायालय, वायसराय व सम्राट के यहाँ अपील की थी वैसे ही श्री रोशन सिंह ने भी अपील की; परन्तु नतीजा वही निकला-ढ़ाक के तीन पात। फाँसी से पहली रात ठाकुर साहब कुछ घण्टे सोये फिर देर रात से ही ईश्वर-भजन करते रहे। प्रात: काल शौचादि से निवृत्त हो यथानियम स्नान ध्यान किया कुछ देर गीता-पाठ में लगायी फिर पहरेदार से कहा-'चलो।' वह हैरत से देखने लगा यह कोई आदमी है या देवता! ठाकुर साहब ने अपनी काल-कोठरी को प्रणाम किया और गीता हाथ में लेकर निर्विकार भाव से फाँसी घर की ओर चल दिये। फाँसी के फन्दे को चूमा फिर जोर से तीन बार वन्दे मातरम् का उद्घोष किया और वेद मन्त्र- 'ओम् विश्वानि देव सवितुर दुरितानि परासुव यद भद्रम तन्नासुव' का जाप करते हुए फन्दे से झूल गये। इलाहाबाद में नैनी स्थित मलाका जेल के फाटक पर हजारों की संख्या में स्त्री-पुरुष, युवा और बाल-वृद्ध एकत्र थे ठाकुर साहब के अन्तिम दर्शन करने व उनकी अन्त्येष्टि में शामिल होने के लिये। जैसे ही उनका शव जेल कर्मचारी बाहर लाये वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने नारा लगाया, 'रोशन सिंह! अमर रहें!' भारी जुलूस की शक्ल में शवयात्रा निकली और गंगा यमुना के संगम तट पर जाकर रुकी जहाँ वैदिक रीति से उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

❖ **लाला लाजपत राय** :- लाला लाजपत राय भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। इन्हें पंजाब केसरी भी कहा जाता है। इन्होंने पंजाब नैशनल बैंक और लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना भी की थी ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गरम दल के तीन प्रमुख नेताओं लाल-बाल-पाल में से एक थे। लाला लाजपत राय का जन्म पंजाब के मोगा जिले के अजितवाल रेलवे स्टेशन के पास धुड़ीके गांव में 28 जनवरी 1865 को एक अग्रवाल जैन परिवार में हुआ था। इन्होंने कुछ समय हरियाणा के रोहतक और हिसार शहरों में वकालत की। ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गरम दल के प्रमुख नेता थे। बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल के साथ इस त्रिमूर्ति को लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाता था। इन्हीं तीनों नेताओं ने सबसे पहले भारत में पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग की थी बाद में समूचा देश इनके साथ हो गया। 30 अक्टूबर 1928 को इन्होंने लाहौर में साइमन कमीशन के विरुद्ध आयोजित एक विशाल प्रदर्शन में हिस्सा लिया, जिसके दौरान हुए लाठी-चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये। उस समय इन्होंने कहा था, 'मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश सरकार के

ताबूत में एक-एक कील का काम करेगी।' और वही हुआ भी; लालाजी के बलिदान के 20 साल के भीतर ही ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया। 17 नवंबर 1928 को इन्हीं चोटों की वजह से इनका देहान्त हो गया। लाला जी की मृत्यु से सारा देश उत्तेजित हो उठा और चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव व अन्य क्रांतिकारियों ने लालाजी पर जानलेवा लाठीचार्ज का बदला लेने का निर्णय किया। इन देशभक्तों ने अपने प्रिय नेता की हत्या के ठीक एक महीने बाद अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली और 17 दिसम्बर 1928 को ब्रिटिश पुलिस के अफसर सांडर्स को गोली से उड़ा दिया। लालाजी की मौत के बदले सांडर्स की हत्या के मामले में ही राजगुरु, सुखदेव और भगत सिंह को फाँसी की सजा सुनाई गई।

❖ **बादल गुप्त :-** बादल गुप्त उपनिवेश-विरोधी एक भारतीय क्रांतिकारी थे। दिसंबर 1930 में कलकत्ता के डलहौजी चौक में सचिवालय भवन-राइटर्स बिल्डिंग पर विनय बसु और दिनेश गुप्त के साथ हमले में बादल गुप्त ने भी भाग लिया था। बादल गुप्त का जन्म 1912 में ढ़ाका के बिक्रमपुर क्षेत्र के पूर्व शिमुलिया गाँव में हुआ था, जो अब बांग्लादेश के मुंशीगंज जिले में है। बादल गुप्त अपने दो चाचा स्वर्गीय धरणीनाथ गुप्ता और नागेंद्रनाथ गुप्ता की क्रांतिकारी गतिविधियों से भी प्रभावित थे, जो अलीपुर बम मामले में शामिल थे और ऋषि अरबिंद घोष के साथ जेल में थे। बादल गुप्त 1928 में बंगाल स्वयंसेवकों में शामिल हो गए। आजादी के बाद, डलहौजी स्क्वायर का नाम बिनय-बादल-दिनेश की तिकड़ी के नाम पर बी.बी.डी. बाग रखा गया। राइटर्स बिल्डिंग हमले की याद में, पहली मंजिल पर राइटर्स बिल्डिंग की दीवार में एक प्लेट उकेरी गई थी। बादल गुप्ता पोटैशियम साईनाईद लेकर शहीद हो चुके थे।

❖ **बिनोय कृष्ण बासु :-** बिनोय कृष्ण बासु ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक बंगाली स्वतंत्रता सेनानी थे। ब्रिटिश शासन के दौरान इन्होने सेक्रेटेरिएट बिल्डिंग जिसे आज राइटर्स बिल्डिंग के नाम से जाना जाता हैं, उस पर हमला किया था। बिनोय कृष्ण बासु का जन्म 11 सितम्बर 1908 को मुंशीगंज जिले के रोहितभोग गाँव (जो अभी बांग्लादेश में हैं) में हुआ था। इनके पिता रेबोतिमोहन बासु इंजीनियर थे। ढाका में मैट्रिक पास करने के बाद बिनोय मिटफोर्ड मेडिकल स्कूल (अब सर सलीमउल्लाह मेडिकल कॉलेज) में भर्ती हुए। हेमचन्द्र घोष (ढाका में रहने वाले स्वतंत्रता सेनानी) से प्रभावित होकर बिनोय ने मुक्ति संघ जॉइन किया, जिसके युगांतर पार्टी से नजदीकी तालुकात थे। क्रन्तिकारी गतिविधियों में शामिल होने के कारण बिनोय अपने मेडिकल की शिक्षा पूरी नहीं कर सके। बसु और उनके सह क्रांतिकारियों ने बंगाल वॉलेंटियर्स जॉइन किया, यह संगठन सुभास चन्द्र बोस ने 1928 में इंडियन नेशनल कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन के मौके पर बनाया था। बहुत जल्द ही बिनोय ने एक लोकल इकाई ढाका में शुरू की और उसका नाम उन्होंने बेंगोल 'वॉलेंटियर्स एसोसिएशन ढाका' रखा था। बाद में बंगाल वॉलेंटियर्स ज्यादा क्रन्तिकारी विचारधारा वाली बन गयी और बंगाल में पुलिस अत्याचार के विरुद्ध (खासकर कारावास में राजनितिक बंदियों के साथ अमानवीय व्यवहार) 'ऑपरेशन फ्रीडम' नामक योजना बनायीं। अगस्त 1930 में इस क्रन्तिकारी संगठन ने इंस्पेक्टर जनरल लोमैन के हत्या की योजना बनायीं। वह एक बीमार वरिष्ठ पुलिस अधिकारी को देखने जाने वाले थे। 29 अगस्त 1930 को सुरक्षा घेरा लांगते हुए बिनोय ने बहुत नजदीक से गोली चलाई, लोमेन की वही मृत्यु हो गयी और पुलिस सुपरिटेंडेंट हॉडसन बुरी तरह से घायल हो गए। उनकी पहचान कभी भी गोपनीय नहीं थी। एक कॉलेज मैगजीन से उनका चित्र लेकर चारो और लगा दिया गया। अंग्रेज सरकार ने बिनोय पर 10000 रूपए का इनाम रखा। अगस्त में पूर्व बंगाल में मुश्लाधार बारिश हो रही थी। ऐसे ही एक सुबह दो मुस्लिम गांववाले फटे हुए कपडे पहने घुटनो तक पानी वाले रास्ते से जाते हुए दिखाई दिए। वे दोलाईगंज रेलवे स्टेशन की तरफ जा रहे थे। वे प्लेटफार्म में पहुंचे जहाँ पुलिस वालो की भरमार थी। बिनोय का चित्र चारो और लगाया हुआ था। ढाका से नारायणगंज जाने वाली ट्रैन आई। हर कम्पार्टमेंट की अच्छी तरह से जांच की गयी। बिनय और उनके साथी एक थर्ड क्लास कम्पार्टमेंट में चढ़े जो पहले से ही भरा हुआ था। जब यह ट्रैन नारायणगंज पहुंची तब पुलिस ने सिर्फ ट्रैन की ही जाँच नहीं की लेकिन उनके पास पहले से ही नवो की जाँच करने के भी आदेश थे। कोलकाता पहुचने से पहले एक नदी पार करनी पड़ती थी। बिनोय को इसके बारे में उनके सूत्रों से पहले ही पता चल गया। जब ट्रैन एक फ्लैग स्टेशन के पास धीमी हुई तब बिनोय नाव पर चढ़ने के लिए घाट के तरफ चलने लगे। उन्हें मेघना नदी पार करने के लिए नाव की जरुरत थी। उन दोनों ने अपना हुलिआ मुस्लिम भिखारियों से बदल कर एक जमींदार और उसके नौकर का किया। कुछ देर तक उन्हें एक स्टीमर में सफर करना पड़ा। यह पूरा वाकिया किसी फ्लिम की तरह था। उनके साथी का नाम सुपति रॉय था। शहर पहुचने पर वे सीयालदाह स्टेशन नहीं उतरे बल्कि उससे पहले दमदम स्टेशन में ही उत्तर गए। वहाँ से वे स्लम एरिया 7, वल्लिउलाह लेन सेंट्रल कोलकाता में गए। लम्बे समय तक अनजाने लोगो का एक जगह रहना संदेह जगा सकता था इसलिए वे वहाँ से कतरस गढ़ रहने गए और फिर वहाँ से उत्तर कलकता में एक शांत जगह रहने गए। लेकिन उनके पास पहले से से ही पूर्वसंकेत था की जल्द ही पुलिस उन्हें ढूंढ निकालेगी। उनका भय सत्य साबित तब हुआ जब पुलिस चीफ चार्ल्स टेगार्ट उनके वहाँ पुलिस वालो की टोली लेके पहुंच गया, लेकिन तब तक बिनोय भाग चुके थे। उनका अगला शिकार कर्नल एन.एस. सिम्पसन था जो इंस्पेक्टर जनरल ऑफ प्रिजनस थे। कर्नल सिम्पसन जेल में कैदियों पर अत्याचार करने के लिए बदनाम था। क्रांतिकारियों ने यह निश्चय किया की वे सिर्फ कर्नल सिम्पसन को ही नहीं मरेंगे बल्कि सेक्रेटेरिएट बिल्डिंग (राइटर्स बिल्डिंग) में हमला कर वे ब्रिटिश अधिकारियो के मन में भय डाल देंगे। 8 दिसंबर, 1930 को यूरोपीय वस्त्र पहने, बादल गुप्ता और दिनेश गुप्ता के साथ मिलकर बिनोय राइटर्स बिल्डिंग के अंदर घुसे और कर्नल सिम्पसन की गोली मार के हत्या कर दी। इस पर ब्रिटिश पुलिस ने भी गोलियाँ चलानी शुरू कर दी और इसके बाद इन तीन क्रांतिकारियों और पुलिस के बीच खूब गोलीबारी हुई। कुछ पुलिस अफसर जैसे ट्वीनेम, नेल्सन और प्रेन्टिस इस गोलीबारी में घायल हुए। लेकिन जल्द ही पुलिस ने उन्हें चारो तरफ से घेर लिया। वे पुलिस के हिरासत में नहीं आना चाहते थे इसलिए बादल ने पोटैशियम साइनाइड ले लिया। बिनोय और दिनेश ने खुद को गोली मार दी। बिनोय को हॉस्पिटल ले जाया गया, जहा 13 दिसंबर 1930 को उनकी मृत्यु हो गयी। बिनोय, बादल और दिनेश के इस निस्वार्थ बलिदान ने कई और क्रांतिकारियों को प्रेरणा दी। भारत के आजादी के बाद कोलकाता के दलहॉउस स्क्वायर का नाम बदल कर बिनोय बादल दिनेश बाग किया गया।

❖ **चन्द्रशेखर आजाद :-** चन्द्रशेखर आजाद भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम

के स्वतंत्रता सेनानी थे। इनका जन्म भाबरा गाँव (अब चन्द्रशेखर आजादनगर) (वर्तमान अलीराजपुर जिला) में एक ब्राह्मण परिवार में 23 जुलाई सन् 1906 को हुआ था। उनके पूर्वज ग्राम बदरका वर्तमान उन्नाव जिला (बैसवारा) से थे। आजाद के पिता पण्डित सीताराम तिवारी अकाल के समय अपने पैतृक निवास बदरका को छोड़कर पहले कुछ दिनों मध्य प्रदेश अलीराजपुर रियासत में नौकरी करते रहे फिर जाकर भाबरा गाँव में बस गये। यहीं बालक चन्द्रशेखर का बचपन बीता। उनकी माँ का नाम जगरानी देवी था। आजाद का प्रारम्भिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थित भाबरा गाँव में बीता अतएव बचपन में आजाद ने भील बालकों के साथ खूब धनुष-बाण चलाये। इस प्रकार उन्होंने निशानेबाजी बचपन में ही सीख ली थी। बालक चन्द्रशेखर आजाद का मन अब देश को आजाद कराने के अहिंसात्मक उपायों से हटकर सशस्त्र क्रान्ति की ओर मुड़ गया। उस समय बनारस क्रान्तिकारियों का गढ़ था। वह मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी के सम्पर्क में आये और क्रान्तिकारी दल के सदस्य बन गये। क्रान्तिकारियों का वह दल 'हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ' के नाम से जाना जाता था। 1919 में हुए अमृतसर के जलियांवाला बाग नरसंहार ने देश के नवयुवकों को उद्वेलित कर दिया। चन्द्रशेखर उस समय पढ़ाई कर रहे थे। जब गांधीजी ने सन् 1920 में असहयोग आन्दोलनका फरमान जारी किया तो वह आग ज्वालामुखी बनकर फट पड़ी और तमाम अन्य छात्रों की भाँति चन्द्रशेखर भी सडकों पर उतर आये। अपने विद्यालय के छात्रों के जत्थे के साथ इस आन्दोलन में भाग लेने पर वे पहली बार गिरफ्तार हुए और उन्हें 15 बेतों की सजा मिली। इस घटना का उल्लेख पं० जवाहरलाल नेहरू ने कायदा तोड़ने वाले एक छोटे से लड़के की कहानी के रूप में किया है। ऐसे ही कायदे (कानून) तोड़ने के लिये एक छोटे से लड़के को, जिसकी उम्र 14 या 15 साल की थी और जो अपने को आजाद कहता था, बेंत की सजा दी गयी। उसे नंगा किया गया और बेंत की टिकटी से बाँध दिया गया। बेत एक एक कर उस पर पड़ते और उसकी चमड़ी उधेड़ डालते पर वह हर बेत के साथ चिल्लाता 'भारत माता की जय!'। वह लड़का तब तक यही नारा लगाता रहा, जब तक की वह बेहोश न हो गया। बाद में वही लड़का उत्तर भारत के क्रान्तिकारी कार्यों के दल का एक बड़ा नेता बना। असहयोग आन्दोलन के दौरान जब फरवरी 1922 में चौरी चौरा की घटना के पश्चात् बिना किसी से पूछे गाँधीजी ने आन्दोलन वापस ले लिया तो देश के तमाम नवयुवकों की तरह आजाद का भी कांग्रेस से मोह भंग हो गया और पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल, शचीन्द्रनाथ सान्याल, योगेशचन्द्र चटर्जी ने 1924 में उत्तर भारत के क्रान्तिकारियों को लेकर एक दल हिन्दुस्तानी प्रजातान्त्रिक संघ (एच०आर०ए०) का गठन किया। चन्द्रशेखर आजाद भी इस दल में शामिल हो गये। इस संगठन ने जब गाँव के अमीर घरों में डकैतियाँ डालीं, ताकि दल के लिए धन जुटाने की व्यवस्था हो सके तो यह तय किया गया कि किसी भी औरत के ऊपर हाथ नहीं उठाया जाएगा। एक गाँव में राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में डाली गई डकैती में जब एक औरत ने आजाद का पिस्तौल छीन लिया तो अपने बलशाली शरीर के बावजूद आजाद ने अपने उसूलों के कारण उस पर हाथ नहीं उठाया। इस डकैती में क्रान्तिकारी दल के आठ सदस्यों पर, जिसमें आजाद और बिस्मिल भी शामिल थे, पूरे गाँव ने हमला कर दिया। बिस्मिल ने मकान के अन्दर घुसकर उस औरत के कसकर चाँटा मारा, पिस्तौल वापस छीनी और आजाद को डाँटते हुए खींचकर बाहर लाये। इसके बाद दल ने केवल सरकारी प्रतिष्ठानों को ही लूटने का फैसला किया। 17 दिसम्बर, 1928 को चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह और राजगुरु ने संध्या के समय लाहौर में पुलिस अधीक्षक के दफ्तर को जा घेरा। ज्यों ही जे. पी. सांडर्स अपने अंगरक्षक के साथ मोटर साइकिल पर बैठकर निकला, पहली गोली राजगुरु ने दाग दी, जो साडर्स के मस्तक पर लगी और वह मोटर साइकिल से नीचे गिर पड़ा। भगत सिंह ने आगे बढ़कर चार-छह गोलियाँ और दागकर उसे बिल्कुल ठंडा कर दिया। जब सांडर्स के अंगरक्षक चन्नन सिंह ने दोनों का पीछा किया तो चन्द्रशेखर आजाद ने अपनी बंदूक से उसे भी गोली मारकर समाप्त कर दिया। लाहौर नगर में जगह-जगह परचे चिपका दिए गए कि लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया गया। समस्त भारत में क्रान्तिकारियों के इस कदम को सराहा गया। चन्द्रशेखर आजाद के ही सफल नेतृत्व में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल, 1929 को दिल्ली की केन्द्रीय असेंबली में बम विस्फोट किया। यह विस्फोट किसी को भी नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से नहीं किया गया था। विस्फोट अंग्रेज सरकार द्वारा बनाए गए काले कानूनों के विरोध में किया गया था। इस काण्ड के फलस्वरूप क्रान्तिकारी बहुत जनप्रिय हो गए। केन्द्रीय असेंबली में बम विस्फोट करने के पश्चात भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने स्वयं को गिरफ्तार करा लिया। वे न्यायालय को अपना प्रचार मंच बनाना चाहते थे। चन्द्रशेखर आजाद की इच्छा के विरुद्ध जब भगत सिंह एसेम्बली में बम फेंकने गये तो आजाद पर दल की पूरी जिम्मेवारी आ गयी। साण्डर्स वध में भी उन्होंने भगत सिंह का साथ दिया और बाद में उन्हें छुड़ाने की पूरी कोशिश भी की। आजाद की सलाह के खिलाफ जाकर यशपाल ने 23 दिसम्बर 1929 को दिल्ली के नजदीक वायसराय की गाड़ी पर बम फेंका तो इससे आजाद क्षुब्ध थे क्योंकि इसमें वायसराय तो बच गया था पर कुछ और कर्मचारी मारे गए थे। आजाद को 28 मई 1930 को भगवती चरण वोहरा की बम-परीक्षण में हुई शहादत से भी गहरा आघात लगा था। इसके कारण भगत सिंह को जेल से छुड़ाने की योजना भी खटाई में पड़ गयी थी। भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु की फाँसी रुकवाने के लिए आजाद ने दुर्गा भाभी को गांधीजी के पास भेजा जहाँ से उन्हें कोरा जवाब दे दिया गया था। आजाद ने अपने बलबूते पर झाँसी और कानपुर में अपने अड्डे बना लिये थे। झाँसी में मास्टर रुद्र नारायण, सदाशिव मलकापुरकर, भगवानदास माहौर तथा विश्वनाथ वैशम्पायन थे जबकि कानपुर में पण्डित शालिग्राम शुक्ल सक्रिय थे। शालिग्राम शुक्ल को 1 दिसम्बर 1930 को पुलिस ने आजाद से एक पार्क में मिलने जाते वक्त शहीद कर दिया था। एच०एस०आर०ए० द्वारा किये गये साण्डर्स-वध और दिल्ली एसेम्बली बम काण्ड में फाँसी की सजा पाये तीन अभियुक्तों- भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव ने अपील करने से साफ मना कर ही दिया था। अन्य सजायाफ्ता अभियुक्तों में से सिर्फ ३ ने ही प्रिवी कौन्सिल में अपील की। 11 फरवरी 1931 को लन्दन की प्रिवी कौन्सिल में अपील की सुनवाई हुई। इन अभियुक्तों की ओर से एडवोकेट प्रिन्ट ने बहस की अनुमति माँगी थी किन्तु उन्हें अनुमति नहीं मिली और बहस सुने बिना ही अपील खारिज कर दी गयी। चन्द्रशेखर आजाद ने मृत्यु दण्ड पाये तीनों प्रमुख क्रान्तिकारियों की सजा कम कराने का काफी प्रयास किया। वे उत्तर प्रदेश की हरदोई जेल में जाकर गणेशशंकर विद्यार्थी से मिले। विद्यार्थी से परामर्श कर वे इलाहाबाद गये और 20 फरवरी को जवाहरलाल नेहरू से उनके निवास आनन्द भवन में भेंट की। आजाद ने पण्डित नेहरू से यह आग्रह किया कि वे गांधी जी पर लॉर्ड इरविन से इन तीनों की फाँसी को उम्र कैद में बदलवाने के लिये जोर डालें! अल्फ्रेड पार्क में अपने एक मित्र सुखदेव राज से मन्त्रणा कर ही रहे थे तभी सी०आई०डी० का एस०एस०पी० नॉट बाबर जीप से वहाँ आ पहुँचा। उसके पीछे-पीछे भारी संख्या में कर्नलगंज थाने से पुलिस भी आ गयी। दोनों ओर से हुई

भयंकर गोलीबारी में आजाद ने तीन पुलिस कर्मियों को मौत के घाट उतार दिया और कई अंग्रेज सैनिक घायल हो गए। अंत में जब उनकी बंदूक में एक ही गोली बची तो वो गोली उन्होंने खुद को मार ली और वीरगति को प्राप्त हो गए। यह दुखद घटना 27 फरवरी 1931 के दिन घटित हुई और हमेशा के लिये इतिहास में दर्ज हो गयी। पुलिस ने बिना किसी को इसकी सूचना दिये चन्द्रशेखर आजाद का अन्तिम संस्कार कर दिया था। जैसे ही आजाद की बलिदान की खबर जनता को लगी सारा प्रयागराज अलफ्रेड पार्क में उमड़ पड़ा। जिस वृक्ष के नीचे आजाद शहीद हुए थे लोग उस वृक्ष की पूजा करने लगे। वृक्ष के तने के इर्द-गिर्द झण्डियाँ बाँध दी गयीं। लोग उस स्थान की माटी को कपडों में शीशियों में भरकर ले जाने लगे। समूचे शहर में आजाद के बलिदान की खबर से जर्बदस्त तनाव हो गया। शाम होते-होते सरकारी प्रतिष्ठानों पर हमले होने लगे। लोग सड़कों पर आ गये। आजाद के बलिदान की खबर जवाहरलाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू को मिली तो उन्होंने तमाम काँग्रेसी नेताओं व अन्य देशभक्तों को इसकी सूचना दी।। बाद में शाम के वक्त लोगों का हुजूम पुरुषोत्तम दास टंडन के नेतृत्व में प्रयागराज के रसूलाबाद शमशान घाट पर कमला नेहरू को साथ लेकर पहुँचा। अगले दिन आजाद की अस्थियाँ चुनकर युवकों का एक जुलूस निकाला गया। इस जुलूस में इतनी ज्यादा भीड थी कि प्रयागराज की मुख्य सडकों पर जाम लग गया। ऐसा लग रहा था जैसे प्रयागराज की जनता के रूप में सारा हिन्दुस्तान अपने इस सपूत को अंतिम विदाई देने उमड पड़ा हो। जुलूस के बाद सभा हुई। सभा को शचीन्द्रनाथ सान्याल की पत्नी प्रतिभा सान्याल ने सम्बोधित करते हुए कहा कि जैसे बंगाल में खुदीराम बोस की बलिदान के बाद उनकी राख को लोगों ने घर में रखकर सम्मानित किया वैसे ही आजाद को भी सम्मान मिलेगा।

❖ **भगत सिंह :-** भगत सिंह भारत के एक महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रान्तिकारी थे। चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर इन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अभूतपूर्व साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया। भगत सिंह का जन्म 27 सितंबर 1907 ई० को एक सिख परिवार में हुआ था। इनकी जन्म भूमि बंगा गांव, पश्चिमी पंजाब में है जो अब पाकिस्तान में है। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। यह एक किसान परिवार से थे। अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। उस समय भगत सिंह करीब बारह वर्ष के थे जब जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ था। इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जलियाँवाला बाग पहुँच गए। इस उम्र में भगत सिंह अपने चाचाओं की क्रान्तिकारी किताबें पढ़ कर सोचते थे कि इनका रास्ता सही है कि नहीं? गांधी जी का असहयोग आन्दोलन छिड़ने के बाद वे गांध ी जी के अहिंसात्मक तरीकों और क्रान्तिकारियों के हिंसक आन्दोलन में से अपने लिए रास्ता चुनने लगे। गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन को रद्द कर देने के कारण उनमें थोड़ा रोष उत्पन्न हुआ, पर पूरे राष्ट्र की तरह वो भी महात्मा गाँधी का सम्मान करते थे, पर उन्होंने गाँधी जी के अहिंसात्मक आन्दोलन की जगह देश की स्वतन्त्रता के लिए हिंसात्मक क्रांति का मार्ग अपनाना अनुचित नहीं समझा। उन्होंने जुलूसों में भाग लेना प्रारम्भ किया तथा कई क्रान्तिकारी दलों के सदस्य बने। उनके दल के प्रमुख क्रान्तिकारियों में चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु इत्यादि थे। काकोरी काण्ड में 4 क्रान्तिकारियों को फाँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि उन्होंने 1928 में अपनी पार्टी नौजवान भारत सभा का हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन में विलय कर दिया और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। 1928 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए भयानक प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों में भाग लेने वालों पर अंग्रेजी शासन ने लाठी चार्ज भी किया। इसी लाठी चार्ज से आहत होकर लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई। अब इनसे रहा न गया। एक गुप्त योजना के तहत इन्होंने पुलिस सुपरिटेंडेंट स्कॉट को मारने की योजना सोची। सोची गई योजना के अनुसार भगत सिंह और राजगुरु लाहौर कोतवाली के सामने व्यस्त मुद्रा में टहलने लगे। उधर जयगोपाल अपनी साइकिल को लेकर ऐसे बैठ गए जैसे कि वो खराब हो गई हो। गोपाल के इशारे पर दोनों सचेत हो गए। उधर चन्द्रशेखर आजाद पास के डी०ए०वी० स्कूल की चहारदीवारी के पास छिपकर घटना को अंजाम देने में रक्षक का काम कर रहे थे। 17 दिसंबर 1928 को करीब सवा चार बजे, ए०एस०पी० सॉण्डर्स के आते ही राजगुरु ने एक गोली सीधी उसके सर में मारी, जिससे वह पहले ही मर जाता। लेकिन तुरन्त बाद भगत सिंह ने भी 3-4 गोली दाग कर उसके मरने का पूरा इन्तजाम कर दिया। ये दोनों जैसे ही भाग रहे थे कि एक सिपाही चनन सिंह ने इनका पीछा करना शुरू कर दिया। चन्द्रशेखर आजाद ने उसे सावधान किया-'आगे बढ़े तो गोली मार दूँगा।' नहीं मानने पर आजाद ने उसे गोली मार दी और वो वहीं पर मर गया। इस तरह इन लोगों ने लाला लाजपत राय की मौत का बदला ले लिया। मजदूर विरोधी ऐसी नीतियों को ब्रिटिश संसद में पारित न होने देना उनके दल का निर्णय था। सभी चाहते थे कि अँग्रेजों को पता चलना चाहिए कि हिन्दुस्तानी जाग चुके हैं और उनके हृदय में ऐसी नीतियों के प्रति आक्रोश है। ऐसा करने के लिये ही उन्होंने दिल्ली की केन्द्रीय एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई थी। भगत सिंह चाहते थे कि इसमें कोई खून खराबा न हो और अँग्रेजों तक उनकी आवाज भी पहुँचे। हालाँकि प्रारम्भ में उनके दल के सब लोग ऐसा नहीं सोचते थे पर अन्त में सर्वसम्मति से भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त का नाम चुना गया। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 8 अप्रैल 1929 को केन्द्रीय असेम्बली में इन दोनों ने एक ऐसे स्थान पर बम फेंका जहाँ कोई मौजूद न था, अन्यथा उसे चोट लग सकती थी। पूरा हाल धुएँ से भर गया। भगत सिंह चाहते तो भाग भी सकते थे पर उन्होंने पहले ही सोच रखा था कि उन्हें दण्ड स्वीकार है चाहें वह फाँसी ही क्यों न हो; अतः उन्होंने भागने से मना कर दिया। उस समय वे दोनों खाकी कमीज तथा निकर पहने हुए थे। बम फटने के बाद उन्होंने 'इंकलाब-जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद-मुर्दाबाद!' का नारा लगाया और अपने साथ लाये हुए पर्चे हवा में उछाल दिए। इसके कुछ ही देर बाद पुलिस आ गई और दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में भगत सिंह करीब 2 साल रहे। उन्होंने जेल में अंग्रेजी में एक लेख भी लिखा जिसका शीर्षक था मैं नास्तिक क्यों हूँ? जेल में भगत सिंह व उनके साथियों ने 64 दिनों तक भूख हडताल की। उनके एक साथी यतीन्द्रनाथ दास ने तो भूख हड़ताल में अपने प्राण ही त्याग दिये थे। 26 अगस्त, 1930 को अदालत ने भगत सिंह को भारतीय दंड संहिता की धारा 129, 302 तथा विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 4 और 6 एफ तथा आईपीसी की धारा 120 के अंतर्गत अपराधी सिद्ध किया। 7 अक्तूबर, 1930 को अदालत के द्वारा 68 पृष्ठों का निर्णय दिया, जिसमें भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को फाँसी की सजा सुनाई गई। फाँसी की सजा सुनाए जाने के साथ ही लाहौर में धारा 144 लगा दी गई। इसके बाद भगत सिंह की फाँसी की माफी के लिए प्रिवी परिषद में अपील दायर की गई परन्तु यह अपील 10 जनवरी, 1931 को रद्द कर

दी गई। इसके बाद तत्कालीन काँग्रेस अध्यक्ष पं. मदन मोहन मालवीय ने वायसराय के सामने सजा माफी के लिए 14 फरवरी, 1931 को अपील दायर की कि वह अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए मानवता के आधार पर फांसी की सजा माफ कर दें। भगत सिंह की फाँसी की सजा माफ करवाने हेतु महात्मा गाँधी ने 17 फरवरी 1931 को वायसराय से बात की फिर 18 फरवरी, 1931 को आम जनता की ओर से भी वायसराय के सामने विभिन्न तर्को के साथ सजा माफी के लिए अपील दायर की। यह सब कुछ भगत सिंह की इच्छा के खिलाफ हो रहा था क्योंकि भगत सिंह नहीं चाहते थे कि उनकी सजा माफ की जाए। 23 मार्च 1931 को शाम में करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह तथा इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दे दी गई। फाँसी पर जाने से पहले वे लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे और जब उनसे उनकी आखरी इच्छा पूछी गई तो उन्होंने कहा कि वह लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे और उन्हें वह पूरी करने का समय दिया जाए। कहा जाता है कि जेल के अधिकारियों ने जब उन्हें यह सूचना दी कि उनके फाँसी का वक्त आ गया है तो उन्होंने कहा था–'ठहरिए! पहले एक क्रान्तिकारी दूसरे से मिल तो ले।' फिर एक मिनट बाद किताब छत की ओर उछाल कर बोले–'ठीक है अब चलो।' फाँसी पर जाते समय वे तीनों मस्ती से गा रहे थे –

मेरा रँग दे बसन्ती चोला, मेरा रँग दे।
मेरा रँग दे बसन्ती चोला। माय रँग दे बसन्ती चोला...!'

फाँसी के बाद कहीं कोई आन्दोलन न भड़क जाये इसके डर से अंग्रेजों ने पहले इनके मृत शरीर के टुकड़े किये फिर इसे बोरियों में भरकर फिरोजपुर की ओर ले गये जहाँ घी के बदले मिट्टी का तेल डालकर ही इनको जलाया जाने लगा। गाँव के लोगों ने आग जलती देखी तो करीब आए। इससे डरकर अंग्रेजों ने इनकी लाश के अधजले टुकड़ों को सतलुज नदी में फेंका और भाग गए। जब गाँव वाले पास आए तब उन्होंने इनके मृत शरीर के टुकड़ो कों एकत्रित कर विधिवत दाह संस्कार किया। और भगत सिंह हमेशा के लिए अमर हो गये। इसके बाद लोग अंग्रेजों के साथ-साथ गाँधी को भी इनकी मौत का जिम्मेवार समझने लगे। इस कारण जब गांधी काँग्रेस के लाहौर अधिवेशन में हिस्सा लेने जा रहे थे तो लोगों ने काले झण्डों के साथ गाँधी जी का स्वागत किया। एकाध जगह पर गाँधी पर हमला भी हुआ, किन्तु सादी वर्दी में उनके साथ चल रही पुलिस ने बचा लिया। क्या आप कल्पना कर सकते हैं, एक हुकूमत, जिसका दुनियां के इतने बड़े हिस्से पर शासन था, इसके बारे में कहा जाता था कि उनके शासन में सूर्य कभी अस्त नहीं होता। इतनी ताकतवर हुकूमत, एक 23 साल के युवक से भयभीत हो गई थी। उनकी मृत्यु की खबर को लाहौर के दैनिक ट्रिब्यून तथा न्यूयॉर्क के एक पत्र डेली वर्कर ने छापा। इसके बाद भी कई मार्क्सवादी पत्रों में उन पर लेख छपे, पर चूँकि भारत में उन दिनों मार्क्सवादी पत्रों के आने पर प्रतिबन्ध लगा था इसलिए भारतीय बुद्धिजीवियों को इसकी खबर नहीं थी। देशभर में उनकी शहादत को याद किया गया। दक्षिण भारत में पेरियार ने उनके लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूँ?' पर अपने साप्ताहिक पत्र कुडई आरसू के 22-29 मार्च 1931 के अंक में तमिल में सम्पादकीय लिखा। इसमें भगत सिंह की प्रशंसा की गई थी तथा उनकी शहादत को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ऊपर जीत के रूप में देखा गया था। आज भी भारत और पाकिस्तान की जनता भगत सिंह को आजादी के दीवाने के रूप में देखती है जिसने अपनी जवानी सहित सारी जिन्दगी देश के लिये समर्पित कर दी।

❖ **सुखदेव :-** सुखदेव का पूरा नाम सुखदेव थापर था और उपनाम विलेजर। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रान्तिकारी थे जिन्होंने लाला लाजपत राय पर लाठीचार्ज तथा उसके कारण उनकी मृत्यु का बदला लिया था। इन्होने भगत सिंह का मार्गदर्शन किया था। इन्होने ही लाला

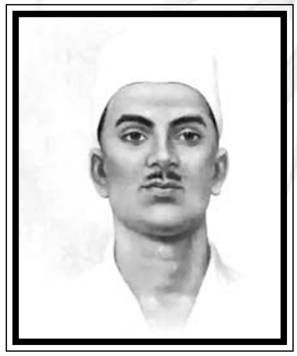

लाजपत राय जी से मिलकर चंद्रशेखर आजाद को मिलने कि इच्छा जाहिर कि थी। सुखदेव थापर का जन्म पंजाब के लुधियाना शहर में हिन्दू खत्री परिवार में रामलाल थापर व श्रीमती रल्ली देवी के घर विक्रम सम्वत 1964 के वैशाख मास में शुक्ल पक्ष तृतीया तदनुसार 15 मई 1907 को उपरान्त पौने ग्यारह बजे हुआ था। जन्म से तीन माह पूर्व ही पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण इनके ताऊ अचिन्तराम ने इनका पालन पोषण करने में इनकी माता को पूर्ण सहयोग किया। सुखदेव की तायी जी ने भी इन्हें अपने पुत्र की तरह पाला। लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिये जब योजना बनी तो साण्डर्स का वध करने में इन्होंने भगत सिंह तथा राजगुरु का पूरा साथ दिया था। यही नहीं, सन् 1929 में जेल में कैदियों के साथ अमानवीय व्यवहार किये जाने के विरोध में राजनीतिक बन्दियों द्वारा की गयी व्यापक हड़ताल में बढ़-चढ़कर भाग भी लिया था। गांधी-इर्विन समझौते के सन्दर्भ में इन्होंने एक खुला पत्र गांधी के नाम अंग्रेजी में लिखा था, जिसमें सुखदेव ने महात्मा गांधी द्वारा क्रांतिकारी गतिविधियों को नकारे जाने का विरोध किया था। इसमें सुखदेव ने साफ शब्दों में अपने विचार व्यक्त करते हुए गांधीजी को इस बात से अवगत कराया था कि उनका उद्देश्य केवल बड़ी-बड़ी बातें करना ही नहीं, बल्कि सच यह है कि देशहित के लिए क्रांतिकारी किसी भी हद तक जा सकते हैं। ऐसे में गांधीजी यदि जेल में बंद कैदियों की पैरवी नहीं कर सकते तो उन्हें इन क्रांतिकारियों के खिलाफ नकारात्मक माहौल बनाने से भी बचना चाहिए। उनका उत्तर यह मिला कि निर्धारित तिथि और समय से पूर्व जेल मैनुअल के नियमों को दरकिनार रखते हुए 23 मार्च 1931 को सायंकाल 7 बजे सुखदेव, राजगुरु और भगत सिंह तीनों को लाहौर सेण्ट्रल जेल में फाँसी पर लटका कर शहीद कर डाला गया। इस प्रकार भगत सिंह तथा राजगुरु के साथ सुखदेव भी मात्र 23 वर्ष की आयु में शहीद हो गये।

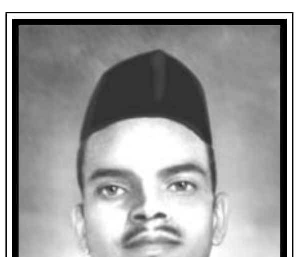

❖ **राजगुरु :-** शिवराम हरि राजगुरु भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रान्तिकारी थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में राजगुरु की शहादत एक महत्वपूर्ण घटना थी। शिवराम हरि राजगुरु का जन्म 24 अगस्त 1908 में पुणे जिला के खेडा गाँव में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। 6 वर्ष की आयु में पिता का निधन हो जाने से बहुत छोटी उम्र में ही ये वाराणसी विद्याध्ययन करने एवं संस्कृत सीखने आ गये थे। इन्होंने हिन्दू धर्म-ग्रन्थों तथा वेदों का अध्ययन तो किया ही लघु सिद्धान्त कौमुदी जैसा क्लिष्ट ग्रन्थ बहुत कम आयु में कण्ठस्थ कर लिया था। इन्हें कसरत (व्यायाम) का बेहद शौक था और छत्रपति शिवाजी की छापामार युद्ध-शैली के बड़े प्रशंसक थे। वाराणसी में विद्याध्ययन करते हुए राजगुरु का सम्पर्क अनेक क्रान्तिकारियों से हुआ। चन्द्रशेखर आजाद से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उनकी पार्टी हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी से तत्काल जुड़ गये। आजाद की पार्टी के अन्दर इन्हें रघुनाथ के छद्म-नाम से जाना जाता था; राजगुरु के नाम से नहीं। पण्डित चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह और यतीन्द्रनाथ दास आदि क्रान्तिकारी इनके अभिन्न मित्र थे। राजगुरु एक

अच्छे निशानेबाज भी थे। साण्डर्स का वध करने में इन्होंने भगत सिंह तथा सुखदेव का पूरा साथ दिया था जबकि चन्द्रशेखर आजाद ने छाया की भाँति इन तीनों को सामरिक सुरक्षा प्रदान की थी। 23 मार्च 1931 को इन्होंने भगत सिंह तथा सुखदेव के साथ लाहौर सेण्ट्रल जेल में फाँसी के तख्ते पर झूल कर अपने नाम को हिन्दुस्तान के अमर शहीदों की सूची में अहमियत के साथ दर्ज करा दिया।

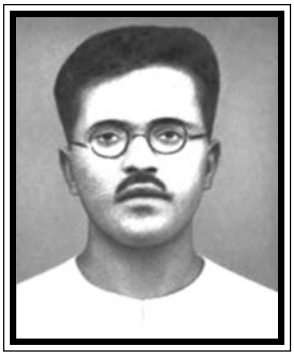

❖ **भगवती चरण वोहरा :-** भगवती चरण वोहरा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी थे। वे हिन्दुस्तान प्रजातांत्रिक सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य और भगत सिंह के साथ ही एक प्रमुख सिद्धांतकार होते हुए भी गिरफ्तार नहीं किए जा सके और न ही वे फांसी पर चढ़े। भगवती चरण वोहरा का जन्म नवंबर 1903 में लाहौर में हुआ था। उनके पिता शिव चरण वोहरा रेलवे के एक उच्च अधिकारी थे। बाद में वे आगरा से लाहौर चले आये। उनका परिवार आर्थिक रूप से सम्पन्न था। भगवती चरण की शिक्षा-दीक्षा लाहौर में ही हुई। उनका विवाह भी कम उम्र में कर दिया गया। पत्नी का नाम दुर्गा था। बाद के दौर में उनकी पत्नी भी क्रांतिकारी कार्यो की सक्रिय सहयोगी बनी। क्रान्तिकारियो द्वारा दिया गया 'दुर्गा भाभी' सन्बोधन एक आम सन्बोधन बन गया। लाहौर नेशनल कालेज में शिक्षा के दौरान भगवती चरण ने रुसी क्रान्तिकारियो से प्रेरणा लेकर छात्रो की एक अध्ययन मण्डली का गठन किया था। राष्ट्र की परतंत्रता और उससे मुक्ति के प्रश्न पर केन्द्रित इस अध्ययन मण्डली में नियमित रूप से शामिल होने वालो में भगत सिंह, सुखदेव आदि प्रमुख थे। बाद में चलकर इन्ही लोगो ने नौजवान भारत सभा की स्थापना की। पढ़ाई के दौरान 1921 में ही भगवती चरण गांधी जी के आह्वान पर पढाई छोड़कर असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े थे। बाद में आन्दोलन वापस होने पर इन्होने कालेज की पढाई पूरी की। बीए कि परीक्षा पास की साथ ही नौजवान भारत सभा के गठन और कार्य को आगे बढाया। इस सभा के जनरल सेक्रेटी भगत सिंह और प्रोपेगंडा (प्रचार) सेक्रेटी भगवती चरण थे। अप्रैल 1928 में नौजवान भारत सभा का घोषणा पत्र प्रकाशित हुआ। भगत सिंह व अन्य साथियो से सलाह-मशविरे से मसविदे को तैयार करने का काम भगवती चरण वोहरा का था। नौजवान भारत सभा के उत्कर्ष में भगवती चरण और भगत सिंह का ही प्रमुख हाथ था। भगत सिंह के अलावा वे ही संगठन के प्रमुख सिद्धांतकार थे। क्रांतिकारी विचारक, संगठनकर्ता, वक्ता, प्रचारकर्ता, आदर्श के प्रति निष्ठा व प्रतिबधता तथा उसके लिए अपराजेय हिम्मत-हौसला आदि सारे गुण भगवती चरण में विद्यमान थे। किसी काम को पूरे मनोयोग के साथ पूरा करने में भगवती चरण बेजोड़ थे। 1924 में सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल द्वारा 'हिन्दुस्तान-प्रजातांत्रिक संघ के घोषणा पत्र 'दि रिवोल्यूशनरी' को 1 जनवरी 1925 को व्यापक से वितरित करने की प्रमुख जिम्मेदारी भगवती चरण पर ही थी। जिसे उन्होंने बखूबी पूरा किया। बाद के दौर में संगठन के साथियो में भगवती चरण के बारे में यह संदेह फैलाया गया की वे सी०आई०डी० के आदमी हैं और उससे तनख्वाह पाते हैं। इन आरोपों को लगाने के पीछे उस समय संगठन में आये वे लोग थे जिन्हें किसी काम का जोखिम नहीं उठाना था। इसलिए भी वे लोग बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी भगवती चरण पर आरोप लगाकर न केवल खुद नेतृत्त्व में आना चाहते थे। बल्कि क्रांतिकारी कार्यवाहियों पर रोक भी लगाना चाहते थे। ऐसे लोगो का यह उद्देश्य भी था कि संगठन के काम को आपसी बहस, मुबाहिसा, प्रचार और पैसा जमा करने के काम तक सीमित कर दिया जाए। भगवती चरण पर सी०आई०डी० का आरोप लगाने वालो में प्रमुख सज्जन जयचन्द्र विद्यालंकार थे। वे उन दिनों नेशनल कालेज के अध्यापक भी थे। नौजवान क्रांतिकारी टोली पर उनके पद, ज्ञान व विद्वता कि धाक भी थी। भगवती चरण ऐसे आरोपों से बेपरवाह रहते हुए क्रांतिकारी कार्यो को आगे बढाने में लगे रहते थे। उनका कहना था कि जो उचित है उसे करते जाना उनका काम है। सफाई देना और नाम कमाना उनका काम नही है। भगवती चरण लखनऊ के काकोरी मामला, लाहौर षड्यंत्र केस और फिर लाला लाजपत राय को मारने वाले अंग्रेज सार्जेंट सांडर्स की हत्या में भी आरोपित थे। पर, न तो कभी पकड़े गये और न ही क्रांतिकारी कार्यो को करने से अपना पैर पीछे खीचा। इस बात का सबूत यह है कि इतने आरोपों से घिरे होने के बाद भी भगवती चरण ने स्पेशल ट्रेन में बैठे वायसराय को चलती ट्रेन में ही उड़ा देने का भरपूर प्रयास किया। इस काम में यशपाल, इन्द्रपाल, भागाराम उनके सहयोगी थे। महीने भर की तैयारी के बाद नियत तिथि पर गुजरती स्पेशल ट्रेन के नीचे बम-बिस्फोट करने में लोग कामयाब भी हो गये। परन्तु वायसराय बच गया। ट्रेन में खाना बनाने और खाना खाने वाला डिब्बा क्षतिग्रस्त हो गया और उसमे एक आदमी कि मौत हो गयी। भगवती चरण वोहरा की मृत्यु 28 मई 1930 को बम परिक्षण के दौरान दुर्घटना में हुई।

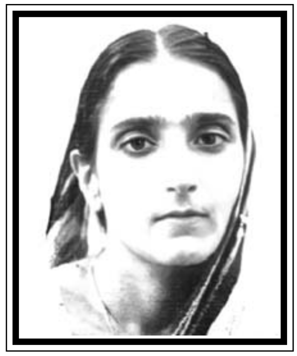

❖ **दुर्गावती देवी :-** दुर्गावती देवी या दुर्गा भाभी भारत के स्वतंत्रता संग्राम में क्रान्तिकारियों की प्रमुख सहयोगी थीं। 18 दिसम्बर 1928 को भगत सिंह ने इन्ही दुर्गा भाभी के साथ वेश बदल कर कलकत्ता-मेल से यात्रा की थी। दुर्गा भाभी क्रांतिकारी भगवती चरण बोहरा की धर्मपत्नी थीं। दुर्गा भाभी का जन्म सात अक्टूबर 1907 को शहजादपुर ग्राम में पंडित बांके बिहारी के यहां हुआ था। यह ग्राम वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश के कोशांबी जिले में आता है। इनके पिता इलाहाबाद कलेक्ट्रेट में नाजिर थे और इनके बाबा महेश प्रसाद भट्ट जालौन जिला में थानेदार के पद पर तैनात थे। इनके दादा पं. शिवशंकर शहजादपुर में जमींदार थे, जिन्होंने बचपन से ही दुर्गा भाभी के सभी बातों को पूर्ण करते थे। दस वर्ष की अल्प आयु में ही इनका विवाह लाहौर के भगवती चरण बोहरा के साथ हो गया। इनके ससुर शिवचरण जी रेलवे में ऊंचे पद पर तैनात थे। अंग्रेज सरकार ने उन्हें राय साहब का खिताब दिया था। भगवती चरण बोहरा राय साहब का पुत्र होने के बावजूद अंग्रेजों की दासता से देश को मुक्त कराना चाहते थे। वे क्रांतिकारी संगठन के प्रचार सचिव थे। वर्ष 1920 में पिता जी की मृत्यु के पश्चात भगवती चरण वोहरा खुलकर क्रांति में आ गए और उनकी पत्नी दुर्गा ने भी पूर्ण रूप से सहयोग किया। 28 मई 1930 को रावी नदी के तट पर साथियों के साथ बम बनाने के बाद परीक्षण करते समय वोहरा जी शहीद हो गए। उनके शहीद होने के बावजूद दुर्गा भाभी साथी क्रांतिकारियों के साथ सक्रिय रहीं। 9 अक्टूबर 1930 को दुर्गा भाभी ने गवर्नर हैली पर गोली चला दी थी जिसमें गवर्नर हैली तो बच गया लेकिन सैनिक अधिकारी टेलर घायल हो गया। मुंबई के पुलिस कमिश्नर को भी दुर्गा भाभी ने गोली मारी थी, जिसके परिणाम स्वरूप अंग्रेज पुलिस इनके पीछे पड़ गई। मुंबई के एक फ्लैट से दुर्गा भाभी व साथी यशपाल को गिरफ्तार कर लिया गया। दुर्गा भाभी का काम साथी क्रांतिकारियों के लिए राजस्थान से पिस्तौल लाना व ले जाना था। चंद्रशेखर आजाद ने अंग्रेजों से लड़ते वक्त जिस पिस्तौल

से खुद को गोली मारी थी उसे दुर्गा भाभी ने ही लाकर उनको दी थी। उस समय भी दुर्गा भाभी उनके साथ ही थीं। उन्होंने पिस्तौल चलाने की ट्रेनिंग लाहौर व कानपुर में ली थी। भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त जब केंद्रीय असेंबली में बम फेंकने जाने लगे तो दुर्गा भाभी व सुशीला मोहन ने अपनी बांहें काट कर अपने रक्त से दोनों लोगों को तिलक लगाकर विदा किया था। असेंबली में बम फेंकने के बाद इन लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया तथा फांसी दे दी गई। साथी क्रांतिकारियों के शहीद हो जाने के बाद दुर्गा भाभी एकदम अकेली पड़ गई। वह अपने पांच वर्षीय पुत्र शचींद्र को शिक्षा दिलाने की व्यवस्था करने के उद्देश्य से वह साहस कर दिल्ली चली गई। जहां पर पुलिस उन्हें बराबर परेशान करती रहीं। दुर्गा भाभी उसके बाद दिल्ली से लाहौर चली गई, जहां पर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और तीन वर्ष तक नजरबंद रखा। फरारी, गिरफ्तारी व रिहाई का यह सिलसिला 1931 से 1935 तक चलता रहा। अंत में लाहौर से जिलाबदर किए जाने के बाद 1935 में गाजियाबाद में प्यारेलाल कन्या विद्यालय में अध्यापिका की नौकरी करने लगी और कुछ समय बाद पुन: दिल्ली चली गई और कांग्रेस में काम करने लगीं। कांग्रेस का जीवन रास न आने के कारण उन्होंने 1937 में छोड़ दिया। 1939 में इन्होंने मद्रास जाकर मारिया मांटेसरी से मांटेसरी पद्धति का प्रशिक्षण लिया तथा 1940 में लखनऊ में कैंट रोड के (नजीराबाद) एक निजी मकान में सिर्फ पांच बच्चों के साथ मांटेसरी विद्यालय खोला। आज भी यह विद्यालय लखनऊ में मांटेसरी इंटर कालेज के नाम से जाना जाता है। 14 अक्टूबर 1999 को गाजियाबाद में उनका देहान्त हो गया।

❖ **प्रीतिलता वाद्देदार :-** प्रीतिलता वाद्देदार भारतीय स्वतंत्रता संगाम की महान क्रान्तिकारिणी थीं। वे एक मेधावी छात्रा तथा निर्भीक लेखिका भी थीं। वे निडर होकर लेख लिखती थीं। प्रीतिलता वाददेदार का जन्म 5 मई 1911 को तत्कालीन पूर्वी भारत (और अब बांग्लादेश) में स्थित चटगाँव के एक गरीब परिवार में हुआ था। उनके पिता नगरपालिका के क्लर्क थे। वे चटगाँव के डॉ खस्तागिर शासकीय कन्या विद्यालय की मेघावी छात्रा थीं। उन्होने सन् 1928 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उतीर्ण की। इसके बाद सन् 1929 में उन्होने ढाका के इडेन कॉलेज में प्रवेश लिया और इण्टरमिडिएट परीक्षा में पूरे ढाका बोर्ड में पाँचवें स्थान पर आयीं। दो वर्ष बाद प्रीतिलता ने कोलकाता के बेथुन कॉलेज से दर्शनशास्त्र से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। कोलकाता विश्वविद्यालय के ब्रितानी अधिकारियों ने उनकी डिग्री को रोक दिया। उन्हें 80 वर्ष बाद मरणोपरान्त यह डिग्री प्रदान की गयी। जब वे कॉलेज की छात्रा थीं, रामकृष्ण विश्वास से मिलने जाया करतीं थी जिन्हें बाद में फांसी की सजा हुई। उन्होने निर्मल सेन से युद्ध का प्रशिक्षण लिया था। स्कूली जीवन में ही वे बालचर संस्था की सदस्य हो गयी थी। वहाँ उन्होंने सेवाभाव और अनुशासन का पाठ पढ़ा। बालचर संस्था में सदस्यों को ब्रिटिश सम्राट के प्रति एकनिष्ट रहने की शपथ लेनी होती थी। संस्था का यह नियम प्रीतिलता को खटकता था। उन्हें बेचैन करता था। यही उनके मन में क्रान्ति का बीज पनपा था। बचपन से ही वह रानी लक्ष्मी बाई के जीवनचरित से खूब प्रभावित थी। शिक्षा उपरान्त उन्होंने परिवार की मदद के लिए एक पाठशाला में नौकरी शुरू की। लेकिन उनकी दृष्टि में केवल कुटुंब ही नहीं था, पूरा देश था, देश की स्वतंत्रता थी। पाठशाला की नौकरी करते हुए उनकी भेट प्रसिद्ध क्रांतिकारी सूर्य सेन से हुई। प्रीतिलता उनके दल की सक्रिय सदस्य बनी। पहले भी जब वे ढाका में पढ़ते हुए छुट्टी में चटगाँव आती थी तब उनकी क्रान्तिकारियो से मुलाकात होती थी और अपने साथ पढने वाली सहेलियों से तकरार करती थी कि वे क्रांतिकारी अत्यन्त डरपोक है, लेकिन सूर्यसेन से मिलने पर उनकी क्रान्तिकारियो के विषय में गलतफहमी दूर हो गयी। एक नया विश्वास कायम हो गया। वह बचपन से ही न्याय के लिए निर्भीक विरोध के लिए तत्पर रहती थी। स्कूल में पढ़ते हुए उन्होंने शिक्षा विभाग के एक आदेश के विरुद्ध दूसरी लडकियों के साथ मिलकर विरोध किया था। इसीलिए उन सभी लडकियों को स्कूल से निकाल दिया गया। प्रीतिलता जब सूर्यसेन से मिली तब वे अज्ञातवास में थे। उनका एक साथी रामकृष्ण विश्वास कलकत्ता के अलीपुर जेल में था। उनको फांसी की सजा सुनाई गयी थी। उनसे मिलना आसान नहीं था। लेकिन प्रीतिलता उनसे कारागार में लगभग चालीस बार मिली और किसी अधिकारी को उन पर संशय भी नहीं हुआ। यह था, उनकी बुद्धिमत्ता और बहादुरी का प्रमाण। इसके बाद वे सूर्यसेन के नेतृत्त्व कि इन्डियन रिपब्लिकन आर्मी में महिला सैनिक बनी। पूर्वी बंगाल के घलघाट में क्रान्तिकारियो को पुलिस ने घेर लिया था घिरे हुए क्रान्तिकारियो में अपूर्व सेन, निर्मल सेन, प्रीतिलता और सूर्यसेन आदि थे। सूर्यसेन ने लड़ाई करने का आदेश दिया। अपूर्वसेन और निर्मल सेन शहीद हो गये। सूर्यसेन की गोली से कैप्टन कैमरान मारा गया। सूर्यसेन और प्रीतिलता लड़ते-लड़ते भाग गये। क्रांतिकारी सूर्यसेन पर 10 हजार रूपये का इनाम घोषित था। दोनों एक सावित्री नाम की महिला के घर गुप्त रूप से रहे। वह महिला क्रान्तिकारियो को आश्रय देने के कारण अंग्रेजो का कोपभाजन बनी। सूर्यसेन ने अपने साथियो का बदला लेने की योजना बनाई। योजना यह थी की पहाड़ी की तलहटी में यूरोपीय क्लब पर धावा बोलकर नाच-गाने में मग्न अंग्रेजो को मृत्यु का दंड देकर बदला लिया जाए। प्रीतिलता के नेतृत्त्व में कुछ क्रांतिकारी वहां पहुचे। 24 सितम्बर 1932 की रात इस काम के लिए निश्चित की गयी। हथियारों से लैस प्रीतिलता ने आत्म सुरक्षा के लिए पोटेशियम साइनाइड नामक विष भी रख लिया था। पूरी तैयारी के साथ वह क्लब पहुची। बाहर से खिड़की में बम लगाया। क्लब की इमारत बम के फटने और पिस्तौल की आवाज से कापने लगी। नाच-रंग के वातावरण में एकाएक चीखे सुनाई देने लगी। 13 अंग्रेज जख्मी हो गये और बाकी भाग गये। इस घटना में एक यूरोपीय महिला मारी गयी। थोड़ी देर बाद उस क्लब से गोलीबारी होने लगी। प्रीतिलता के शरीर में एक गोली लगी। वे घायल अवस्था में भागी लेकिन फिर गिरी और पोटेशियम सायनाइड खा लिया। उस समय उनकी उम्र 21 साल थी। इतनी कम उम्र में उन्होंने झांसी की रानी का रास्ता अपनाया और उन्ही की तरह अंतिम समय तक अंग्रेजो से लड़ते हुए स्वंय ही मृत्यु का वरण कर लिया। प्रीतिलता के आत्म बलिदान के बाद अंग्रेज अधिकारियों को तलाशी लेने पर जो पत्र मिले उनमे छपा हुआ पत्र था। इस पत्र में छपा था की 'चटगाँव शस्त्रागार काण्ड के बाद जो मार्ग अपनाया जाएगा, वह भावी विद्रोह का प्राथमिक रूप होगा। यह संघर्ष भारत को पूरी स्वतंत्रता मिलने तक जारी रहेगी'।

❖ **सूर्य सेन :-** सूर्य सेन भारत की स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रान्तिकारी थे। उन्होने इंडियन रिपब्लिकन आर्मी की स्थापना की और चटगांव विद्रोह का सफल नेतृत्व किया। वे नेशनल हाईस्कूल में सीनियर ग्रेजुएट शिक्षक के रूप में कार्यरत थे। लोग प्यार से उन्हें 'मास्टर दा' कहकर सम्बोधित करते थे। अंग्रेजों ने उन्हें 12 जनवरी 1934 को चटगाँव जेल में फांसी दे दी। सूर्य सेन का जन्म

22 मार्च 1894 को हुआ था, उनके पिता का नाम रमानिरंजन था। चटगांव के नोआपाड़ा इलाके के निवासी सूर्य सेन एक अध्यापक थे। 1916 में उनके एक अध्यापक ने उनको क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित किया जब वह इंटरमीडियेट की पढ़ाई कर रहे थे और वह अनुशीलन समिति से जुड़ गये। बाद में वह बहरामपुर कालेज (अब मुर्शीदाबाद विश्वविद्यालय) में बी.ए. की पढ़ाई करने गये और युगान्तर से परिचित हुए और उसके विचारों से काफी प्रभावित रहे। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से संबद्ध इतिहासवेत्ता एम. मलिक के अनुसार घटना 18 अप्रैल 1930 से शुरू होती है जब बंगाल के चटगांव में आजादी के दीवानों ने अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने के लिए इंडियन रिपब्लिकन आर्मी (आईआरए) का गठन कर लिया। आईआरए के गठन से पूरे बंगाल में क्रांति की ज्वाला भड़क उठी और 18 अप्रैल 1930 को सूर्यसेन के नेतृत्व में दर्जनों क्रांतिकारियों ने चटगांव के शस्त्रागार को लूटकर अंग्रेज शासन के खात्मे की घोषणा कर दी। क्रांति की ज्वाला के चलते हुकूमत के नुमाइंदे भाग गए और चटगांव में कुछ दिन के लिए अंग्रेजी शासन का अन्त हो गया। इस घटना ने आग में घी का काम किया और बंगाल से बाहर देश के अन्य हिस्सों में भी स्वतंत्रता संग्राम उग्र हो उठा। इस घटना का असर कई महीनों तक रहा। पंजाब में हरिकिशन ने वहां के गवर्नर की हत्या की कोशिश की। दिसंबर 1930 में विनय बसु, बादल गुप्ता और दिनेश गुप्ता ने कलकत्ता की राइटर्स बिल्डिंग में प्रवेश किया और स्वाधीनता सेनानियों पर जुल्म ढ़हाने वाले पुलिस अधीक्षक को मौत के घाट उतार दिया। मलिक के अनुसार आईआरए के इस संग्राम में दो लड़कियों प्रीतिलता वाद्देदार और कल्पना दत्त ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सत्ता डगमगाते देख अंग्रेज बर्बरता पर उतर आए। महिलाओं और बच्चों तक को नहीं बख्शा गया। आईआरए के अधिकतर योद्धा गिरफ्तार कर लिए गए और तारकेश्वर दस्तीदार को फांसी पर लटका दिया गया। अंग्रेजों से घिरने पर प्रीतिलता ने जहर खाकर मातृभमि के लिए जान दे दी, जबकि कल्पना दत्त को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। सूर्य सेन इस विद्रोह के बाद छिपे रहे और एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलते रहे। वे एक कार्यकर्ता, एक किसान, एक पुजारी, गृह कार्यकर्ता या धार्मिक मुसलमान के रूप में छिपे रहे। इस तरह उन्होंने ब्रिटिशों के गिरफ्त में आने से बचते रहे। एक बार उन्होंने नेत्र सेन नाम के एक आदमी के घर में शरण ली। लेकिन नेत्र सेन ने उनके साथ छल कर धन के लालच में ब्रिटिशों को उनकी जानकारी दे दी और पुलिस ने फरवरी 1933 में उन्हें पकड़ लिया। इससे पहले कि नेत्र सेन को अंग्रेजों ने पुरस्कृत किया हो, क्रांतिकारी किरण सेन उनके घर में आये और दा एक लंबी चाकू के साथ उसका सिर काट डाला। नेत्र सेन की पत्नी सूर्य सेन के एक बड़ी समर्थक थी, इसलिए उन्होंने कभी भी उस क्रांतिकारी के नाम का खुलासा नहीं किया जिन्होंने नेत्र सेन की हत्या की थी। सेन को फांसी देने से पहले, अमानवीय ब्रिटिश शासकों ने उन पर क्रूरता से अत्याचार किया। बर्बर ब्रिटिश जल्लादों ने हथौड़े से उनके सभी दांतों को तोड़ दिया और सभी नाखूनों को निकाल फेंका। उनके सभी अंगों और जोड़ों को तोड़ दिया गया और उनके अचेतन शरीर को फांसी की रस्सी तक घसीटा गया था। 12 जनवरी 1934 को एक अन्य क्रांतिकारी तारकेश्वर दस्तीदार को भी सेन के साथ फांसी दी गई थी। उनकी मृत्यु के बाद, उनके मृत शरीर को अंतिम संस्कार नहीं दिया गया। बाद में पाया गया कि जेल अधिकारियों ने एक ध ातु के पिंजरे में उसकी मृत शरीर को डाल दिया और बंगाल की खाड़ी में फेंक दिया गया था।

❖ **उधम सिंह** :- उधम सिंह का पूरा नाम शहीद उधम सिंह काम्बोज था। वे भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के महान सेनानी एवं क्रान्तिकारी थे। उध म सिंह का जन्म 26 दिसम्बर 1899 को पंजाब प्रांत के संगरूर जिले के सुनाम गाँव में एक काम्बोज सिख परिवार में हुआ था। सन् 1901 में उधम सिंह की माता और 1907 में उनके पिता का निधन हो गया। इस घटना के चलते उन्हें अपने बड़े भाई के साथ अमृतसर के एक अनाथालय में शरण लेनी पड़ी। उधम सिंह के बचपन का नाम शेर सिंह काम्बोज और उनके भाई का नाम मुक्ता सिंह काम्बोज था, जिन्हें अनाथालय में क्रमशः उधम सिंह काम्बोज और साधु सिंह काम्बोज के रूप में नए नाम मिले। इतिहासकार मालती मलिक के अनुसार उधम सिंह देश में

सर्वधर्म समभाव के प्रतीक थे और इसीलिए उन्होंने अपना नाम बदलकर 'राम मोहम्मद सिंह आजाद' रख लिया था जो भारत के तीन प्रमुख धर्मों का प्रतीक है। अनाथालय में उधम सिंह की जिंदगी चल ही रही थी कि 1917 में उनके बड़े भाई का भी देहांत हो गया। वह पूरी तरह अनाथ हो गए। 1919 में उन्होंने अनाथालय छोड़ दिया और क्रांतिकारियों के साथ मिलकर आजादी की लड़ाई में शमिल हो गए। उधम सिंह अनाथ हो गए थे परंतु इसके बावजूद वह विचलित नहीं हुए और देश की आजादी तथा जनरल डायर को मारने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए लगातार काम करते रहे। उधम सिंह 13 अप्रैल 1919 को घटित जालियाँवाला बाग नरसंहार के प्रत्यक्षदर्शी थे। राजनीतिक कारणों से जलियाँवाला बाग में मारे गए लोगों की सही संख्या कभी सामने नहीं आ पाई। इस घटना से वीर उधम सिंह तिलमिला गए और उन्होंने जलियाँवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर माइकल डायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ले ली। अपने इस ध्येय को अंजाम देने के लिए उधम सिंह ने विभिन्न नामों से अफ्रीका, नैरोबी, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की। सन् 1934 में उधम सिंह लंदन पहुँचे और वहां 9, एल्डर स्ट्रीट कमर्शियल रोड पर रहने लगे। वहां उन्होंने यात्रा के उद्देश्य से एक कार खरीदी और साथ में अपना ध्येय को पूरा करने के लिए छह गोलियों वाली एक रिवाल्वर भी खरीद ली। भारत के यह वीर क्रांतिकारी, माइकल ओश्डायर को ठिकाने लगाने के लिए उचित वक्त का इंतजार करने लगे। उधम सिंह को अपने सैकड़ों भाई-बहनों की मौत का बदला लेने का मौका 1940 में मिला। जलियांवाला बाग हत्याकांड के 21 साल बाद 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हाल में बैठक थी जहां माइकल ओश्डायर भी वक्ताओं में से एक था। उधम सिंह उस दिन समय से ही बैठक स्थल पर पहुँच गए। अपनी रिवॉल्वर उन्होंने एक मोटी किताब में छिपा ली। इसके लिए उन्होंने किताब के पृष्ठों को रिवॉल्वर के आकार में उस तरह से काट लिया था, जिससे डायर की जान लेने वाला हथियार आसानी से छिपाया जा सके। बैठक के बाद दीवार के पीछे से मोर्चा संभालते हुए उधम सिंह ने माइकल ओश्डायर पर गोलियां दाग दीं। दो गोलियां माइकल ओश्डायर को लगीं जिससे उसकी तत्काल मौत हो गई। उधम सिंह ने वहां से भागने की कोशिश नहीं की और अपनी गिरफ्तारी दे दी। उन पर मुकदमा चला। 4 जून 1940 को उधम सिंह को हत्या का दोषी ठहराया गया और 31 जुलाई 1940 को उन्हें पेंटनविले जेल में फांसी दे दी गई। भारत में शहीद उधम सिंह कम्बोज के नाम से कई स्थानों का नाम रखा गया है।

❖ **हेमू कालाणी** :- हेमू कालाणी भारत के एक क्रान्तिकारी एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे, जिन्हें अंग्रेजी शासन ने मात्र 19 वर्ष की आयु में फांसी पर लटका दिया था। इन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय योगदान दिया था। 2003 में भारत के संसद परिसर में उनकी प्रतिमा स्थापित की गयी। हेमू कालाणी का जन्म 23 मार्च सन् 1923 को

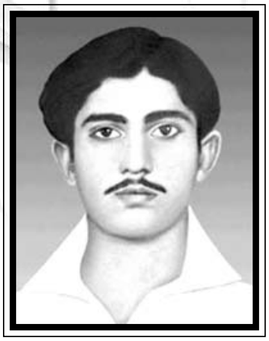

सख्खर में हुआ था जो अब पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में आता है। उनके पिताजी का नाम पेसूमल कालाणी एवं उनकी माँ का नाम जेठी बाई था। हेमू बचपन से ही बड़े साहसी थे। स्कूल जाने के साथ ही वह क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय हो गए थे। जब वह मात्र सात वर्ष के थे, तभी तिरंगा लेकर अंग्रेजों की बस्ती में चले जाते थे और अपने मित्रों के साथ निर्भीक होकर सभाएं करते थे। वह पढ़ाई–लिखाई में अच्छे होने के अलावा अच्छे तैराक तथा धावक भी थे। वह तैराकी में कई बार पुरस्कृत हुए थे। जब वे किशोर वयस्क थे तब उन्होंने अपने साथियों के साथ विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया और लोगों से स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने का आग्रह किया। सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन चला। सिंध प्रांत में जब यह आंदोलन तीव्र हुआ तो किशोरों व नवयुवकों के साथ हेमू कालाणी भी 'स्वराज सेना' के जरिए मुख्य भूमिका में इससे जुड़ गए। गोपनीय सूत्रों से सिंध के क्रांतिकारियों को जानकारी मिली कि बलूचिस्तान में चल रहे उग्र आंदोलन को कुचलने के लिए 23 अक्टूबर, 1942 की रात अंग्रेज सैनिकों, हथियारों व बारूद से भरी रेलगाड़ी सिंध के रोहिणी स्टेशन से रवाना होकर सक्खर शहर से गुजरती हुई बलूचिस्तान के क्वेटा नगर जाएगी। यह समाचार सुनकर सक्खर के 19 वर्षीय छात्र हेमू कालाणी ने रेलगाड़ी को गिराने का दायित्व अपने ऊपर लिया, जिसमें उनके साथ दो सहयोगी नंद और किशन भी थे। रेलगाड़ी गुजरने से पहले ही तीनों नवयुवक एक सुनसान स्थल पर पहुंचे। हेमू कालाणी ने रिंच और हथौड़े की सहायता से रेल की पटरियों की फिशप्लेटों को उखाड़ना शुरू कर दिया। अन्य दो साथी निगरानी कर रहे थे। रात की निस्तब्धता में हथौड़ा चलाने की आवाजें दूर तक जा रही थीं। उसे सुनकर दूर गश्त कर रहे सिपाही दौड़कर आए। नंद और किशन तो वहां से भाग कर छिप गए, मगर हेमू कालाणी को उन्होंने पकड़ लिया। जेल में लाकर उन पर कोड़े बरसाए गए और उनसे दो सहयोगियों का नाम पूछा गया। हेमू का हर बार यही उत्तर होता था, मेरे दो साथी थे–रिंच और हथौड़ा। सक्खर की सैन्य अदालत ने देशद्रोह के अपराध में 19 वर्ष कुछ माह होने के कारण हेमू कालाणी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। अनुमोदन के लिए निर्णय हैदराबाद (सिंध) स्थित सेना मुख्यालय के प्रमुख अधिकारी कर्नल रिचर्डसन के पास भेजा गया। ब्रिटिश राज का खतरनाक शत्रु करार देते हुए कर्नल रिचर्डसन ने हेमू कालाणी की सजा को फांसी में बदल दिया। 21 जनवरी, 1943 को प्रात: सात बजकर 55 मिनट पर हेमू कालाणी को फांसी पर लटकाया गया। उस समय के सिंध के गणमान्य लोगों ने एक पेटीशन दायर की और वायसराय से उनको फांसी की सजा ना देने की अपील की। वायसराय ने इस शर्त पर यह स्वीकार किया कि हेमू कालाणी अपने साथियों का नाम और पता बताये पर हेमू कालाणी ने यह शर्त अस्वीकार कर दी। 21 जनवरी 1943 को उन्हें फांसी की सजा दी गई। जब फांसी से पहले उनसे आखरी इच्छा पूछी गई तो उन्होंने भारत वर्ष में फिर से जन्म लेने की इच्छा जाहिर की। इंकलाब जिंदाबाद और भारत माता की जय की घोषणा के साथ उन्होंने फांसी को स्वीकार किया 1947 में भारत के विभाजन पर सिन्ध में हुए धार्मिक उन्माद के कारण हेमू की माँ भारत आ गयीं।

❖ **कुशल कोंवार :**- असम के गोलाघाट जिले के सरूपथर जिले के बलिजान में जन्मे कुशल कोंवार का जन्म 21 मार्च 1905 को हुआ था। वह एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे। वे असम के भारतीय असमिया ताई–अहोम स्वतंत्रता सेनानी थे। 1942–1943 के भारत छोड़ो आंदोलन के अंतिम चरण में, वे फांसी पर लटकाए जाने वाले एकमात्र भारतीय शहीद थे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य थे। बेजबरुआ स्कूल में पढ़ाई के दौरान, वे महात्मा गांधीजी के असहयोग आंदोलन के आह्वान से प्रेरित हुए और उसमें सक्रिय रूप से भाग लिया। गांधीजी के अहिंसा, सत्य और स्वराज के आदर्शों ने इस युवा को प्रेरित किया। गांधी जी के आह्वान और स्वतंत्रता की भावना ने उन्हें बहुत प्रेरित किया। इसी प्रेरणा से उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। कांग्रेस पार्टी का गठन करके उन्होंने सरूपथर क्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध असहयोग आंदोलन और सत्याग्रह का नेतृत्व किया। वे सरूपथर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बने। 10 अक्टूबर 1942 को कुछ लोगों ने तोड़फोड़ की योजना बनाई और गोलाघाट जिले के सरूपथर में रेलवे लाइन की कुछ स्लीपरें हटा दीं। ब्रिटिश सेना ने कई निर्दोष लोगों को गिरफ्तार किया, पीटा और प्रताड़ित किया। कुशल कोंवार को मुख्य साजिशकर्ता और षड्यंत्रकारी बताकर गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें जोरहाट जेल में डाल दिया गया और 15 जून 1943 को फांसी दे दी गई।

❖ **रासबिहारी बोस :**- रासबिहारी बोस भारत के एक क्रान्तिकारी नेता थे, जिन्होने ब्रिटिश राज के विरुद्ध भारत की आजादी के लिए गदर षडयंत्र एवं आजाद हिन्द फौज के संगठन का कार्य किया। इन्होंने न केवल भारत में कई क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, अपितु विदेश में रहकर भी वह भारत को स्वतन्त्रता दिलाने के प्रयास में आजीवन लगे रहे। दिल्ली में तत्कालीन वायसराय लार्ड चार्ल्स हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बनाने, गदर की साजिश रचने और बाद में जापान जाकर इंडियन इंडिपेंडेस लीग और आजाद हिंद फौज की स्थापना करने में रासबिहारी बोस की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होने हिन्दू महासभा की जापानी शाखा की स्थापना भी की तथा इसके अध्यक्ष बने। यद्यपि देश को स्वतन्त्र कराने के लिये किये गये उनके ये प्रयास उनके जीवनकाल में सफल नहीं हो पाये, तथापि स्वतन्त्रता संग्राम में उनका योगदान अत्यन्त महान है। रासबिहारी बोस का जन्म 25 मई 1886 को बंगाल में बर्धमान जिले के सुबलदह गाँव में के एक बंगाली कायस्थ परिवार में हुआ था। इनकी आरम्भिक शिक्षा सुबलदह में ही हुई। रासबिहारी बोस बचपन से ही देश की स्वतन्त्रता के स्वप्न देखा करते थे और क्रान्तिकारी गतिविधियों में उनकी गहरी दिलचस्पी थी। प्रारम्भ में रासबिहारी बोस ने देहरादून के वन अनुसंधान संस्थान में कुछ समय तक हेड क्लर्क के रूप में काम किया। उसी दौरान उनका क्रान्तिकारी जतिन मुखर्जी की अगुआई वाले युगान्तर नामक क्रान्तिकारी संगठन के अमरेन्द्र चटर्जी से परिचय हुआ और वह बंगाल के क्रान्तिकारियों के साथ जुड़ गये। बाद में वह अरबिंदो घोष के राजनीतिक शिष्य रहे यतीन्द्रनाथ बनर्जी उर्फ निरालम्ब स्वामी के सम्पर्क में आने पर संयुक्त प्रान्त, (वर्तमान उत्तर प्रदेश) और पंजाब के प्रमुख आर्य समाजी क्रान्तिकारियों के निकट आये। दिल्ली में जार्ज पंचम के 12 दिसंबर 1911 को होने वाले दिल्ली दरबार के बाद जब वायसराय लॉर्ड हार्डिंग की दिल्ली में सवारी निकाली जा रही थी तो उसकी शोभायात्रा पर वायसराय

लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बनाने में रासबिहारी की प्रमुख भूमिका रही थी। अमरेन्द्र चटर्जी के एक शिष्य बसन्त कुमार विश्वास ने उन पर बम फेंका लेकिन निशाना चूक गया। इसके बाद ब्रिटिश पुलिस रासबिहारी बोस के पीछे लग गयी और वह बचने के लिये रातों-रात रेलगाडी से देहरादून खिसक लिये और ऑफिस में इस तरह काम करने लगे मानो कुछ हुआ ही नहीं हो। अगले दिन उन्होंने देहरादून के नागरिकों की एक सभा बुलायी, जिसमें उन्होंने वायसराय पर हुए हमले की निन्दा भी की। इस प्रकार उन पर इस षडयन्त्र और काण्ड का प्रमुख सरगना होने का किंचितमात्र भी सन्देह किसी को न हुआ। 1913 में बंगाल में बाढ़ राहत कार्य के दौरान रासबिहारी बोस जतिन मुखर्जी के सम्पर्क में आये, जिन्होंने उनमें नया जोश भरने का काम किया। रासबिहारी बोस इसके बाद दोगुने उत्साह के साथ फिर से क्रान्तिकारी गतिविधियों के संचालन में जुट गये। भारत को स्वतन्त्र कराने के लिये उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान गदर की योजना बनायी। फरवरी 1915 में अनेक भरोसेमंद क्रान्तिकारियों की सेना में घुसपैठ कराने की कोशिश की गयी। युगान्तर के कई नेताओं ने सोचा कि यूरोप में युद्ध होने के कारण चूँकि अभी अधिकतर सैनिक देश से बाहर गये हुये हैं, अतः शेष बचे सैनिकों को आसानी से हराया जा सकता है लेकिन दुर्भाग्य से उनका यह प्रयास भी असफल रहा और कई क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। ब्रिटिश खुफिया पुलिस ने रासबिहारी बोस को भी पकड़ने की कोशिश की लेकिन वह उनके हत्थे नहीं चढ़े और भागकर विदेश से हथियारों की आपूर्ति के लिये जून 1925 में राजा पी. एन. टैगोर के छद्म नाम से जापान के शहर शंघाई में पहुँचे और वहाँ रहकर भारत देश की आजादी के लिये काम करने लगे। इस प्रकार उन्होंने कई वर्ष निर्वासन में बिताये। ब्रिटिश सरकार अब भी उनके पीछे लगी हुई थी और वह जापान सरकार से उनके प्रत्यर्पण की माँग कर रही थी, इसलिए वह लगभग एक साल तक अपनी पहचान और आवास बदलते रहे। 1916 में जापान में ही रासबिहारी बोस ने प्रसिद्ध पैन एशियाई समर्थक सोमा आइजो और सोमा कोत्सुको की पुत्री से विवाह कर लिया और 1923 में वहाँ की नागरिकता ले ली। भारत को ब्रिटिश शासन की गुलामी से मुक्ति दिलाने की जी-तोड़ मेहनत करते हुए किन्तु इसकी आस लिये हुए 26 जनवरी 1945 को इनका निधन हो गया।

❖ **गणेश दामोदर सावरकर :-** गणेश दामोदर सावरकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण सेनानी थे। वे स्वतंत्रतावीर सावरकर के बड़े भाई थे। वे 'बाबाराव सावरकर' नाम से प्रख्यात हैं। एम.जे. अकबर के अनुसार, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 5 मित्रों ने की थी-बी. एस. मुंजे, लक्ष्मण वासुदेव परांजपे, डॉ० थोलकर, गणेश दामोदर सावरकर तथा स्वयं हेगडेवार। 16-जून-1879 को गणेश दामोदर सावरकर उर्फ बाबा का जन्म हुआ। सावरकर परिवार मूलतः महाराष्ट्र राज्य के रत्नागिरी जिले के चिपळूण तहसील के गुहागर पेट्या के पालशेत गांव का था। उस क्षेत्र के सेमल के पेड़ों के कारण कुछ लोगों को 'सांवरवाड़ीकर' कहा जाने लगा। कालान्तर में 'सांवरवाड़ीकर' से 'सावरकर' हो गया। आगे चलकर काम के सिलसिले में कुछ लोग कोंकण छोड़कर घाट पर बस गए। बाबाराव का बचपन भगूर गांव में बीता। बचपन से ही बाबाराव बुद्धिमान, अध्ययनशील, संगठनकुशल और निरंतर परिश्रमी थे। साथ ही वे शतरंज, आट्यापाट्या, गिल्ली-डंडा, धनुष-बाण चलाने आदि विभिन्न खेलों में भी निपुण थे। थोड़ा बड़े होने पर पिता दामोदरपंत की देखरेख में बाबाराव तलवार और बंदूक भी उत्तम तरीके से चलाना सीख गए। दामोदरपंत सावरकर का विवाह मनोहर परिवार की राधाबाई से हुआ। विवाह के बाद उन्हें दो पुत्र हुए लेकिन वे जीवित नहीं रहे। इसके बाद इस दंपत्ति को तीन पुत्र और एक पुत्री, ऐसी चार संतानें हुईं। पिता, मामा और तात्याराव कविता करते थे लेकिन बाबा को कविता में रुचि नहीं थी। पिता को पशु-पक्षियों का शौक होने के कारण उन्होंने घर में गाय-बैल, कुत्ता पाले हुए थे। साथ ही घर में फूलों के पौधे भी बहुत लगाए थे। बाबाराव ने पिता से अनुशासन, अध्ययन और सबके साथ मिलजुल कर रहने के गुण सीखे, तो माता से वे खाना बनाना सीखे। माता के असामयिक निधन के बाद बाबाराव कुछ समय तक अपने घर में स्वयं ही खाना बनाया करते थे। तात्याराव और उनके मित्रों ने 1899 के नवंबर महीने में 'राष्ट्रभक्त समूह' नामक एक गुप्त संस्था की स्थापना की। शुरुआत में बाबाराव को इस संस्था के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। हालांकि बाद में जानकारी मिलने पर बाबा ने इस संस्था के लिए काम शुरू कर दिया। गुप्त संस्था में युवाओं को प्रवेश देने से पहले उनकी मानसिक तैयारी जांचने के लिए 1 जनवरी 1900 को मित्रमेळा नामक संस्था सार्वजनिक रूप से शुरू की गई। बाबा के प्रयासों से नासिक राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्र के रूप में पहचाना जाने लगा। 1904 में अभिनव भारत संस्था की स्थापना करने में भी बाबा की प्रमुख भूमिका थी। अभिनव भारत गरम दल के क्रांतिकारियों की संस्था थी। उसमें शामिल लोगों का एकमात्र ध्येय पूर्ण स्वतंत्रता था और इसके लिए कुछ भी करने को तैयार युवाओं को ही उसमें प्रवेश दिया जाता था। इन दो संस्थाओं के अलावा बाबाराव की पहल पर ही 1903 में मित्रसमाज नामक छात्र संस्था और 1905 में आत्मनिष्ठ युवतीसंघ नामक महिला संगठन की स्थापना की गई। ये सभी संस्थाएं अपने-अपने कार्यक्षेत्र में स्वदेशी का प्रचार करती थीं और इनमें से चुनिंदा लोगों को अभिनव भारत से जोड़ा जाता था। २० जुलाई 1905 को बंग-भंग की आधिकारिक घोषणा हुई। इसके बाद विरोध स्वरूप हर जगह विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार-होली और स्वदेशी का प्रचार शुरू हुआ। बाबाराव नासिक से और तात्याराव पुणे से इस आंदोलन का संचालन करते थे। सशस्त्र क्रांति का प्रचार भी गुप्त रूप से शुरू किया गया। सरकारी तंत्र बाबाराव पर नजर रखे हुए था। इसी बीच बाबाराव मुंबई गए और एक मामूली विवाद में फंस गए। उस आधार पर जांच कर बाबा को 28 फरवरी 1909 को मुंबई में गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में उन्हें नासिक ले जाया गया। गहन जांच के बाद बाबा के घर पर कई आपत्तिजनक चीजें मिलने के कारण उन पर तत्कालीन दंड संहिता की धारा 121 और 124 अ के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। 08 जून 1919 को बाबाराव को काले पानी की सजा और पूरी संपत्ति की जब्ती के साथ ही सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई। इस सजा के सुनाए जाने के कुछ ही समय बाद बाबाराव ने उच्च न्यायालय में पुनर्विचार याचिका दायर की। लेकिन समय के साथ उसका निर्णय भी बाबा के विरुद्ध ही आया और पुरानी सजा बरकरार रखी गई। बाबाराव को आजीवन कारावास की सजा होने की खबर लंदन में रह रहे भारतीयों को मिली। तात्याराव और उनके साथी ब्रिटिश सरकार को सबक सिखाने पर विचार कर रहे थे, तभी एक ओर मदनलाल ढींगरा ने बंग-भंग के लिए जिम्मेदार कर्जन वायली की 1 जुलाई 1909 को गोली मारकर हत्या कर दी तो दूसरी ओर, नासिक में अभिनव भारत के सदस्य गुप्त रूप से एकत्र हुए और अनन्त कान्हेरे, अण्णा कर्वे और विनायक देशपांडे ने बाबाराव को सजा दिलाने के लिए जिम्मेदार मुख्य अधिकारी जैक्सन का वध 21 दिसंबर 1909 को कर दिया। इसके अलावा देशभर में हर माध्यम से इसका विरोध हुआ। काले पानी की सजा काटने के लिए 1911 में उन्हें अंडमान भेज दिया गया। अंडमान की सजा अत्यंत कठोर थी। बाबाराव हर दिन मृत्युतुल्य कष्ट सहते थे। इसी बीच

तात्याराव को भी काले पानी की सजा हुई और उन्हें भी अंडमान भेज दिया गया। बाबाराव के छोटे भाई नारायणराव ने अपने दोनों बड़े भाइयों की रिहाई के लिए कई लोगों से मिलकर और आवेदन देकर प्रयास जारी रखे। अंततः 1921 में दोनों सावरकर भाइयों को अंडमान से रिहा किया गया, लेकिन सजा की अवधि पूरी न होने के कारण उन्हें भारत की विभिन्न जेलों में भेजा गया। बाबाराव का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण 1922 में उनकी सजा समाप्त होने की घोषणा जल्दबाजी में कर दी गई। सजा समाप्त होने के बाद स्वास्थ्य ठीक न होने के बावजूद बाबा ने अपना पुराना कार्य नए उत्साह के साथ शुरू किया। उनका लेखन, अध्ययन और प्रकाशन का कार्य भी बढ़ गया। कई युवाओं को प्रोत्साहित कर उन्होंने समझाया कि सशस्त्र क्रांति के बिना कोई विकल्प नहीं है। क्रांतिकारी कार्य निरंतर जारी रखते हुए ही 16 मार्च 1945 को बाबाराव सावरकर का सांगली (महाराष्ट्र) में निधन हो गया।

❖ **हेमचन्द्र दास कानूनगो :-** हेमचंद्र दास कानूनगो एक भारतीय राष्ट्रवादी और अनुशीलन समिति के सदस्य थे। कानूनगो ने 1907 में पेरिस की यात्रा की, जहाँ उन्होंने निर्वासित रूसी क्रांतिकारियों से पिक्रिक एसिड बम बनाने की तकनीक सीखी। कानूनगो के ज्ञान का प्रसार ब्रिटिश राज और विदेशों में भारतीय राष्ट्रवादी संगठनों में हुआ। 1908 में, अलीपुर बम कांड (1908-09) में अरबिंदो घोष के साथ कानूनगो मुख्य सह-आरोपियों में से एक थे। हेमचंद्र दास कानूनगो कर जन्म 4 अगस्त 1871 को मेदिनीपुर जिले के बेल्दा में राधानगर गांव के पंडित क्षेत्रमोहन दास कानूनगो और कोमल कामिनी देवी के घर एक कुलीन महिष्य परिवार में जन्म हुआ। उनके पूर्वज राघवराम दास ओडिशा के पुरी जिले के खुर्दा से वर्तमान पश्चिम मेदिनीपुर चले गए थे। उनका मूल उपनाम दास था, उन्हें न्याय के विषयों पर अपनी कमान और उत्कल के विभिन्न राजाओं की शाही भूमि के सर्वेक्षण में उनकी कुशलता के लिए कानूनगो की उपाधि मिली। उनके पिता क्षेत्रमोहन दर्शनशास्त्र और खगोल विज्ञान के विद्वान थे और उनकी माँ कोमलकामिनी खंडरुई शाही परिवार के राजा काली प्रसन्न सिंह गजेंद्र महापात्र की बहन थीं। वे संभवतः भारत के पहले क्रांतिकारी थे जो सैन्य और राजनीतिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए विदेश गए थे। उन्होंने पेरिस में रूसी प्रवासी से प्रशिक्षण प्राप्त किया। वे जनवरी 1908 में भारत लौट आए। उन्होंने कोलकाता के पास मानिकतला में अनुशीलन समिति के लिए एक गुप्त बम कारखाना खोला, जिसके संस्थापक सदस्य हेमचंद्र कानूनगो, अरबिंदो घोष (श्री अरबिंदो) और उनके भाई बरिंद्र कुमार घोष थे। वे जुगंतर पार्टी के संस्थापकों में से एक थे, जो बंगाल में क्रांतिकारी स्वतंत्रता कार्यकर्ताओं का केंद्रीय संगठन था। उन्होंने अधिक युवाओं को प्रेरित करने के लिए जुगंतर पत्रिका में क्रांतिकारी आंदोलन पर अपने लेख भी प्रकाशित किए। वे कलकत्ता ध्वज के रचनाकारों में से एक थे, जिसके आधार पर स्वतंत्र भारत का पहला ध्वज 22 अगस्त 1907 को जर्मनी के स्टटगार्ट में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में भीकाजी कामा द्वारा फहराया गया था। 1905 में, उन्होंने बरिंद्र कुमार घोष के साथ मिलकर शिलांग में पूर्वी बंगाल के अत्याचारी गवर्नर बैम्फिल्ड फुलर की हत्या का दायित्व लिया। हालाँकि, योजनाबद्ध हत्या की तारीख से ठीक पहले, एक सदस्य अनजाने में घायल हो गया, जिससे यह प्रयास विफल हो गया। इस बीच, फुलर शिलांग छोड़कर बरिशाल चले गए थे। बरिशाल में एक और प्रयास किया गया, जो भी विफल रहा। ढाका और रंगपुर में फुलर की हत्या के बाद के प्रयास भी असफल रहे। इन शुरुआती असफल प्रयासों से हेमचंद्र को यह स्पष्ट हो गया कि क्रांतिकारी आंदोलन की सफलता के लिए अधिक सटीक और पेशेवर दृष्टिकोण आवश्यक था। इसके अलावा, शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध टिके रहने के लिए बेहतर बम निर्माण और राइफल प्रशिक्षण भी आवश्यक था, जिस पर रूसी और आयरिश क्रांतिकारियों का स्पष्ट रूप से अधिकार था। यही एक कारण था जिसके चलते उन्होंने यूरोप जाने का निर्णय लिया। प्रारंभ में, उनका इरादा संयुक्त राज्य अमेरिका में आधुनिक शस्त्रकला का अध्ययन करने का था, जुगंतर समूह के वहाँ पहले से ही कुछ संपर्क थे। लेकिन किसी कारणवश यह योजना साकार नहीं हो सकी। हेमचंद्र ने निर्णय लिया कि तकनीकी जानकारी की आवश्यकता है, और इसे प्राप्त करने के लिए वे यूरोप चले गए। उन्होंने यात्रा के लिए धन जुटाने के लिए कलकत्ता में अपना घर बेच दिया। उन्हें उनके मामा तुर्कगढ़ के राजा काली प्रसन्ना सिंह गजेंद्र मोहपात्रा और नाराजोल के राजा नरेंद्र लाल खान से भी आर्थिक सहायता मिली। 1906 के अंत में मार्सिले पहुँचकर वे प्रवासी भारतीयों के एक समूह में शामिल हो गए, जिन्होंने 'पेरिस इंडियन सोसाइटी' नामक एक संगठन बनाया था। हालाँकि, इस दौरान उनकी पहले से ही तंग आर्थिक स्थिति और भी खराब हो गई। उन्होंने स्विट्जरलैंड, फ्रांस और इंग्लैंड में क्रांतिकारियों या क्रांतिकारियों को जानने वाले लोगों से संपर्क करने की कोशिश में कुछ महीने बिताए। इस कठिन समय के दौरान, सौभाग्य से उनकी नजर श्यामजी कृष्ण वर्मा पर पड़ी, जिन्होंने तुरंत लंदन स्थित अपने इंडिया हाउस में उनका स्वागत किया। इसके परिणामस्वरूप, वे पेरिस छोड़कर लंदन चले गए। वहाँ उनका संपर्क अन्य क्रांतिकारियों से हुआ जो पहले से ही लंदन में अपनी पढ़ाई के लिए या वास्तव में क्रांति के लिए प्रयासरत थे, जैसे विनायक दामोदर सावरकर, मदन लाल ढिंगरा और हर दयाल। अंततः, पेरिस में रसायन विज्ञान की पढ़ाई के दौरान उन्हें मैडम कामा का समर्थन मिला। जुलाई 1907 में भीकाजी कामा ने जोसेफ अल्बर्ट, जिन्हें लिबर्टाड के नाम से जाना जाता था, का परिचय हेमचंद्र और उनके मित्र पांडुरंग बापट से कराया। उन्होंने पेरिस में एक रासायनिक प्रयोगशाला स्थापित करने में भी उनकी मदद की। 1907 के उत्तरार्ध में, दोनों भारतीयों ने इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, समाजवाद, साम्यवाद और अंत में, उन विषयों का अध्ययन किया जिन्हें वे सीखने आए थे-विस्फोटक रसायन विज्ञान और क्रांतिकारी संगठन। कानूंगो ने बम मैनुअल की तस्वीरें लेने में अपने फोटोग्राफी कौशल का उपयोग किया और बाद में बापट ने बम बनाने के मैनुअल की तस्वीरों का अनुवाद करने में मदद के लिए बर्लिन में चिकित्सा का अध्ययन कर रहे एक रूसी छात्र की मदद ली। हेमचंद्र यूरोप से आधुनिक तकनीकी साहित्य से भरा एक बक्सा लेकर लौटे, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण वस्तु बम बनाने पर सत्तर पृष्ठों की एक पुस्तिका थी, जिसका रूसी से अनुवाद किया गया था। हेमचंद्र का बारिंद्र के साथ सेना में शामिल होने का इरादा नहीं था, लेकिन श्री अरबिंदो से बातचीत के बाद उन्होंने सहयोग करने पर सहमति जताई। मुजफ्फरपुर में किंग्सफोर्ड की हत्या के लिए दो सदस्यों का एक आत्मघाती दस्ता भेजा गया था। गलत लक्ष्य पर बमबारी करने के बाद, प्रफुल्ल चाकी ने ब्रिटिश भारतीय पुलिस द्वारा जिंदा पकड़े जाने से पहले ही आत्महत्या कर ली, लेकिन खुदीराम बोस ने ऐसा नहीं किया और पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इस घटना के परिणामस्वरूप, हेमचंद्र द्वारा स्थापित गुप्त बम कारखाने पर ब्रिटिश पुलिस ने छापा मारा और उसे बंद कर दिया। थोड़े ही समय में लगभग सभी सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया। अलीपुर बम कांड में कलकत्ता की अनुशीलन समिति के कई भारतीय राष्ट्रवादियों पर क्रांतिकारी गतिविधियों के आरोप में मुकदमा चलाया गया। कानूंगो को अरबिंदो घोष के साथ मुख्य सह-आरोपियों

में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया गया था। मुकदमे के दौरान उजागर हुई गतिविधियाँ मानिकटोला गार्डन हाउस के इर्द-गिर्द केंद्रित थीं, जो एक गुप्त प्रयोगशाला और विस्फोटक तैयार करने का केंद्र था। कानूनगो को बरिंद्र कुमार घोष और उल्लास्कर दत्ता सहित कई अन्य लोगों के साथ गिरफ्तार किया गया था। यह मुकदमा एक ऐतिहासिक घटना बन गया। न केवल हाई-प्रोफाइल आरोपियों के कारण, बल्कि औपनिवेशिक सरकार द्वारा क्रांतिकारी राष्ट्रवाद को ब्रिटिश राज के खिलाफ एक आपराधिक साजिश के रूप में चित्रित करने के प्रयास के कारण भी। मुकदमे के दौरान प्रस्तुत साक्ष्य, जिसमें बम बनाने की सामग्री की बरामदगी भी शामिल थी ने तकनीकी पहलुओं में शामिल लोगों को सीधे तौर पर दोषी ठहराया, जिनमें कानूनगो सबसे बड़ा विशेषज्ञ था। कनुनगो की संलिप्तता मुकदमे की अवधि के दौरान घटी घटनाओं तक भी फैली हुई थी। वह नरेंद्र गोस्वामी की हत्या की योजना में मुख्य भूमिका निभा रहा था, जो अलीपुर जेल में रहते हुए इस मामले में गवाह (राजा का गवाह) बन गया था। बताया जाता है कि हेमचंद्र ने सत्येंद्रनाथ बसु और कनैलाल दत्ता को जेल परिसर के भीतर गोस्वामी को खत्म करने के लिए इस्तेमाल की गई बंदूक मुहैया कराई थी। इस कृत्य ने साजिश में एक नाटकीय और विद्रोही परत जोड़ने के साथ-साथ क्रांतिकारियों के दृढ़ प्रतिरोध की छवि को और मजबूत किया। परिणामस्वरूप, अलीपुर बम कांड में संलिप्तता के कारण उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। इस सजा के चलते उन्हें अंडमान की कुख्यात सेलुलर जेल में भेज दिया गया, जो अपनी अत्यंत कठोर और अमानवीय परिस्थितियों के लिए जानी जाती थी। अन्य क्रांतिकारियों के साथ, उन्होंने एकांत जीवन व्यतीत किया; जेल की बनावट जानबूझकर कैदियों के बीच संचार को रोकती थी, जिससे वे प्रभावी रूप से एकांत कारावास में रहते थे। कठोर व्यवस्था में कैदियों को महीनों तक बेड़ियों या जंजीरों में जकड़ कर रखा जाता था और उनसे कठोर श्रम करवाया जाता था, जैसे कि तेल प्रेस मशीनों को हाथ से चलाना। 'काला पानी' में बिताया गया उनका समय एक बहुत बड़ी व्यक्तिगत परीक्षा थी जिसने उनके स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाला। इस दौरान, वे एक बार फिर वी.डी. सर्वकर और विदेशों में मिले कई अन्य क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। उन्होंने आंदोलन के कुछ अन्य प्रमुख व्यक्तियों जैसे सचिंद्र नाथ सान्याल, पुलिन बिहारी दास और कलकत्ता के अपने साथी जैसे उल्लास्कर दत्ता और इंदु भूषण रॉय से भी मुलाकात की। वे युवा स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक महान प्रेरणा बन गए, जो उन्हें उनके अनुभव और विद्वतापूर्ण स्वभाव के कारण एक मार्गदर्शक या गुरु के रूप में देखते थे। हालांकि उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी, हेमचंद्र कानूनगो को अंततः 1921 में सेलुलर जेल से रिहा कर दिया गया, जिसका मुख्य कारण भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और ब्रिटिश राज के बीच 1920 के आसपास हुई आम माफी थी। रिहाई के बाद, उन्होंने शुरू में खुद को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए फिर से समर्पित कर दिया। उन्होंने कुछ समय के लिए मानबेंद्र नाथ रॉय के साथ भी काम किया। 1925 के बाद धीरे-धीरे वे अपने सामान्य जीवन में लौट आए। वे अपने पैतृक गांव राधानगर लौट आए और फोटोग्राफी और कला के अपने पुराने शौक को फिर से शुरू किया। 8 अप्रैल 1951 को मिदनापुर अस्पताल में 79 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

❖ **बारीन्द्र कुमार घोष** :- बारीन्द्र कुमार घोष भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी और पत्रकार तथा 'युगान्तर' के संस्थापकों में से एक थे। वह 'बारिन घोष' नाम से भी प्रसिद्ध हैं। बंगाल में क्रांतिकारी विचारधारा को फैलाने का श्रेय बारीन्द्र कुमार घोष और भूपेन्द्रनाथ दत्त (विवेकानंद जी के छोटे भाई) को ही जाता है। महान अध्यात्मवादी श्री अरविन्द घोष उनके बड़े भाई थे। श्री बारीन्द्र घोष का जन्म 5 जनवरी 1880 को लंदन के पास क्रोयदन नामक कसबे में हुआ था। उनका पैतृक निवास कोन्नगर था, जो आजकल पश्चिम बंगाल में है। उनके पिता श्री कृष्णाधन घोष एक नामी चिकित्सक व प्रतिष्ठित जिला सर्जन थे, जबकि उनकी माता देवी स्वर्णलता प्रसिद्ध समाज सुधारक व विद्वान राजनारायण बसु की पुत्री थीं। श्री अरविन्द, जो कि पहले क्रन्तिकारी और फिर अध्यात्मवादी हो गए थे, उनके तीसरे बड़े भाई थे जबकि उनके दूसरे बड़े भाई श्री मनमोहन घोष अंग्रेजी साहित्य के विद्वान, कवि और कलकत्ता के प्रेसिडेंसी कॉलेज व ढाका यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी के प्रोफेसर थे। बारिन घोष की स्कूली शिक्षा देवगढ (देवघर) में हुई व 1901 में प्रवेश परीक्षा पास करके उन्होंने पटना कॉलेज में दाखिला लिया। बरोड़ा में उन्होंने मिलिट्री ट्रेनिंग ली। इसी समय श्री अरविन्द से प्रभावित होकर उनका झुकाव क्रांतिकारी आन्दोलन की तरफ हुआ। 1902 में बारीन्द्र कलकत्ता वापस आये और यतीन्द्रनाथ मुखर्जी (बाघ जतिन) के साथ मिलकर बंगाल में अनेक क्रांतिकारी समूहों को संगठित करना शुरू कर दिया। बारीन्द्र घोष और भूपेन्द्र नाथ दत्त के सहयोग से 1907 में कलकत्ता में अनुशीलन समिति का गठन किया गया, जिसका प्रमुख उद्देश्य था-'खून के बदले खून'। अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु 1906 में उन्होंने भूपेन्द्रनाथ दत्त के साथ मिलकर 'युगान्तर' नामक साप्ताहिक पत्र बांग्ला भाषा में प्रकाशित करना शुरू किया और क्रांति के प्रचार में इस पत्र का सर्वाधिक योगदान रहा। इस पत्र ने लोगों में राजनीतिक व धार्मिक शिक्षा का प्रसार किया। जल्द ही इस नाम से एक क्रांतिकारी संगठन भी बन गया। युगांतर का जन्म 'अनुशीलन समिति' से ही हुआ था और जल्दी ही इसने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियाँ शुरू कर दीं। 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने किंग्स्फोर्ड की हत्या का प्रयास किया, जिसके फलस्वरूप पुलिस ने बहुत तेजी से क्रांतिकारियों की धर-पकड़ शुरू कर दी और दुर्भाग्य से 2 मई 1908 को श्री बारिन्द्र घोष को भी उनके कई साथियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर 'अलीपुर बम केस' चलाया गया और प्रारम्भ में ही उन्हें मृत्युदण्ड की सजा दे दी गयी परन्तु बाद में उसे आजीवन कारावास कर दिया गया। उन्हें अंडमान की भयावह सेल्युलर जेल में भेज दिया गया, जहाँ वह 1920 तक बन्दी रहे। बारिन घोष को 1920 में प्रथम विश्वयुद्ध के बाद दी गयी आम क्षमा में रिहा कर दिया गया, जिसके बाद वह कलकत्ता आ गए और पत्रकारिता प्रारम्भ कर दी। किन्तु जल्द ही उन्होंने पत्रकारिता भी छोड़ दी और कलकत्ता में आश्रम बना लिया। 1923 में वह पांडिचेरी चले गए जहाँ उनके बड़े भाई श्री अरविन्द ने प्रसिद्ध 'श्री औरोविंद आश्रम' बनाया था। श्री अरविन्द ने उन्हें आध्यात्म और साधना के प्रति प्रेरित किया जबकि श्री ठाकुर अनुकुलचंद उनके गुरु थे। इन्होने ही अपने अनुयायियों द्वारा बारीन्द्र की सकुशल रिहाई में मदद की थी। 1929 में बारिन्द्र दोबारा कलकत्ता आये और पत्रकारिता शुरू कर दी। 1933 में उन्होंने 'द डान ऑफ इण्डिया नामक अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र शुरू किया। वह 'द स्टेट्समैन' से जुड़े रहे और 1950 में वह बांग्ला दैनिक 'दैनिक बसुमती' के संपादक हो गए। 18 अप्रैल 1959 को इस महान सेनानी का देहान्त हो गया।

❖ **योगेश चन्द्र चटर्जी** :- योगेश चन्द्र चटर्जी मूलतः बंगाल के एक प्रमुख क्रान्तिकारी थे। वे बंगाल की अनुशीलन समिति व संयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) की हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन के सक्रिय सदस्य थे। कुल मिलाकर वे एक सच्चे स्वतन्त्रता सेनानी थे। योगेश चन्द्र चटर्जी का जन्म ढाका जिले के गावदिया गाँव में 1895 में हुआ था। 1916 में वे पहली

बार गिरफ्तार हुए थे। योगेश दा काकोरी काण्ड से पूर्व ही हावड़ा रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिये गये थे। नजरबन्दी की हालत में ही इन्हें काकोरी काण्ड के मुकदमे में घसीट कर लाया गया था। उस समय वे अनुशीलन समिति के सक्रिय सदस्य थे। पुलिस द्वारा भयंकर यातनायें दी गयीं किन्तु वे एक ही उत्तर देते रहे-'मुझे कुछ नहीं मालूम।' मारपीट का कोई असर नही हुआ। अन्त में उनके हाथ पैर कसकर बाँध दिये और दो सिपाहियों ने उनका गुप्तांग पकडकर हस्तमैथुन द्वारा अप्राकृतिक ढँग से इतनी वार वीर्य निकाला कि खून आने लगा। उसके बाद टट्टी पेशाब से भरी बाल्टी उनके ऊपर उँड़ेल दी। शरीर धोने को पानी तक न दिया। मुँह में टट्टी चली गयी पर योगेश सचमुच 'योगेश' हो गये। इस निमुछिये नौजवान ने मूछ वालों तक को पस्त कर दिया। 1924 में स्थापित हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन के संस्थापक सदस्यों में योगेश दा का प्रमुख योगदान था। यही संस्था बाद में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसिएशन में तब्दील हो गयी। उन्हें क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण कई बार गिरफ्तार किया गया। काकोरी काण्ड के मुकदमे के फैसले में उन्हें 1926 में पहले 10 वर्ष की सजा सुनायी गयी थी, जिसे बाद में आजीवन कारावास में बदल दिया गया। 1937 में जेल से छूटकर आने के बाद उन्होंने पहले कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बनायी। कुछ ही वर्षो बाद उनका उस पार्टी से मोहभंग हो गया और उन्होंने 1940 में रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया। 1940 से लेकर 1953 तक लगातार वे इसके जनरल सेक्रेटरी रहे। 1949 में केवल एक वर्ष के लिये यूनाइटेड सोशलिस्ट ऑर्गनाइजेशन के वाइस प्रेसीडेण्ट रहने के पश्चात् वे आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के, जो रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी का ही एक आनुषंगिक संगठन था, 1949 से लेकर 1953 तक लगातार वाइस प्रेसीडेण्ट रहे। स्वतन्त्र भारत में उनका झुकाव कांग्रेस की ओर हो गया और वे उत्तर प्रदेश से राज्यसभा के सांसद निर्वाचित हुए। 1956 से 1960 तक अपनी मृत्यु पर्यन्त वे लगातार 4 वर्ष राज्यसभा के सदस्य रहे।

❖ **भूपेन्द्रनाथ दत्त :-** डॉ. भूपेंद्रनाथ दत्त भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रसिद्ध क्रांतिकारी तथा समाजशास्त्री थे। अपने युवाकाल में वे युगान्तर आन्दोलन से नजदीकी से जुड़े थे। अपनी गिरफ्तारी (सन् 1907) तक वे युगान्तर पत्रिका के सम्पादक थे। वे एक अच्छे लेखक भी थे। स्वामी विवेकानन्द उनके बड़े भाई थे। उन्होंने हिन्दू समाज में व्याप्त जाति पांति, छुआछूत, भेदभाव, ऊँच-नीच और महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचारों का विरोध किया था। वह क्रांतिकारियों में एक समाजसुधारक, समाजशास्त्री, क्रांतिकारी लेखक और युगान्तरकारी पत्रिका के यशस्वी सम्पादक के रूप में जाने जाते थे। जहाँ उस समय की राजनीतिक गतिविधियों में सम्मिलित होकर देश सेवा करना उनका लक्ष्य था, वहीं उच्च शिक्षा प्राप्त करना भी उनका लक्ष्य था। उन्होंने अमेरिका से एम.ए. और जर्मनी से पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। भूपेन्द्रनाथ दत्त का जन्म 4 सितम्बर, 1880 को कोलकाता में हुआ था। उनकी आरम्भिक शिक्षा ईश्वर चंद्र विद्यासागर द्वारा स्थापित 'मेट्रोपॉलिटन इंस्टीट्यूशन' नामक विद्यालय में हुई थी। शिक्षा के दौरान ही उन्होंने राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेना आरम्भ कर दिया था। अपनी युवावस्था में वे केशव चन्द्र सेन और देवेन्द्रनाथ ठाकुर के तत्त्वावधान में चल रहे ब्राह्म समाज में सम्मिलित हो गए। यहाँ उनकी भेंट शिवनाथ शास्त्री से हुई जिन्होंने इन्हें बहुत प्रभावित किया। ब्राह्म समाज ने उनके जीवन को एक नया रुप दिया। ब्राह्मसमाज से ही उनको जाति-विहीन समाज तथा अन्धविश्वासों पर अविश्वास पैदा हुआ। इसी समय अंग्रेजों के अत्याचारों ने उन्हे और क्रान्तिकारी बनाना शुरु किया। 1902 में प्रमथनाथ मित्र द्वारा चलाई जा रही अनुशीलन समिति में सम्मिलित हो गये। 1905 ई० में बंगाल के विभाजन के विरुद्ध सारे बंगाल में बंग-भंग आन्दोलन चला जो भारत के कोने-कोने में भी फैला था। सन् 1906 में वे युगान्तर पत्रिका के सम्पादक बने। यह पत्रिका बंगाली भाषा में निकलने वाली क्रान्तिकारी पत्रिका थी जिसकी स्थापना बारीन्द्र कुमार घोष, अविनाश भट्टाचार्य और भूपेन्द्रनाथ दत्त ने मिलकर की थी। उसी समय वे अरविन्द घोष और बारीन्द्र कुमार घोष के निकट सम्पर्क में आये। उन्होंने अपने 'युगान्तर पत्रिका' के द्वारा तीव्र शब्दों में बंगाल विभाजन का विरोध किया था। 'युगान्तर पत्रिका' के एक अंक में उन्होंने युवकों को सलाह देते हुए लिखा था, "अंग्रेज इस तरह नहीं मानने वाले। जब तक ईट का जवाब ईट से और लाठी का जवाब लाठी से नहीं दिया जायेगा, तब तक अंग्रेज अत्याचार करते ही रहेंगे।" 'युगान्तर' में लिखे गये अपने लेखों के कारण डॉ० दत्त 1907 ई० में गिरफ्तार कर लिये गये। उन पर राजद्रोह का मुकद्दमा चलाया गया। 24 जुलाई को न्यायालय में बयान देते हुए उन्होंने कहा था, "मेरा नाम डॉ० भूपेन्द्रनाथ दत्त है। 'युगान्तर' के जिन लेखों के कारण मुझ पर मुकद्दमा चलाया गया है, वे मेरे ही लिखे हुए हैं। मैंने उन्हें जान-बूझ कर लिखा है। ये लेख लिखकर मैंने देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन किया है।" दत्त का बयान सुनने के पश्चात् मजिस्ट्रेट ने 24 जुलाई को ही उन्हें एक वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया। एक वर्ष की सजा काट कर 1908 में जब वे कारागार से बाहर निकले, तो अंग्रेजों का दमन-चक्र जोरों से चल रहा था। 'वन्दे मातरम्' और 'संध्या' आदि पत्र दमन के शिकार हो चुके थे। विपिनचन्द्र पाल भी गिरफ्तार होकर जेल जा चुके थे। अरविन्द घोष पांडिचेरी चले गये थे। इस समय दत्त क्रान्तिकारी कार्यों में संलग्न हो गये। वे सशस्त्र क्रान्ति के द्वारा अंग्रेजी शासन को उलटना चाहते थे, किन्तु सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि उन्हें हथियार नहीं मिल पा रहे थे। बिना हथियार के सशस्त्र क्रान्ति का होना अत्यधिक कठिन था। इसके अलावा जेल से छूटने पर जब उनको 'अलीपुर बम कांड' में फंसाने की तैयारी हो रही थी, वे देश से बाहर अमेरिका चले गए। सन् 1925 में वे वापस भारत आ गये और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल होने का निर्णय किया। सन् 1927-28 में वे बंगाल कांग्रेस के सदस्य बने। 1929 में वे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सदस्य बने। सन 1930 के कांग्रेस के कराची के वार्षिक सम्मेलन में उन्होंने भारतीय किसानों के लिये मूलभूत अधिकारों से सम्बन्धित एक प्रस्ताव रखा, जिसे स्वीकार कर लिया गया। उसके बाद उन्होंने अपना ध्यान किसानों और श्रमिकों को संगठित करने पर लगाया। 1936 से वे भारत में किसान आंदोलन में शामिल हुए और 1937 से 1940 तक लगातार बंगाल कृषक सभा के अध्यक्ष रहे। वे दो बार अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष बने। डॉ. दत्त 'फ्रेन्ड्स ऑफ सोवियत यूनियन' के प्रथम अध्यक्ष बने। इसकी स्थापना 22 जून 1941 को सोवियत संघ पर आक्रमण के बाद हुई थी। 1943 के बंगाल के भीषण अकाल में लोगों की सहायता के लिये कार्य किया। उन्होंने कार्यकर्ताओं से भूख से मर रहे लोगों के लिये सहायता इकट्ठा करने का प्रयत्न किया। इसके लिये उन्होंने सामूहिक भोजनालय खोले और लोगों में अति आवश्यक सामान बंटवाये। डॉ. दत्त ने कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा भारत छोड़ो आन्दोलन के विरोध का भी भरपूर विरोध किया था। भारत के स्वतन्त्र होने पर नेहरू के नेतृत्व में बने सरकार को उन्होंने 'राष्ट्रीय

सरकार' माना। उनकी इच्छा थी कि सभी देशवासी एक साथ मिलकर कार्य करें और गरीब से गरीब लोगों का जीवन स्तर सुधारा जाय। पर इसके साथ ही वे गांधीवाद और नेहरू के समाजवाद के आलोचक रहे। 26 दिसम्बर, 1961 को कोलकाता में उनका देहान्त हो गया।

❖ **अम्बिका चक्रवर्ती :-** अम्बिका चक्रवर्ती भारत के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी और नेता थे। चटगाँव (बंगाल) शस्त्रागार केस के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी और कम्युनिस्ट नेता अंबिका चक्रवर्ती का जन्म 1892 ई. में म्यांमार (बर्मा) में हुआ था। बाद में उनका परिवार चटगाँव में आकर रहने लगा। अंबिका के ऊपर उस समय के क्रान्तिकारियों और स्वामी विवेकानन्द के विचारों का बड़ा प्रभाव पड़ा। उनके विचार और कार्य क्रान्तिकारी थे, पर प्रकट रूप से उन्होंने कांग्रेस संगठन से भी निकट का सम्बन्ध रखा। अंबिका ने बाद में अपने कुछ अन्य साथियों के साथ चटगाँव को अंग्रेजों से स्वतंत्र कराने की योजना बनाई। इसके लिए दो दलों का गठन किया गया। एक दल ने टेलीफोन और तारघर पर कब्जा कर लिया और दूसरे ने शस्त्रागार को अपने कब्जे में ले लिया। लेकिन दुर्भाग्य से अंग्रेजों ने कारतूस कहीं और छिपाकर रखे थे। अत: कब्जे में आए हथियार बेकार साबित हुए। ऐसी स्थिति में दल को पुर्नसंगठित करने के इरादे से अंबिका अपने साथियों को लेकर जलालाबाद की पहाड़ियों में चले गए। पर शीघ्र ही इस पहाड़ी पर अंग्रेजों ने आक्रमण कर दिया। उनके अन्य साथी तो बच निकले किन्तु पुलिस की गोली से अंबिका घिसटते हुए एक गाँव में पहुँचे और वहाँ के सहानुभूतिशील लोगों के इलाज से स्वास्थ्य लाभ करके भूमिगत हो गए। 1930 में पुलिस ने अन्तत: अंबिका को खोज निकाला और आजीवन कैद की सजा देकर उनको अंडमान भेज दिया गया। अंडमान में साम्यवादी साहित्य के अध्ययन से उनके विचारों में परिवर्तन हुआ और 1946 में जेल से बाहर आने पर वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गए। कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में भी उन्होंने 1949 से 1951 तक जेल की सजा काटी। 1952 में कम्युनिस्ट उम्मीदवार के रूप में अंबिका पश्चिम बंगाल की विधान सभा के सदस्य चुने गए। अम्बिका चक्रवर्ती जैसे वीर और साहसी देशभक्त का 6 मार्च 1962 को एक सड़क दुर्घटना में निधन हो गया।

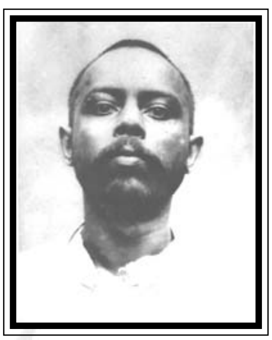

❖ **उल्लासकर दत्त :-** उल्लासकर दत्त भारत के एक स्वतन्त्रता सेनानी थे। वे ब्रिटिश अधिकारियों पर फेंकने के लिए तैयार किये जाने वाले बमों को बनाने वाले दल के प्रमुख सदस्य थे। उल्लासकर दत्त का जन्म 16 अप्रैल 1885 को बंगाल के कालीकछा नामक गाँव में हुआ था जो अब बांग्लादेश के ब्राह्मणबैरिया जिले में आता है। उनके पिता द्विजदास दत्त लंदन विश्वविद्यालय से कृषि के क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त थे और ब्राह्मसमाज के सक्रिय सदस्य थे। पिता की उच्च शिक्षा और नवीन विचारों का प्रभाव उल्लासकर पर भी पड़ा। उल्लासकर बचपन से ही मेधावी थे और तर्क करने वाले विद्यार्थी के रूप में पहचाने जाने लगे। 1903 में कोलकाता के विख्यात प्रेसीडेंसी कालेज की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त उन्होंने स्नातक की पढ़ाई के लिए इसमें प्रवेश लिया, पर कुछ ही समय बाद बंगालियों और भारतीयों के लिए जब तब अभद्र भाषा का प्रयोग करने वाले ब्रिटिश अध्यापक प्रोफेसर रसेल को पीट देने के कारण उन्हें कालेज से निष्कासित कर दिया गया। इसी दौरान उल्लासकर बंगाल के क्रान्तिधर्माओं के संगठन युगान्तर के संपर्क में आये और उसके सदस्य बन गए। धीरे-धीरे उन्होंने बम बनाने में विशेषज्ञता हासिल कर ली और युगान्तर के सभी अभियानों के लिए बम बनाने की जिम्मेदारी उन्हीं के कन्धों पर आ पड़ी। कुख्यात मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड को मारने के लिए जिस बम का प्रयोग खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने किया था, उसे भी उल्लासकर ने ही हेमचन्द्र दास के साथ मिलकर बनाया था। कुछ घटनाओं के बाद पुलिस ने युगांतर के वरिष्ठ सदस्य वारीन्द्रनाथ घोष सहित अन्य कई सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया। 2 मई 1908 को उल्लासकर भी गिरफ्तार कर लिए गए। युगांतर के इन सभी सदस्यों पर मुकदमा चलाया गया जिसे अलीपुर बम केस के नाम से जाना जाता है क्योंकि जिस स्थान पर युगांतर समूह की बम बनाने की फैक्ट्री थे, उसका नाम अलीपुर था। सुनवाई के बाद उल्लासकर को 1909 में फांसी की सजा सुनाई गयी, जिसे अपील में बदलकर आजीवन कारावास कर दिया गया और काले पानी की सजा भुगतने के लिए अंडमान की दुर्दांत सेल्युलर जेल भेज दिया गया। सेल्युलर जेल में उन्हें अमानवीय यातनाएं दी गयीं, जिसके परिणामस्वरूप उनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया। 10 जून 1912 को उनके हाथ-पैरों को जंजीरों से जकड़ कर उन्हें उनकी कोठरी में बुखार की तपती हालत में कैद कर दिया गया। उनकी दर्दभरी चीखें पूरे सेल्युलर जेल को भेदती रहीं। जब ऐसा लगने लगा कि अब वो नहीं बचेंगे तो जेल अधिकारी ने उन्हें अंडमान के मानसिक चिकित्सालय में भेज दिया, जहां से 1913 में उन्हें मद्रास के पागलखाने भेज दिया गया। इस जगह वो पूरे 12 वर्ष तक रहे और धीरे-धीरे सामान्य मानसिक स्थिति को प्राप्त कर पाये। रिहा होने के बाद उल्लासकर कोलकाता वापस भेज दिए गए, जहाँ वर्षों उनका इलाज चला और तब जाकर उनकी मानसिक स्थिति पूरी तरह ठीक हो पायी। 1931 में अंग्रेजी सरकार ने उन्हें उलटे-सीधे आधारों पर फिर से गिरफ्तार कर लिया क्योंकि उसे डर था कि स्वस्थ हो चुके उल्लासकर उसके लिए खतरा बन सकते हैं। 18 माह तक जेल में रखने के बाद उन्हें फिर से मुक्त किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय उल्लासकर अपने पैतृक गाँव कालिकछा चले गए और लगभग 10 वर्ष का एकाकी जीवन जीने के बाद 1957 में फिर से कोलकाता लौट आये। यहाँ आकर उन्होंने एक शारीरिक विकलांग लड़की से विवाह कर लिया और असम के सिलचर में स्थायी रूप से बस गए और अपने अंत समय तक वहीं रहे। 17 मई 1965 को उनका देहान्त हो गया।

❖ **बटुकेश्वर दत्त :-** बटुकेश्वर दत्त भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रान्तिकारी थे। बटुकेश्वर दत्त को देश ने सबसे पहले 8 अप्रैल 1929 को जाना, जब वे भगत सिंह के साथ केन्द्रीय विधान सभा में बम विस्फोट के बाद गिरफ्तार किए गए। उन्होनें आगरा में स्वतंत्रता आन्दोलन को संगठित करने में उल्लेखनीय कार्य किया था। बटुकेश्वर दत्त का जन्म 18 नवम्बर 1910 को ग्राम-औंयाड़ि, जिला-नानी बेदवान (बंगाल) में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। इनका बचपन अपने जन्म स्थान के अतिरिक्त बंगाल प्रान्त के वर्धमान जिला अंतर्गत खण्डा और मौसु में बीता। इनकी स्नातक स्तरीय शिक्षा पी.पी.एन. कॉलेज कानपुर में सम्पन्न हुई। 1924 में कानपुर में इनकी भगत सिंह से भेंट हुई। इसके बाद इन्होंने हिन्दुस्तान

सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के लिए कानपुर में कार्य करना प्रारंभ किया। इसी क्रम में बम बनाना भी सीखा। 8 अप्रैल 1929 को दिल्ली स्थित केंद्रीय विधानसभा (वर्तमान में संसद भवन) में भगत सिंह के साथ बम विस्फोट कर ब्रिटिश राज्य की तानाशाही का विरोध किया। बम विस्फोट बिना किसी को नुकसान पहुँचाए सिर्फ पर्चों के माध्यम से अपनी बात को प्रचारित करने के लिए किया गया था। उस दिन भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार की ओर से पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्प्यूट बिल लाया गया था, जो इन लोगों के विरोध के कारण एक वोट से पारित नहीं हो पाया। इस घटना के बाद बटुकेश्वर दत्त और भगत सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। 12 जून 1929 को इन दोनों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। सजा सुनाने के बाद इन लोगों को लाहौर फोर्ट जेल में डाल दिया गया। यहाँ पर भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त पर लाहौर षड्यंत्र केस चलाया गया। उल्लेखनीय है कि साइमन कमीशन के विरोध -प्रदर्शन करते हुए लाहौर में लाला लाजपत राय को अंग्रेजों के इशारे पर अंग्रेजी राज के सिपाहियों द्वारा इतना पीटा गया कि उनकी मृत्यु हो गई। इस मृत्यु का बदला अंग्रेजी राज के जिम्मेदार पुलिस अधिकारी को मारकर चुकाने का निर्णय क्रांतिकारियों द्वारा लिया गया था। इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप लाहौर षड्यंत्र केस चला, जिसमें भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा दी गई थी। बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास काटने के लिए काला पानी जेल भेज दिया गया। जेल में ही उन्होंने 1933 और 1937 में ऐतिहासिक भूख हड़ताल की। सेल्यूलर जेल से 1937 में बांकीपुर केन्द्रीय कारागार, पटना में लाए गए और 1938 में रिहा कर दिए गए। काला पानी से गंभीर बीमारी लेकर लौटे दत्त फिर गिरफ्तार कर लिए गए और चार वर्षों के बाद 1945 में रिहा किए गए। भारत की स्वतंत्रता के बाद नवम्बर, 1947 में अंजलि दत्त से विवाह करने के बाद वे पटना में रहने लगे। बिहार विधान परिषद ने बटुकेश्वर दत्त को अपना सदस्य बनाने का गौरव 1963 में प्राप्त किया। दत्त की मृत्यु 20 जुलाई 1965 को नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में हुई। मृत्यु के बाद इनका दाह संस्कार इनके अन्य क्रांतिकारी साथियों-भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव की समाधि स्थल पंजाब के हुसैनी वाला में किया गया। इनकी एक पुत्री भारती बागची पटना में रहती हैं।

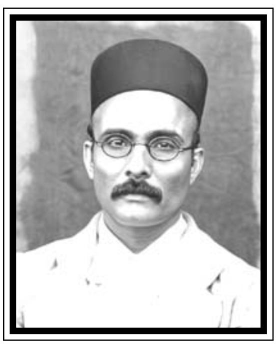

❖ **विनायक दामोदर सावरकर :-** विनायक दामोदर सावरकर भारत के क्रांतिकारी, स्वतंत्रता सेनानी, चिन्तक, समाज सुधारक, इतिहासकार, कवि, ओजस्वी वक्ता तथा दूरदर्शी राजनेता थे। उनके समर्थक उन्हें वीर सावरकर के नाम से सम्बोधित करते हैं। हिन्दू राष्ट्रवाद की राजनीतिक विचारधारा 'हिन्दुत्व' को विकसित करने का बहुत बड़ा श्रेय सावरकर को जाता है। वे एक वकील, राजनीतिज्ञ, कवि, लेखक और नाटककार भी थे। उन्होंने परिवर्तित हिन्दुओं के हिन्दू धर्म को वापस लौटाने हेतु सतत प्रयास किये एवं इसके लिए आन्दोलन चलाये। उन्होंने भारत की एक सामूहिक 'हिन्दू' पहचान बनाने के लिए हिन्दुत्व का शब्द गढ़ा। उनके राजनीतिक दर्शन में उपयोगितावाद, तर्कवाद, प्रत्यक्षवाद, मानवतावाद, सार्वभौमिकता, व्यावहारवाद और यथार्थवाद के तत्व थे। हिन्दू महासभा के वह प्रमुख चेहरे थे। विनायक सावरकर का जन्म 28 मई 1883 को महाराष्ट्र (उस समय, बॉम्बे प्रेसिडेन्सी) में नासिक के निकट भागुर गाँव में हुआ था। उनकी माता जी का नाम राधाबाई तथा पिता जी का नाम दामोदर पन्त सावरकर था। इनके दो भाई गणेश (बाबाराव) व नारायण दामोदर सावरकर तथा एक बहन नैनाबाई थीं। सन् 1901 में रामचन्द्र त्रयम्बक चिपलूणकर की पुत्री यमुनाबाई के साथ उनका विवाह हुआ। इस अवधि में विनायक ने स्थानीय नवयुवकों को संगठित करके मित्र मेलों का आयोजन किया। शीघ्र ही इन नवयुवकों में राष्ट्रीयता की भावना के साथ क्रान्ति की ज्वाला जाग उठी। 1904 में उन्होंने अभिनव भारत नामक एक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की। 1905 में बंगाल के विभाजन के बाद उन्होने पुणे में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। सावरकर ने लन्दन के ग्रेज इन लॉ कॉलेज में प्रवेश लेने के बाद इण्डिया हाउस में रहना आरम्भ कर दिया था। इण्डिया हाउस उस समय राजनितिक गतिविधि यों का केन्द्र था जिसे श्यामा प्रसाद मुखर्जी चला रहे थे। सावरकर ने 'फ्री इण्डिया सोसायटी' का निर्माण किया, जिससे वो अपने साथी भारतीय छात्रों को स्वतन्त्रता के लिए लड़ने को प्रेरित करते थे। सावरकर ने अपने मित्रों को बम बनाना और गुरिल्ला पद्धति से युद्ध करने की कला सिखाई। 1909 में सावरकर के मित्र और अनुयायी मदनलाल ढींगरा ने एक सार्वजनिक बैठक में अंग्रेज अफसर कर्जन की हत्या कर दी। ढींगरा के इस काम से भारत और ब्रिटेन में क्रांतिकारी गतिविधिया बढ़ गयी। सावरकर ने ढींगरा को राजनीतिक और कानूनी सहयोग दिया, लेकिन बाद में अंग्रेज सरकार ने एक गुप्त और प्रतिबन्धित परीक्षण कर ढींगरा को मौत की सजा सुना दी, जिससे लन्दन में रहने वाले भारतीय छात्र भड़क गये। सावरकर ने ढींगरा को एक देशभक्त बताकर क्रान्तिकारी विद्रोह को ओर उग्र कर दिया था। सावरकर की गतिविधियों को देखते हुए अंग्रेज सरकार ने हत्या की योजना में शामिल होने और पिस्तौले भारत भेजने के जुर्म में फँसा दिया, जिसके बाद सावरकर को गिरफ्तार कर लिया गया। अब सावरकर को आगे के अभियोग के लिए भारत ले जाने का विचार किया गया। जब सावरकर को भारत जाने की खबर पता चली तो सावरकर ने अपने मित्र को जहाज से फ्रांस के रुकते वक्त भाग जाने की योजना पत्र में लिखी। जहाज रुका और सावरकर खिड़की से निकलकर समुद्र के पानी में तैरते हुए भाग गए, लेकिन मित्र को आने में देर होने की वजह से उन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। सावरकर की गिरफ्तारी से फ्रेंच सरकार ने ब्रिटिश सरकार का विरोध किया। नासिक जिले के कलेक्टर जैकसन की हत्या के लिए नासिक षड्यंत्र काण्ड के अन्तर्गत इन्हें 7 अप्रैल, 1911 को काला पानी की सजा पर सेलुलर जेल भेजा गया। उनके अनुसार यहां स्वतंत्रता सेनानियों को कड़ा परिश्रम करना पड़ता था। कैदियों को यहां नारियल छीलकर उसमें से तेल निकालना पड़ता था। साथ ही इन्हें यहां कोल्हू में बैल की तरह जुत कर सरसों व नारियल आदि का तेल निकालना होता था। इसके अलावा उन्हें जेल के साथ लगे व बाहर के जंगलों को साफ कर दलदली भूमी व पहाड़ी क्षेत्र को समतल भी करना होता था। रुकने पर उनको कड़ी सजा व बेंत व कोड़ों से पिटाई भी की जाती थीं। इतने पर भी उन्हें भरपेट खाना भी नहीं दिया जाता था। सावरकर 4 जुलाई, 1911 से 21 मई, 1921 तक पोर्ट ब्लेयर की जेल में रहे। 1921 में वल्लभ भाई पटेल और बाल गंगाधर तिलक के कहने पर ब्रिटिश कानून ना तोड़ने और विद्रोह ना करने की शर्त पर उनकी रिहाई हो गई। 2 मई 1920 को एस०एस० महाराजा नामक एक ही स्टीमर से दोनों सावरकर बन्धु भारत की मुख्यभूमि पर पहुँचे और उन्हें रत्नागिरि जेल में रखा गया। बाद में उन्हें पुणे के यरवदा केन्द्रीय कारागार में ले जाया गया। जेल में उन्होंने 'हिन्दुत्व' पर शोध ग्रन्थ लिखा। 6 जनवरी 1924 को कुछ शर्तों के साथ उन्हें यरवदा जेल से मुक्त कर दिया गया। शर्त यह थी कि दामोदर सावरकर सरकार की अनुमति के बिना रत्नागिरि जिले से बाहर नहीं जाएंगे और किसी राजनैतिक क्रियाकलाप में भाग नहीं लेंगे। 15 अगस्त 1947 को उन्होंने सावरकर सदान्तो में भारतीय तिरंगा एवं भगवा, दो-दो ध्वजारोहण किये। इस अवसर पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उन्होंने पत्रकारों

से कहा कि मुझे स्वराज्य प्राप्ति की खुशी है, परन्तु वह खण्डित है, इसका दु:ख है। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य की सीमायें नदी तथा पहाड़ों या सन्धि-पत्रों से निर्धारित नहीं होतीं, वे देश के नवयुवकों के शौर्य, धैर्य, त्याग एवं पराक्रम से निर्धारित होती हैं। 5 फरवरी 1948 को महात्मा गांधी की हत्या के उपरान्त उन्हें प्रिवेन्टिव डिटेन्शन एक्ट धारा के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया। गांधीजी के हत्या में सावरकर के सहयोगी होने का आरोप लगा जो सिद्ध नहीं हो सका। एक सच्चाई यह भी है कि महात्मा गांधी और सावरकर-बन्धुओं का परिचय बहुत पुराना था। सावरकर-बन्धुओं के व्यक्तित्व के कई पहलुओं से प्रभावित होने वालों और उन्हें 'वीर' कहने और मानने वालों में गांधी भी थे। सावरकर 20वीं शताब्दी के सबसे बड़े हिन्दूवादी रहे। विनायक दामोदर सावरकर को बचपन से ही हिन्दू शब्द से बेहद लगाव था। सावरकर ने जीवन भर हिन्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तान के लिए ही काम किया। सावरकर को 6 बार अखिल भारतीय हिन्दू महासभा का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। 10 मई, 1937 को सावरकरजी की नजरबंदी रद्द की गई। नजरबंदी से मुक्त होते ही सावरकरजी का भव्य स्वागत किया गया। अनेक नेताओं ने उन्हें कांग्रेस में शामिल करने का प्रयास किया; किंतु उन्होंने स्पष्ट कहा : 'कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर मेरे तीव्र मतभेद हैं। मैं हिंदू महासभा का ही नेतृत्व करूँगा।' 1937 में उन्हें हिन्दू महासभा का अध्यक्ष चुना गया, जिसके बाद 1938 में हिन्दू महासभा को राजनीतिक दल घोषित कर दिया गया। सन् 1937 से 1942 के बीच वे हिंदू महासभा के अध्यक्ष रहे थे। इस दौरान कई बार उन्होंने भारत की विदेश नीति पर अपना रुख स्पष्ट किया था। खासकर जर्मनी और इटली के संबंध में वह ज्यादा मुखर थे। वे हिटलर के बड़े प्रशंसक थे। सितम्बर, 1965 में विनायक दामोदर सावरकर को तेज ज्वर ने आ घेरा, जिसके बाद इनका स्वास्थ्य गिरने लगा, फिर 1 फरवरी 1966 को मृत्युपर्यन्त उपवास करने का निर्णय लिया और 26 फरवरी 1966 को मुम्बई में भारतीय समयानुसार प्रात: 10 बजे निधन हो गया।

❖ **अनन्त लाल सिंह :-** अनंत लाल सिंह एक भारतीय क्रांतिकारी थे, जिन्होंने 1930 में चटगांव शस्त्रागार छापे में भाग लिया था। बाद में, उन्होंने एक दूर-वामपंथी कट्टरपंथी कम्युनिस्ट समूह, क्रांतिकारी कम्युनिस्ट परिषद ऑफ इंडिया की स्थापना की। अनंत सिंह का जन्म 1 दिसंबर 1903 को चटगांव में हुआ था। उनके पिता का नाम गुलाब सिंह था। सिंह के दादा-दादी पंजाबी भाषी राजपूत थे, जो आगरा से आकर चटगांव में बस गए थे। चटगांव नगर पालिका विद्यालय में पढ़ाई के दौरान उनकी मुलाकात सूर्य सेन से हुई और वे उनके अनुयायी बन गए। सिंह की भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में भागीदारी 1921 में असहयोग आंदोलन से शुरू हुई। हालाँकि उन्होंने अपने सहपाठियों को आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया, लेकिन व्यक्तिगत रूप से उन्हें आंदोलन में अधिक विश्वास नहीं था। 14 दिसंबर 1923 को, उन्होंने और निर्मल सेन ने सूर्य सेन द्वारा बनाई गई योजना के अनुसार असम-बंगाल रेलवे के कोषागार कार्यालय में डकैती का नेतृत्व किया और 24 दिसंबर को डकैती के बाद पुलिस से झड़प हुई। डकैती के बाद वे घटनास्थल से भाग गए और सैंडीप में कुछ समय रुकने के बाद कलकत्ता पहुँच गए। उन्हें कलकत्ता में गिरफ्तार किया गया लेकिन जल्द ही रिहा कर दिया गया। उन्हें 1924 में फिर से गिरफ्तार किया गया और चार साल के लिए जेल में डाल दिया गया। अपनी रिहाई के बाद, उन्होंने एक व्यायामशाला की स्थापना की और सूर्य सेन के नेतृत्व वाले क्रांतिकारी आंदोलन के लिए कई युवाओं की भर्ती की। 18 अप्रैल 1930 को, वे चटगांव शस्त्रागार छापे के नेताओं में से एक थे। इस घटना के बाद, वे गणेश घोष और जीवन घोषाल के साथ चटगांव से भागने में सफल रहे । फेनी रेलवे स्टेशन पर पुलिस के साथ संक्षिप्त मुठभेड़ के बाद, उन्होंने फ्रांसीसी क्षेत्र चंदननगर में शरण ली, लेकिन, जेल में बंद अपने साथी क्रांतिकारियों पर हो रहे अत्याचारों की खबर सुनकर, उन्होंने 28 जून 1930 को कलकत्ता में पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और मुकदमे का सामना किया। मुकदमे में, उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई और पोर्ट ब्लेयर की सेलुलर जेल भेज दिया गया। 1932 में सेलुलर जेल में लंबी भूख हड़ताल के बाद, महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर की पहल के कारण उन्हें अपने कई साथी राजनीतिक कैदियों के साथ मुख्य भूमि की जेल में वापस लाया गया। 1946 में अपनी अंतिम रिहाई के बाद, वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद, सिंह मुख्य रूप से फिल्म निर्माण और मोटर वाहनों की बिक्री में लगे रहे। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में, उन्होंने कलकत्ता में एक नया वामपंथी राजनीतिक समूह, मैन-मनी-गन (एमएमजी) की स्थापना की, जिसका नाम बाद में बदलकर क्रांतिकारी कम्युनिस्ट परिषद ऑफ इंडिया कर दिया गया। इस समूह के सदस्यों ने हथियार और गोला-बारूद खरीदने के लिए धन जुटाने के उद्देश्य से कलकत्ता में कई बैंक डकैतियाँ कीं। उनके जीवन का यह दौर काफी विवादास्पद रहा। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में कलकत्ता के विभिन्न बैंकों में नियमित रूप से डकैतियाँ होती रहीं, जिनमें अनंत सिंह का नाम सामने आया। स्थानीय समाचार पत्रों में उनके बारे में कई लेख छपे और भद्रलोक, जो उन दिनों क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों को याद करते और उनका सम्मान करते थे, उनके कारनामों के बारे में जानकर काफी परेशान हुए। अंतत:, समूह के अधिकांश सदस्यों के साथ, उन्हें 1969 में वर्तमान झारखंड राज्य में जादुगुडा के पास एक जंगल में उनके छिपने के स्थान से गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें 1977 तक कारावास में रखा गया। कारावास के दौरान वे हृदय संबंधी समस्याओं से पीड़ित थे और रिहाई के कुछ ही समय बाद उनकी मृत्यु हो गई।

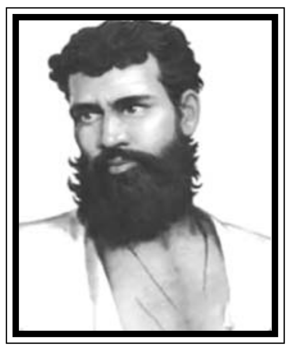

❖ **वासुदेव बलवंत फड़के :-** वासुदेव फड़के का जन्म वर्तमान महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के शिरधोन गांव में एक हिंदू ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वह बॉम्बे विश्वविद्यालय के शुरुआती स्नातकों में से एक थे, जिन्होंने 1862 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। अपनी शिक्षा के बाद, उन्होंने मुंबई में ग्रांट मेडिकल कॉलेज और कमिशनरी परीक्षक कार्यालय जैसे कुछ सरकारी संस्थानों में काम किया। उसके बाद, वह पुणे चले गए और सैन्य वित्त कार्यालय में क्लर्क की नौकरी कर ली। एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जीवन ब्रिटिश शासन के तहत किसानों की दुर्दशा से वासुदेव बलवंत फड़के बहुत दुखी थे। 1876-77 में महाराष्ट्र में पड़े अकाल के दौरान उन्होंने उस क्षेत्र का दौरा किया और तबाही तथा लोगों की स्थिति के प्रति अधिकारियों की उदासीनता को देखकर स्तब्ध रह गए। उन्होंने यह निश्चय किया कि इस समस्या का एकमात्र समाधान भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराना है। इस प्रकार, राजनीतिक नेताओं द्वारा इस आंदोलन को उठाने से बहुत पहले ही वे स्वराज के अग्रदूतों में से एक थे। उन्होंने एमजी रानाडे के व्याख्यान सुने और समझा कि किस प्रकार ब्रिटिश नीतियां भारतीय अर्थव्यवस्था को खोखला कर रही थीं। फाड़के ने लक्ष्मण इंदापुरकर और